धर्मरक्षापञ्चाङ्गम्

प्रस्तुति - पं श्री संतोष तिवारी

श्री गणेशाय नम:

धर्मरक्षा पंचांग (२०२३-२४)

श्री विक्रम संवत्- २०८०, शक संवत्- १९४५

नत्वा शारदां देवीं शुद्धां गणितं करोम्यहम्| सनातनधर्मरक्षाय धर्मरक्षापञ्चाङ्गम्||

दिक्कालाद्यनवच्छिन्नानन्तचिन्मात्रमूर्तये| स्वानुभूत्येकसाराय नम: शिवाय तेजसे||

यदा यदा हि धर्मस्य ग्लानिर्भवति भारत| अभ्युत्थानमधर्मस्य तदात्मानं सृजाम्यहम्||







ज्योतिषाचार्य/हस्तरेखाविद्-

(१) पं. श्री संतोष तिवारी (ज्योतिष, वास्तु, कर्मकाण्ड)
+916299953415,

(२) पं. रंजन तिवारी +919523772973

(३) पं. संजन तिवारी (सञ्जनाचार्य्य जी)
+919852837558

॥सचेत॥

ग्रहगणितं वा पंचांगस्य निर्माणविधिः कठिनं कार्यम् अस्ति, अस्मिन् पञ्चाङ्गे यत् किमपि अस्ति तत् शास्त्रीयं प्रामाणिकं च पुस्तकेषु आधारितं भवति तथापि गणना, लेखनम् इत्यादिषु मानवीयदोषाः सम्भवन्ति। अतः प्रकाशकः/लेखकः/सम्पादकः कथमपि उत्तरदायी नास्ति। केवलं स्वक्षमतानुसारं अध्ययनं कुर्वन्तु। अस्य पंचांगस्य प्रत्येकं शब्दं सोफिस्ट्-समीक्षकाः दुर्बोधाः भवेयुः ।

विषय सूची

विनम्र निवेदन	धर्म प्रशंसा	गणेशस्तोत्रम्	दक्षिणेश्वरी काली मंदिर
राम नाम की महिमा	दान प्रशंसा	मधुराष्टकम्	ब्रह्मा मंदिर
ग्रहण विवरण	भारत महिमा	द्वादशज्योतिर्लिङ्गस्तोत्रम्	केदारनाथ धाम
वर्षफल	गुरु प्रशंसा	भवान्यष्टकम्	भारतीय प्राचीन वैज्ञानिकों का परिचय
राशिफल	पिता का महत्व	नवग्रहस्तोत्रम्	छः सहस्र प्राचीन प्रतिमा (श्रीराम हनुमान
यज्ञ लक्षण	नारी एक शक्ति	श्रीगणेशजी की आरती	की) ईराक में खुदाई से प्राप्त
यज्ञ का उद्देश्य	मित्र प्रशंसा	शिवजी की आरती	माँ अम्बिका भवानी, बिहार
व्रत-त्योहार	सुभाषितानि	माँ अम्बाजी की आरती	गणेश प्रतिमा
जन्मोत्सवादि	अधिकमास और क्षयमास का वर्णन	श्रीहनुमान चालीसा	स्वप्न विज्ञान
होड़ाचक्र	अधिकमास और क्षयमास का लक्षण	वर्णोच्चारण स्थान	पुरुष कुण्डली का ग्रहफल
साप्ताहिक सूर्यादिग्रहस्पष्ट	अधिकमास में कृत्याकृत्य कर्म	शास्त्र ज्ञान	स्त्री कुण्डली का ग्रहफल
शिववास ज्ञान	श्राद्ध परिचय	जगन्नाथ जी की रथ यात्रा	गोचरफल
अग्निवास ज्ञान	श्राद्ध की परिभाषा	सूर्य मंदिर	सर्वतोभद्र मण्डल
पञ्चाङ्ग	श्राद्ध की प्रशंसा	प्रेम मंदिर	एकलिंगतोभद्र मण्डल
विवाह मुहूर्त	श्राद्ध के प्रकार	गणपति मंदिर	चतुर्लिंगतोभद्र मण्डल
गृहारम्भ मुहूर्त	श्राद्ध के योग्य ब्राह्मण और स्थान	अन्नपूर्णेश्वरी मंदिर	अष्टलिंगतोभद्र मण्डल
गृहप्रवेश मुहूर्त	श्राद्ध न करने पर	लक्ष्मीनारायण स्वर्ण मंदिर	द्वादशलिंगतोभद्र मण्डल
जीर्ण गृहप्रवेश मुहूर्त	श्राद्ध से संबंधित आवश्यक जानकारी	गंगोत्री और यमुनोत्री धाम	गौरीतिलक मण्डल
उपनयन मुहूर्त	वास्तुशास्त्र संबंधित आवश्यक जानकारी	अम्बिका माता मंदिर	81 पद वास्तु मण्डल
सत्य प्रशंसा	कर्मकांड संबंधित आवश्यक जानकारी	यद्रादी मंदिर	नवग्रह मण्डल
विद्या प्रशंसा	भक्ष्याभक्ष्य संबंधित आवश्यक जानकारी	बदरीनाथ धाम	
व्यायाम प्रशंसा	विवाह संबंधित आवश्यक जानकारी	सोमनाथ मंदिर	
परोपकार प्रशंसा	गुरुस्तोत्रम्	बगलामुखी मंदिर	

धर्मरक्षापञ्चाङ्गम्

विनम्र निवेदन

हरि: ऊँ; मैं शारदा देवी को नमन करके सनातन धर्म की रक्षा के लिए शुद्ध ग्रह-गणित वाले धर्मरक्षापञ्चाङ्ग का प्रारंभ कर रहा हूँ। संवत् २०८० का यह पञ्चाङ्ग आपके कर कमलो में समर्पित करते हुए अपार हर्ष हो रहा है। इस पंचाग में तिथि, नक्षत्र आदि मिनटात्मक और करण दण्डात्मक में दिया गया है। इसमें व्रत-त्योहारादि के साथ कुछ विशेष जानकारी भी है, फिर भी मानवीय त्रुटि संभवित रहती है अतः सुधीजन पाठकों से निवेदन है कि इस प्रयास को और बेहतर बनाने के लिए आपका अमुल्य सुझाव अपेक्षित है। अपना सुझाव दें- Ranjanmuraudpur01@gmail.com

धर्मरक्षा, हिन्दुत्व, सनातन संस्कृति के प्रचार- प्रसार के इस मिशन चलाने के लिए और इस पंचाग के विकास के लिए हमें अर्थ (फंडिंग) की जरूरत है । हिन्दू विरोधी ताकतों के पास फंडिंग देश- विदेशों (हर जगह) से आ रही है, ताकि हिन्दू और हिन्दुत्व (सनातन संस्कृति) को समाप्त किया जा सके, परंतु हम निरंतर प्रयास कर रहे हैं कि सभी सनातन प्रेमीयों को अपने संस्कृति की गुढ जानकारी हो और सब एकत्र हो तथा विश्वभर में सनातन धर्म/ सनातन संस्कृति का प्रचार और प्रसार हो, ताकि हमारे विरुद्ध चल रहे सभी षड्यंत्रो को विफल किया जा सके। कृपया हमारे इस प्रयास को सफल करने के लिए हमारा साथ दें।

पञ्चाङ्गेऽस्मिन् अक्षांश:- २५|४६, रेखांश:- ८४|५५, पलभा:- ०५|४७|३० (सारण, बिहार)

यदक्षरपदभ्रष्टं मात्रादिहीनन्तु भवेत्।

तत्सर्वं क्षम्यतां प्रभो प्रसीद परमेश्वर॥

ॐ पूर्णमद: पूर्णमिदं पूर्णात् पूर्णमुदच्यते।

पूर्णस्य पूर्णमादाय पूर्णमेवावशिष्यते॥

ॐ सर्वे भवन्तु सुखिन: सर्वे सन्तु निरामयाः।

सर्वे भद्राणि पश्यन्तु मा कश्चिददुःखभाग्भवेत्॥

॥ ॐ शान्ति: शान्ति: शान्ति:॥

राम नाम की महिमा

शास्त्रों में लिखा है, “रमन्ते योगिनोऽस्मिन्निति राम:” उच्यते अर्थात, योगी ध्यान में जिस शून्य में रमते हैं उसे राम कहते हैं।

अभिवादन के समय राम-राम क्यों बोलते हैं?

‘राम-राम’ शब्द जब भी अभिवादन करते समय बोल जाता है तो हमेशा 2 बार बोला जाता है। इसके पीछे एक वैदिक दृष्टिकोण माना जाता है। वैदिक दृष्टिकोण के अनुसार पूर्ण ब्रह्म का मात्रिक गुणांक 108 है। वह राम-राम शब्द दो बार कहने से पूरा हो जाता है, क्योंकि हिंदी वर्णमाला में ‘’र” 27वां अक्षर है।‘आ’ की मात्रा दूसरा अक्षर और ‘म’ 25वां अक्षर, इसलिए सब मिलाकर जो योग बनता है वो है 27 + 2 +

25 = 54, अर्थात एक "राम" का योग 54 हुआ। और दो बार राम राम कहने से 108 हो जाता है जो पूर्ण ब्रह्म का द्योतक है। जब भी हम कोई मंत्र जप करते हैं तो हमे 108 बार जप करने के लिए कहा जाता है। लेकिन सिर्फ "राम-राम" कह देने से ही पूरी माला का जाप हो जाता है।

'राम' शब्द के संदर्भ में स्वयं गोस्वामी तुलसीदास जी ने लिखा-

करऊँ कहा लगि नाम बड़ाई।



राम न सकहि नाम गुण गाई ।।

स्वयं राम भी 'राम' शब्द की व्याख्या नहीं कर सकते,ऐसा राम नाम है। 'राम' विश्व संस्कृति के अप्रतिम नायक है। वे सभी सद्गुणों से युक्त है। वे मानवीय मर्यादाओं के पालक और संवाहक है। अगर सामाजिक जीवन में देखें तो- राम आदर्श पुत्र, आदर्श भाई, आदर्श मित्र, आदर्श पति, आदर्श शिष्य के रूप में प्रस्तुत किए गए हैं। अर्थात् समस्त आदर्शों के एक मात्र न्यायादर्श 'राम' है।

ध्यायन्कृते यजन्यज्ञैस्त्रेतायां द्वापरेऽर्चयन्।

यदाप्नोति तदाप्नोति कलौ संकीर्त्य राघवम्॥

जो फल सतयुग में ध्यान, त्रेता में यज्ञ और द्वापर में देवार्चन करने से प्राप्त होता है वही कलियुग में श्री रामचंद्र का नाम- कीर्तन (स्मरण) करने से मिलता है।

अत्यन्तदुष्टस्य कलेरयमेको महान्गुण: ।

कीर्तनादेव रामस्य मुक्तबन्ध: परं व्रजेत्॥

इस अत्यंत दुष्ट कलियुग में यही एक महान गुण है कि इस युग में केवल रामचंद्र का नाम संकीर्तन करने से ही मनुष्य परम पद प्राप्त कर लेता है।"मंगल भवन अमंगल हारि " यह मंगल करने वाला और अमंगल का हरण करने वाला नाम है।

इसलिए हमें अभिवादन के लिए "राम-राम" शब्द का प्रयोग करना चाहिये। हम किसी भी दूकान वाले, सब्जी वाले,फल वाले, दूधवाले, अपने सगे-सम्बंधी-भाई-बंधु-इष्ट-मित्र आदि से मिले तो अभिवादन हेतु "राम-राम" शब्द (दिव्य शब्द) का ही प्रयोग करें।

श्रीशुभविक्रम संवत् २०८० शक १९४५ का भारत में दृश्य होने वाले ग्रहण का विवरण

इस वर्ष(२०२३-२४) विश्व में चार ग्रहण लगेंगे। तीन सूर्यग्रहण और एक चन्द्रग्रहण। जिसमें एक चन्द्रग्रहण ही भारत में दिखाई देगा। यहाँ भारत में दिखाई देने वाले ग्रहणों का ही विवरण दिया जा रहा है।

१. **आश्विनशुक्ल १५ पूर्णिमा शनिवार, दिनांक- २८.१०.२०२३ को रात्रि में खण्डचन्द्रग्रहण दिखेगा।** भारतीय मानक समयानुसार ग्रहण का प्रारम्भ रात्रि २५:०५, मध्य रात्रि २५:४४ तथा मोक्ष रात्रि २६:२३ पर होगा।

प्रारम्भ- ०१:०५ (रात्रि)

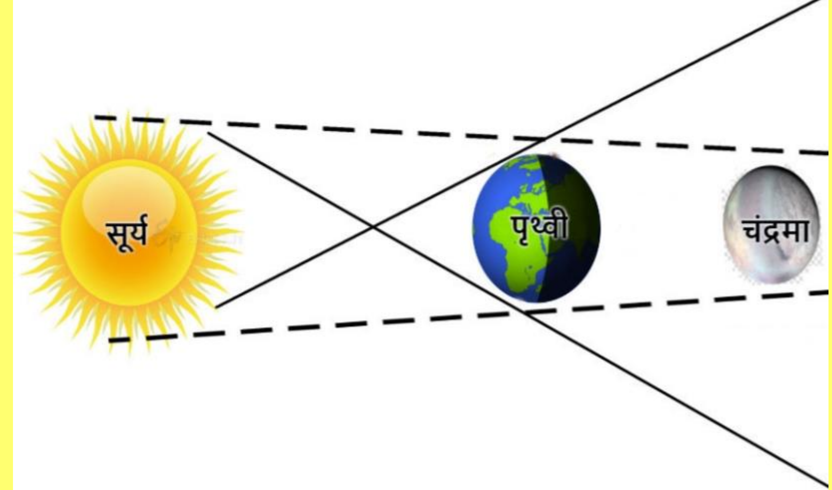
मोक्ष- ०२:२३ (रात्रि)

ग्रहण जहाँ दृश्य होगा, सूतक भी वही के लिए मान्य होगा। चन्द्रग्रहण से पूर्व ०९ घंटे तथा सूर्यग्रहण में १२ घंटे पूर्व ग्रहण का सूतक होता है। धर्मशास्त्र के अनुसार सूतक में बालक, वृद्ध और रोगी को छोड़कर अन्य लोगों के लिए भोजन निषिद्ध है।

प्रमाण- सूर्यग्रहे तु नाश्नीयात् पूर्वं यामचतुष्टयम्।

चन्द्रग्रहे तु यामास्त्रीन् बालवृद्धातुरैर्विना॥

नोट:- यहाँ समय २५:०५ दिया गया है, जिसका संकेत रात्रि के ०१:०५ बजे से है।



वर्षफल

इस वर्ष के आरम्भ में पिङ्ल सम्वत्सर का प्रभाव रहेगा। इसमें सम्पूर्ण विश्व में भय का वातावरण होगा। अन्न, जल मध्य प्राप्त होगा। राजा राजनीतिक बल के कारण से शत्रुओं पर भारी पड़ेंगे और सुख भोगेंगे। गाय, घोड़े, नट और नर्तकों का नाश होगा। वर्षा की कमी होगी। इस वर्ष बुध राज करेंगे। उत्तम वर्षा से पृथ्वी सन्तुष्ट रहेगी। मांगलिक का सम्पन्न होगा। मानव देव, ब्राह्मण के पूजक होंगे। धन-धान्य से पूर्ण व सभी प्रसन्न होंगे। मन्त्री शुक्र से टिड्डी, चूहा, सुकर, भैंस की हानि होगी। राजकीय भय की उत्पत्ति, खाद्यान्न पदार्थों में उपज, सामाजिक व धार्मिक कार्यों में प्रगति, वर्षा से बाढ़ की स्थिति होगी। सस्येश चन्द्र से पृथ्वी फसलों से युक्त होगी। अच्छी वर्षा, गोदूग्ध में वृद्धि व प्रजा सुखी होंगे। राजनेता देव-ब्राह्मण के पूजन और सम्मान करेंगे। धान्येश से वर्षा में अल्पता, उड़द, मूंग व तिल के मूल्यों में वृद्धि पशु व्यापारियों को लाभ होगा। धान्य से संबंधित विवाद और यत्र-तत्र वर्षा होगी। दुर्गेश गुरु से उच्चस्तरीय राजनेता द्वारा देशहित के प्रति अनेक योजनाएँ जारी की जायेगी। शासक सुन्दर नीति से व्यवहार करेंगे। शासक को अधिक कर की प्राप्ति। पर्वतीय और नगरी क्षेत्रों में समान सुख प्राप्त होगा। सभी को विकास व आधुनिक सुख-सुविधाओं की प्राप्ति। धनेश सूर्य से व्यापार में वृद्धि, धनागम, चतुष्पद वाले (पशुओं) से लाभ होगा। रसेश बुध से फल-फूल में वृद्धि, कृषि सुलभ, तरलीय पेय

पदार्थों में तेजी, खाद्य पदार्थ सुलभ होगा। शासक से प्रजा प्रसन्न होंगे। नीरसेश चन्द्र से औसतन श्वेत वस्त्रों से लाभ, मोती, चान्दी आदि श्वेत वस्तुओं में मध्यम मूल्य होगा। फलेश गुरु से लोग भयमुक्त होंगे। फल-फूल, यज्ञादि में वृद्धि, उत्सव व द्विज वेद विहित कार्य करेंगे। सात्विक व पूजा-पाठ का वातावरण रहेगा। मेघेश गुरु से उत्तम वर्षा, पृथ्वी पर सुख-विलास तथा शासक शास्त्रीयमत द्वारा कार्यरत रहेंगे। रसीले पदार्थों में वृद्धि, धर्माचरण व धर्म कार्य सम्पन्न होंगे।

राशिफल

मेष- मेष राशिवालों के ग्रह गोचर में प्रथम राहु, तृतीय मंगल, सप्तम केतु, एकादश शनि तथा द्वादश गुरु उपस्थित हैं। अत: स्व कार्यों में संघर्षो के उपरांत सफलता प्राप्त होगा। शारीरिक व मानसिक परेशानी घटती बढ़ती रहेगी। मांगलिक, विकास कार्य संभव, धन वृद्धि, लेन-देन से बचे, वाहन खरीदने की योजना बनेगी। पारिवारिक मतभेद, आर्थिक चिंता, धन व्यय, परिश्रम से विद्यालय में सफलता, वैवाहिक जीवन में कटुता, व्यापार में तेजी मंद का रुख, जीविकोपार्जन क्षेत्र में सफलता, कार्यों में उलझन आयेंगे, राहु, केतु, शनि, भौम अच्छे नहीं। २,३,५,६,९,११ वें मास कष्टदायक । इन ग्रहों का निवारण कल्याणप्रद होगा।

वृष- इनके लिये द्वितीय मंगल, षष्टम केतु, दशम शनि, एकादश गुरु तथा द्वादश राहु की स्थिति है। यह वर्ष सामान्य शुभदायक होगा। स्वास्थ्य सामान्य, पारिवारिक तथा विकसित कार्यों में सफलता व शुभ कार्य होंगे। संतान, शिक्षा, व्यापार, स्त्री तथा मातृ-पितृ का सुख तथा स्नेह उत्तम, क्रय -विक्रय में धोखाधड़ी की संभावना, चोट-चपेट का योग, विपक्षियों से सावधान, अधिक धन व्यय की सम्भावना, जीविकोपार्जन क्षेत्र में असंतुष्टि रहेगी। न्यायायिक कार्यों में सफलता, अधिकारियों से सम्पर्क, स्वजनों से विवाद, दाम्पत्य सुख की प्राप्ति, मांगलिक कार्य, भू-लाभ, उदर विकार आदि से कष्ट, आर्थिक प्रगति, पारिवारिक समस्याओं की उत्पत्ति, मान-सम्मान में वृद्धि, शत्रु पक्ष से हानि होने की सम्भावना। ३,७,९,११,१२वाँ मास कष्टदायक होगा। इनके लिये राहु, मंगल, शनि अच्छे नहीं इनका शान्ति करना कल्याणप्रद होगा।

मिथुन- इस राशिवालों के गोचर में पंचम केतु, नवम शनि तथा दशम गुरु उपस्थित हैं। उक्त ग्रहों की स्थिति के कारण स्वास्थ्य मध्यम, वात जनित विकार, चिचिरापन, अशांति बनी रहेगी। विवादों से बचे। अनावश्यक खर्च पर नियंत्रण आवश्यक है। गृह व विकसित कार्यों में सफलता, क्रय-विक्रय की सफलता, पारिवारिक व मित्रादि का सहयोग प्राप्त होगा। सहयोगियों से तालमेल बनाकर रखें। प्रेमी से मतभेद होगा। व्यापार, नौकरी, शिक्षा इत्यादि अभिष्ट कार्य में संघर्षोपरान्त सफलता, राजनीति में रुचि, तीर्थ स्थलों की यात्रा सुखद, रुका हुआ कार्य पूर्ण होगा। शत्रु पक्ष से मतभेद। २,५,७,८,१०,११ वें मास कष्टदायक होंगे। मंगल, शनि केतु अच्छे नहीं, इनका निवारण करने से लाभ होगा।

कर्क- कर्क राशिवालों के गोचर में चतुर्थ केतु, अष्टम शनि, नवम गुरु, दशम राहु तथा व्यये भौम की उपस्थिति है। शनि की ढैया रहेगी। ग्रह स्थिति के अनुसार मानसिक, पारिवारिक, आर्थिक व शत्रुओं से अवरोध उत्पन्न होंगे। स्वास्थ्य, मित्र, स्वजनों से विवाद, संतान के प्रति चिन्ता, स्वास्थ्य मध्यम, क्रय-विक्रय में धोखाधड़ी, चोट-चपेट की सम्भावना, यात्रा से हानि, राजकीय कार्यों में सफलता, लेन-देन में विवाद, परिश्रम से शिक्षा व्यापार आदि में सफलता। भूमि, भवन आदि से विवाद, राजनैतिक कार्यों में क्षति तथा दौड़-भाग की स्थिति बनी रहेगी। १,३,४,७,८,११वें मास कष्टदायक रहेंगे। मंगल, केतु, शनि, गुरु अच्छे नहीं। मंगल व्रत, शनि शान्ति तथा अनिष्ट ग्रहों की शान्ति ही कल्याणप्रद होगा।

सिंह- इस राशिवालों के गोचर में तृतीय केतु, सप्तम शनि, अष्टम गुरु तथा एकादश मंगल है। उपस्थित ग्रहों के अनुसार स्वास्थ्य मध्यम, मांगलिक कार्य, विकास व विद्या के क्षेत्र में सफलता, विपक्षी निर्बल, सामाजिक कार्यों में रुचि, राजनैतिक संघर्ष, जीविकोपार्जन क्षेत्र से लाभ, नौकरी में अवसर परिश्रमोपरान्त, स्वजन, इष्ट, मित्र का सहयोग, माता-पिता का स्वास्थ्य बाधा युक्त, उदर व नेत्र के प्रति कष्ट, आर्थिक क्षेत्र के लिए उन्नतिकारक व खर्च की अधिकता, जल्दबाजी निर्णय से हानि, अभिष्ट कार्यों में सफलता, परिश्रम से फल की प्राप्ति, साहयोगिक मतभेद, प्रेमियों

में क्रोध जो अच्छे नहीं, एकाएक धन का खर्च, व्यापारिक कार्यों में हानि, जीवनसाथी का स्वास्थ्य बाधा युक्त रहेगा। २,३,६,९,१२वें मास कष्टदायक रहेंगे। मंगल, गुरु, शनि की शांति कल्याणप्रद होगा।

कन्या- इन राशिवालों के लिए द्वितीय केतु, षष्टम शनि, अष्टम राहु, सप्तम गुरु तथा दशम भौम स्थित है। निम्न ग्रहों के अनुसार परिवार में मतभेद की स्थिति, अशांति, कार्य में बाधा, कष्टों के प्रति धन व्यय होंगे। अभिष्ट कार्य में अवरोध, विपक्षी प्रबल, लेन-देन में धोखाधड़ी की संभावना, विकास व गृह कार्यों में उन्नति तथा शुभ, वर्ष अन्तर्गत शुभ समाचार की प्राप्ति, संतान पक्ष से सहयोग, कुसंगति लोगों से धन की क्षति, मान-सम्मान में हानि की संभावना, सगे-संबंधि व मित्रों का सहयोग, परेशानी से राहत, शिक्षा में सफलता, नौकरी से असंतुष्ट, जीवनसाथी का स्वास्थ्य बाधा युक्त, आर्थिक क्षेत्रों में संघर्ष करने पर सफलता अचानक धन की प्राप्ति, वाहनादि खरीद बिक्री का योग, विद्या क्षेत्र में परिश्रम से सफलता, पारिवारिक मतभेद। १,३,४,५,६,९,१२वें मास कष्टदायक रहेंगे। अतः गुरु, शनि, राहु-केतु इन ग्रहों का शान्ति करने पर यह वर्ष सुखद व्यतीत होगा।

तुला- इस राशिवालों के लिए प्रथम केतु, पंचम शनि, षष्टम गुरु, सप्तम राहु व नवम मंगल। इन भावगत ग्रहों की स्थिति के अनुसार इस वर्ष मानसिक चिंता, आर्थिक व पारिवारिक तनाव की स्थिति बनेगी। यह वर्ष सामान्य शुभद रहेगा। रुके हुए कार्य सम्पन्न होंगे, मान प्रतिष्ठित में वृद्धि, शुभ कार्य, शिक्षा में प्रगति होगी। व्यवसाय मध्यम, विपक्षी निर्बल, संघर्षोपरान्त ईश्वरीय कार्य सम्पन्न होगा। शत्रु से सावधान, स्वास्थ्य, अत्यधिक क्रोध से नुकसान, नुतन कार्यों का श्रीगणेश, आर्थिक स्थिति में सुधार, लेन-देन में सतर्कता बरते, कृषि के प्रति लाभ, नौकरी में उन्नति, माता पिता का स्वास्थ्य बाधा युक्त, स्त्री का स्वास्थ्य मध्यम, धार्मिक कार्यों में उन्नति, राजनीतिक संघर्षोपरान्त सफलता, विद्या में सफलता, संतान सुख की प्राप्ति, जीवन के प्रति निराश रहेंगे। अनावश्यक विवाद से बचे। ३,७,९,११,१२ वें मास कष्टदायक रहेंगे। अतः शनि, राहु, केतु का शांति करने से लाभ होगा।

वृश्चिक- इस राशिवालों के गोचर में चतुर्थ शनि, पंचम गुरु, षष्टम राहु, अष्टम भौम उपस्थित है। ग्रहों की स्थिति के अनुसार- आर्थिक, शारीरिक, मानसिक, पारिवारिक चिंताएँ बनी रहेगी, कार्य में अवरोध, संघर्षोपरान्त सफलता, कार्य में बाधा, चोट-चपेट की आशंका, व्यर्थ विवाद उत्पन्न होंगे, व्यापार में चढ़ाव-उतराव, गलत माहौल से दूर रहे, स्वजन से मतभेद, व्यापार मध्यम, नौकरी पेशा में दौड़-भाग व स्थानांतरण की स्थिति, लेन-देन में धोखाधड़ी की संभावना, वाहन, अग्नि, जल व चोट-चपेट की संभावना प्रबल, सन्तान के प्रति चिन्तित, सामाजिक लोभ, संघर्षोपरान्त सफल होंगे, व्यर्थ खर्च से परेशान होंगे, आय में कमी। अतः सदा सावधानी बरतने की आवश्यकता है। २,३,५,७,१०,११वें मास कष्टदायक होंगे। शनि, राहु, केतु, मंगल ग्रहों का शान्ति करने पर सुखद व लाभ की प्राप्ति होगी।

धनु- इन राशिवालों के गोचर में तृतीय शनि, चतुर्थ गुरु, पंचम राहु, सप्तम भौम तथा एकादश केतु है। उक्त भावगत ग्रहों की स्थिति से स्वास्थ्य सामान्य, परिवार में शुभ समाचार व विकास के कार्य होंगे, व्यापार में लाभ, शिक्षा में वृद्धि व पदोन्नति का योग है। सुखद यात्रा, सामाजिक व धार्मिक कार्य सफल होंगे। कार्य व व्यापार में मन्दता, धार्मिक कार्य में रुचि, मांगलिक कार्य संपन्न होंगे। पित्रजनों की तीर्थ यात्रा की सम्भावना, मानसिक तनाव, लेन-देन व निवेश के प्रति सावधानियां रखें, कार्य में बाधा, नये कार्यों की उन्नति, विपक्ष निर्बल, न्यायायिक कार्यों में सफलता। १,७,९,११,१२वें मास कष्टदायक होंगे। अतः मंगल, गुरु, राहु की शान्ति करना लाभदायक होगा।

मकर- इन राशिवालों के गोचर में शनि द्वितीय, तृतीय गुरु, चतुर्थ राहु, षष्टम भौम तथा दशम केतु की स्थिति है। शनि की साढ़े साती उग्र रहेगी। अत: स्वस्थ्य न्यूनतम, आर्थिक, पारिवारिक चिंता तथा वाहनादि से चोट-चपेट की सम्भावना रहेगी। अकारण वाद विवाद से मन अशान्त रहेगा। लेन-देन में धोखाधड़ी की सम्भावना,

व्यापार उतार चढ़ाव, पारिवारिक मतभेद, विपक्षी प्रबल, शत्रुओं का बोलबाला, मनचाहा कार्यों में विलम्ब, मेहनत के बाद शिक्षा में सफलता, अत: वर्ष के पूर्व संघर्ष करना पड़ेगा। क्रय-विक्रय से हानि, पूंजी सोच समझकर खर्च करें। कार्यरत लोगों से तालमेल बनाकर कार्य करे। रोग व्याधि की उत्पत्ति, जीवन में कटुता आयेगी। मान-सम्मान की हानि, संतान से कष्ट, माता पिता का स्वास्थ्य बाधित रहेगा।१,३,७,९वें मास कष्टदायक रहेंगे अतः शनि, राहु, केतु अच्छे नहीं। इनका शान्ति करने से लाभ होगा।

कुम्भ- इन राशिवालों के गोचर में प्रथम शनि, द्वितीय गुरु, तृतीय राहु, पंचम भौम तथा नवम केतु के स्थित है। इससे मानसिक, आर्थिक, पारिवारिक चिंता बनी रहेगी। शुभ व विकास के कार्यों में व्यवधान उपस्थित होंगे, क्योंकि शनि के साढ़े साती का प्रभाव है, स्वास्थ्य संबंधी परेशानी, अस्थि एवं उदर जन्य कष्ट, आर्थिक क्षेत्रों में सफलता, विपक्षी प्रबल, लेन-देन में धोखाधड़ी, पारिवारिक मतभेद, संघर्षमय अभीष्ट कार्यों की सिद्धि, कुसंगति से मानहानि की संभावना, जीविकोपार्जन में तालमेल बनाने से लाभ, रुके हुए धन की प्राप्ति, दाम्पत्य जीवन सुखी, पदोन्नति, कठिनाइयों का सामना करना पड़ेगा। लाल, सफेद धातुओं के सुधार, संतान सुख की प्राप्ति। १,२,३,७,११,१२वें मास कष्टदायक रहेंगे। मंगल, गुरु, शनि, राहु, केतु अच्छे नहीं। अतः इनका शान्ति करने से लाभ होगा।

मीन- इन राशिवालों के गोचर में प्रथम गुरु, द्वितीय राहु, चतुर्थ भौम, अष्टम केतु तथा द्वादश शनि स्थित है। साढ़े साती का प्रभाव रहेंगा। शारीरिक, मानसिक, आर्थिक चिंताएँ, कारोबार में गिरावट संभव है। निरर्थक दौड़-धूप, परिश्रमोपरान्त विकास होगा। व्यापार में उतार चढ़ाव की स्थिति चोट-चपेट की संभावना, स्थान में बदलाव संभव, पारिवारिक समस्याएं, कार्य में मानसिक दबाव, व्यवहार में मानसिक चिंता, लेन-देन के प्रति धोखाधड़ी, चिकित्सा में धन व्यय, गुप्त शत्रुओं से सावधान, पारिवारिक मतभेद, न्यायिक कार्यों में सफलता, माता पिता को कष्ट, संतान के प्रति चिंता, स्वास्थ्य के प्रति सचेत, संदेहप्रद कार्य न करे। रक्त विकार, शिक्षा में कड़ी मेहनत की आवश्यकता, वाहनादि का प्रयोग। १,२,४,५,७,८,९,११वें मास कष्टदायक होंगे। भौम, गुरु, शनि, राहु, केतु अच्छे नहीं। अतः इनके शान्ति से लाभ होगा।

यज्ञ लक्षण

देवानां द्रव्यहविषां ऋक्सामयजुषां तथा।

ऋत्विजां दक्षिणानां च संयोगो यज्ञ उच्यते॥

जिस कर्म विशेष में देवता, हवनीय द्रव्य, वेदमंत्र, ऋत्विक और दक्षिणा- इन पांचों का संयोग हो, उसे यज्ञ कहते हैं।

यज्ञ का उद्देश्य

अन्नाद्भवन्ति भूतानि पर्जन्यादन्नसम्भव:।

यज्ञाद्भवति पर्जन्यो यज्ञ कर्मसमुद्भव:॥

अग्न्नौ प्रास्ताहुतिः सम्यगादित्यमुपतिष्ठते।

आदित्याज्जायते वृष्टिर्वृष्टेरन्नं ततः प्रजा:॥

अग्नि में विधिपूर्वक दी हुई आहूति सूर्यमंडल को प्राप्त होती हैं, पश्चात् सूर्यमंडल से जल की वृष्टि होती हैं, वृष्टि से अन्न उत्पन्न होता हैं और अन्न से प्रजा जन्म तथा जीवन धारण करती हैं।

व्रत-त्योहार

चैत्रशुक्ल

22.03.2023 हिन्दू नववर्ष आरम्भ, वासंतीय नवरात्रारम्भ

24.03.2023 गणगौरीव्रत, सौभाग्य तीज व्रत

25.03.2023 वैनायकी गणेशचतुर्थीव्रत

26.03.2023 लक्ष्मी पंचमी, रामराज्य महोत्सव

27.03.2023 स्कन्दषष्ठीव्रत, सूर्यषष्ठीव्रत, चैत्री छठ

28.03.2023 महानिशापूजा

29.03.2023 महाष्टमीव्रत

30.03.2023 महानवमीव्रत, श्रीरामनवमीव्रत

31.03.2023 नवरात्र व्रत पारण

01.04.2023 कामदाएकादशीव्रत (स्मार्त)

02.04.2023 कामदाएकादशीव्रत (वैष्णव)

03.04.2023 सोमप्रदोषव्रत

05.04.2023 व्रत पूर्णिमा

06.04.2023 स्नान-दान पूर्णिमा

वैशाख

09.04.2023 संकष्टी गणेशचतुर्थीव्रत

11.04.2023 कोकिलाषष्ठीव्रत

13.04.2023 शीतलाष्टमीव्रत

14.04.2023 सतुआ संक्रांति, वैशाखीपर्व

16.04.2023 वरुथिनि एकादशीव्रत (सभी)

17.04.2023 सोमप्रदोषव्रत

18.04.2023 मासशिवरात्रिव्रत, शिवचतुर्दशीव्रत

20.04.2023 स्नान-दान अमावस्या

23.04.2023 अक्षय तृतीया, वैनायकी गणेशचतुर्थीव्रत

26.04.2023 स्कन्दषष्ठीव्रत, चंदनषष्ठी

27.04.2023 गंगासप्तमी, कमलासप्तमी

29.04.2023 सीतानवमीव्रत

30.04.2023 रविवार व्रत समाप्ति

01.05.2023 मोहिनी एकादशी व्रत (सभी)

02.05.2023 रुक्मिणी द्वादशी, परशुराम द्वादशी

03.05.2023 प्रदोष व्रत

04.05.2023 श्री नृसिंह चतुर्दशी व्रत

05.05.2023 स्नान दान पूर्णिमा, वैशाखी पूर्णिमा,

ज्येष्ठ

08.05.2023 संकष्टी गणेश चतुर्थी व्रत

13.05.2023 शीतलाष्टमी व्रत

15.05.2023 अचला एकादशी व्रत (सभी)

17.05.2023 प्रदोष व्रत, मास शिवरात्रि व्रत, वटसावित्री व्रतारम्भ (तीन दिन तक), शिव चतुर्दशी व्रत

19.05.2023 स्नान दान श्राद्ध के लिए अमावस्या, सावित्री अमावस्या

20.05.2023 करवीर व्रत

धर्मरक्षापञ्चाङ्गम्

22.05.2023 रम्भातीज व्रत

23.05.2023 वैनायकी गणेशचतुर्थीव्रत, उमा चतुर्थी

25.05.2023 स्कन्दषष्ठीव्रत, अरण्य षष्ठी

30.05.2023 गंगा दशहरा

31.05.2023 भीमसेनी एकादशी, निर्जला एकादशी व्रत(सभी)

01.06.2023 प्रदोष व्रत

03.06.2023 व्रत पूर्णिमा

04.06.2023 स्नान दान पूर्णिमा

आषाढ़

07.06.2023 संकष्टी गणेश चतुर्थी व्रत

11.06.2023 शीतलाष्टमी व्रत

14.06.2023 योगिनी एकादशी व्रत(सभी)

15.06.2023 प्रदोष व्रत

16.06.2023 मासशिवरात्रि व्रत, शिव चतुर्दशी व्रत

17.06.2023 श्राद्ध अमावस्या

18.06.2023 स्नान दान अमावस्या

19.06.2023 गुप्त नवरात्रारम्भ

22.06.2023 वैनायकी गणेशचतुर्थीव्रत

24.06.2023 स्कन्दषष्ठीव्रत

25.06.2023 सूर्य पूजा

26.06.2023 परशुरामाष्टमी

27.06.2023 गुप्त नवरात्र समाप्त

28.06.2023 गिरिजा पूजा

29.06.2023 हरिशयनी एकादशी व्रत (सभी)

30.06.2023 श्रीकृष्ण द्वादशी, वामन द्वादशी

01.07.2023 शनि प्रदोष व्रत

02.07.2023 व्रत पूर्णिमा

03.07.2023 स्नान दान पूर्णिमा, गुरु पूर्णिमा,

व्यास पूजा, आषाढ़ी पूर्णिमा

श्रावण

04.07.2023 मंगला गौरी व्रत, पार्थिव पूजन व ज्योतिर्लिंग विशेष पूजन आरम्भ

06.07.2023 संकष्टी गणेश चतुर्थी व्रत

07.07.2023 नाग पंचमी(मरुस्थल में)

09.07.2023 भानु सप्तमी, शीतला सप्तमी

10.07.2023 शीतलाष्टमी व्रत

11.07.2023 मंगला गौरी व्रत

13.07.2023 कामदा एकादशी व्रत (सभी)

15.07.2023 शनि प्रदोष व्रत, मास शिवरात्रि व्रत, शिव चतुर्दशी व्रत

17.07.2023 स्नान दान अमावस्या, सोमवती अमावस्या, हरियाली अमावस्या

18.07.2023 मंगला गौरी व्रत

21.07.2023 वैनायकी गणेशचतुर्थीव्रत

24.07.2023 स्कन्दषष्ठीव्रत

25.07.2023 मंगला गौरी व्रत

26.07.2023 बुधाष्टमी

29.07.2023 पुरषोत्तम एकादशी व्रत (सभी)

30.07.2023 प्रदोष व्रत

01.08.2023 स्नान दान, व्रत पूर्णिमा, मंगलागौरी व्रत

04.08.2023 संकष्टी गणेश चतुर्थी व्रत

08.08.2023 मंगलागौरी व्रत

09.08.2023 शीतलाष्टमी व्रत

12.08.2023 पुरषोत्तमी एकादशी व्रत (सभी)

13.08.2023 प्रदोष व्रत

14.08.2023 मास शिवरात्रि व्रत

15.08.2023 भौम व्रत, मंगलागौरी व्रत

16.08.2023 स्नान दान अमावस्या

19.08.2023 हरियाली तीज व्रत, स्वर्ण गौरी व्रत

20.08.2023 वैनायकी गणेशचतुर्थीव्रत, दूर्वा गणपति व्रत

21.08.2023 नागपंचमी, तक्षक पूजा

22.08.2023 स्कन्दषष्ठीव्रत, मंगलागौरी व्रत

27.08.2023 पुत्रदा एकादशी व्रत (सभी)

28.08.2023 सोमप्रदोषव्रत

29.08.2023 भौम व्रत, मंगलागौरी व्रत

30.08.2023 व्रत पूर्णिमा

31.08.2023 स्नान दान पूर्णिमा, रक्षाबंधन, संस्कृत दिवस

भाद्रपद

01.09.2023 अशून्य शयन व्रत

02.09.2023 कजली तीज व्रत

03.09.2023 संकष्टी गणेशचतुर्थीव्रत

04.09.2023 रक्षा पंचमी, कोकिला पंचमी व्रत

05.09.2023 हलषष्ठी व्रत

06.09.2023 श्रीकृष्णजन्माष्टमी व्रत (स्मार्त)

07.09.2023 श्रीकृष्णजन्माष्टमी व्रत (वैष्णव)

08.09.2023 नन्दोत्सव

10.09.2023 जया एकादशी व्रत (सभी)

12.09.2023 प्रदोष व्रत

13.09.2023 मासशिवरात्रिव्रत, अघोर चतुर्दशी, शिवचतुर्दशीव्रत

14.09.2023 स्नान दान अमावस्या, कुशोत्पाटिनी अमावस्या

15.09.2023 स्नान दान अमावस्या

17.09.2023 विश्वकर्मा पूजा

18.09.2023 हरितालिका तीज व्रत, वैनायकी गणेशचतुर्थीव्रत

19.09.2023 ऋषि पंचमी व्रत, अरुंधति सहित सप्तर्षि पूजन, गणेशोत्सव प्रारंभ

20.09.2023 रक्षा पंचमी

धर्मरक्षापञ्चाङ्गम्

21.09.2023 सूर्यषष्ठी व्रत, लोलार्क षष्ठी (ललही छठ)

22.09.2023 सन्तान सप्तमी व्रत, अपराजिता सप्तमी, राधाष्टमी व्रत

23.09.2023 महानन्दानवमी

24.09.2023 दशावतार व्रत

25.09.2023 पद्मा एकादशी, कर्मा एकादशी (सभी)

26.09.2023 वामन द्वादशी व्रत

27.09.2023 प्रदोष व्रत

28.09.2023 अनन्त चतुर्दशी व्रत, गणपति विसर्जन, व्रत पूर्णिमा

29.09.2023 स्नान दान पूर्णिमा

आश्विन

30.09.2023 महालया , पितृपक्ष आरम्भ

02.10.2023 संकष्टी गणेशचतुर्थीव्रत

04.10.2023 श्रीचन्द्रषष्ठी व्रत

06.10.2023 महालक्ष्मी व्रत

07.10.2023 जीवितपुत्रिका व्रत (जीउतिया), मातृनवमी व्रत

10.10.2023 इन्दिरा एकादशी व्रत

11.10.2023 प्रदोष व्रत

12.10.2023 मासशिवरात्रिव्रत, शिवचतुर्दशीव्रत

13.10.2023 शस्त्रादि से मृतक का श्राद्ध

14.10.2023 स्नान दान अमावस्या, महालया समाप्त

15.10.2023 शारदीय नवरात्रारम्भ, कलश स्थापन

18.10.2023 वैनायकी गणेशचतुर्थीव्रत

19.10.2023 उपांग ललिताव्रत

20.10.2023 बिल्व निमंत्रण

21.10.2023 पत्रिकाप्रवेश, महानिशापूजा

22.10.2023 महाष्टमी, दुर्गाष्टमी व्रत

23.10.2023 महानवमी, दुर्गा नवमी व्रत, विजय दशमी, शमी पूजा, अपराजितापूजा, शस्त्रपूजा

24.10.2023 नवरात्र व्रत पारण, दुर्गा विसर्जन, राज्याभिषेक के लिए दशमी

25.10.2023 पापांकुशा एकादशी व्रत (सभी)

26.10.2023 पद्मनाभ द्वादशी, प्रदोष व्रत

28.10.2023 स्नान दान पूर्णिमा, व्रत पूर्णिमा, कोजागरी व्रत, शरद् पूर्णिमा

कार्त्तिक

29.10.2023 कार्तिक मास का यम-नियम व्रतारम्भ

30.10.2023 अशून्य शयन व्रत

01.11.2023 संकष्टी गणेशचतुर्थीव्रत, करवा चौथ व्रत, ललिता चतुर्थी व्रत

05.11.2023 अहोई अष्टमी व्रत, राधाष्टमी व्रत

09.11.2023 रम्भा एकादशी व्रत

10.11.2023 प्रदोष व्रत, धनतेरस

11.11.2023 नरक चतुर्दशी, मासशिवरात्रिव्रत, यमदीयरी, शिवचतुर्दशीव्रत, हनुमज्जन्म (सायं)

12.11.2023 दीपावली, महाकाली पूजा, प्रातः हनुमद्-दर्शन

13.11.2023 स्नान दान, सोमवती अमावस्या

15.11.2023 गोवर्धन पूजा, भैयादूज, यमद्वितीया, चित्रगुप्त पूजा

17.11.2023 वैनायकी गणेशचतुर्थीव्रत

19.11.2023 सूर्यषष्ठीव्रत (डाला छठ व्रत) सायं अर्घ्य

20.11.2023 डाला छठ प्रातः अर्घ्य, गोपाष्टमी, गो पूजा

21.11.2023 अक्षय नवमी, जगद्धात्री पूजा, कूष्माण्ड नवमी, आँवला नवमी

23.11.2023 हरिप्रबोधिनी एकादशी व्रत, तुलसी विवाह

24.11.2023 प्रदोष व्रत

26.11.2023 वैकुण्ठ चतुर्दशी व्रत, व्रत पूर्णिमा, रविवार व्रतारम्भ (छः मासिक)

27.11.2023 स्नान दान पूर्णिमा, कार्तिक पूर्णिमा, देव दीपावली

मार्गशीर्ष

30.11.2023 संकष्टी गणेशचतुर्थीव्रत

02.12.2023 श्री अन्नपूर्णा देवी व्रत आरम्भ 16 दिनात्मक

03.12.2023 श्रीरामेश्वर महादेव दर्शन-पूजन

05.12.2023 भैरव अष्टमी व्रत, कालाष्टमी

08.12.2023 उत्पन्ना एकादशी व्रत (सभी)

10.12.2023 प्रदोष व्रत

11.12.2023 मासशिवरात्रिव्रत, शिवचतुर्दशीव्रत

12.12.2023 स्नान दान, भौमवती अमावस्या

16.12.2023 गणेशचतुर्थीव्रत

17.12.2023 श्रीराम विवाहोत्सव, श्रीपंचमी

18.12.2023 स्कन्दषष्ठीव्रत, चम्पाषष्ठीव्रत

19.12.2023 सूर्य सप्तमी व्रत

20.12.2023 बुधाष्टमी व्रत

21.12.2023 महानन्दानवमी व्रत

23.12.2023 मोक्षदा एकादशी व्रत (सभी), गीता जयन्ती

24.12.2023 प्रदोष व्रत

25.12.2023 पिशाचमोचनश्राद्ध, तुलसी पूजन दिवस

26.12.2023 स्नान दान, व्रत पूर्णिमा

पौष

30.12.2023 संकष्टी गणेशचतुर्थीव्रत

01.01.2024 ईसाई नववर्ष आरम्भ

06.01.2024 पौष दशमी

07.01.2024 सफला एकादशी व्रत (सभी)

09.01.2024 भौम प्रदोष व्रत, मासशिवरात्रिव्रत, शिवचतुर्दशीव्रत

11.01.2024 स्नान दान अमावस्या

13.01.2024 लोहड़ी

14.01.2024 वैनायकी गणेशचतुर्थीव्रत

15.01.2024 मकर संक्रान्ति पुण्यकाल, खिचड़ी, पोंगल, बिहु

16.01.2024 अन्नरुपा षष्ठी

20.01.2024 शाम्ब दशमी

21.01.2024 पुत्रदा एकादशी व्रत (सभी)

22.01.2024 कूर्म द्वादशी व्रत

23.01.2024 भौम प्रदोष

26.01.2024 गणतन्त्र दिवस

25.01.2024 स्नान दान, व्रत पूर्णिमा

माघ

29.01.2024 संकष्टी गणेशचतुर्थीव्रत

06.02.2024 षट्तिला एकादशी व्रत (सभी)

07.02.2024 तिल द्वादशी, प्रदोष व्रत

08.02.2024 मास शिवरात्रि व्रत, शिवचतुर्दशीव्रत

09.02.2024 स्नान दान अमावस्या, मौनी अमावस्या

10.02.2024 गुप्त नवरात्रारम्भ

13.02.2024 वैनायकी गणेशचतुर्थीव्रत, कुन्द चतुर्थी व्रत, वरद चतुर्थी, तिल चौथ

14.02.2024 वसंतपंचमी, सरस्वती पूजा

15.02.2024 शीतला षष्ठी

16.02.2024 अचला सप्तमी, आरोग्य सप्तमी, रथ सप्तमी, सूर्य पूजा

17.02.2024 भीष्माष्टमी पर्व

18.02.2024 महानन्दानवमी

20.02.2024 जया एकादशी व्रत (सभी), भौमी एकादशी

21.02.2024 आमलकी द्वादशी, भीष्म द्वादशी, वाराह द्वादशी, तिर द्वादशी, प्रदोष व्रत

23.02.2024 व्रत पूर्णिमा

24.02.2024 स्नान दान पूर्णिमा

फाल्गुन

28.02.2024 संकष्टी गणेशचतुर्थीव्रत

03.03.2024 सीताष्टमी व्रत

06.03.2024 विजया एकादशी व्रत (सभी)

07.03.2024 वंजुली द्वादशी

08.03.2024 प्रदोष व्रत, महाशिवरात्रि व्रत, शिव चतुर्दशी व्रत

10.03.2024 स्नान दान अमावस्या

13.03.2024 वैनायकी गणेशचतुर्थीव्रत, संत चतुर्थी, मनोरथ चतुर्थी

16.03.2024 कामदा सप्तमी व्रत

18.03.2024 आनन्द नवमी

धर्मरक्षापञ्चाङ्गम्

20.03.2024 आमलकी रंगभरी एकादशी व्रत (स्मार्त)

21.03.2024 आमलकी रंगभरी एकादशी व्रत (वैष्णव), गोविन्द द्वादशी

22.03.2024 प्रदोष व्रत

24.03.2024 व्रत पूर्णिमा, होलिका दहन

25.03.2024 स्नान दान पूर्णिमा, होली (काशी में)

चैत्रकृष्ण

26.03.2024 होली (काशी से अन्यत्र), वसंतोत्सव

28.03.2024 संकष्टी गणेशचतुर्थीव्रत

30.03.2024 रंग पंचमी

01.04.2024 शीतला सप्तमी व्रत

02.04.2024 शीतलाष्टमी व्रत

05.04.2024 पापमोचनी एकादशी व्रत (सभी)

06.04.2024 शनि प्रदोष व्रत

07.04.2024 मास शिवरात्रि व्रत, शिवचतुर्दशीव्रत

08.04.2024 स्नान दान अमावस्या

जन्मोत्सवादि

२२.०३.२०२३ गौतम ऋषि जन्मोत्सव

२४.०३.२०२३ मत्स्यावतार

३०.०३.२०२३ श्रीरामचरितमानस प्राकट्योत्सव, श्रीरामावतार

०६.०४.२०२३ श्रीहनुमान प्राकट्योत्सव

१०.०४.२०२३ सति अनसूइया जन्मोत्सव

१४.०४.२०२३ अम्बेडकर जयंती

१६.०४.२०२३ वल्लभाचार्य जन्मोत्सव

२२.०४.२०२३ परशुराम प्राकट्योत्सव

२५.०४.२०२३ जगद्गुरु शंकराचार्य जन्मोत्सव

२६.०४.२०२३ रामानुजाचार्य जन्मोत्सव

२८.०४.२०२३ बंगालमुखी देवी प्राकट्योत्सव

२९.०४.२०२३ श्री जानकारी प्राकट्योत्सव

०४.०५.२०२४ श्री नृसिंह प्राकट्योत्सव, छिन्नमस्ता दवी प्राकट्योत्सव

०५.०५.२०२३ कूर्म प्राकट्योत्सव, बुद्ध जयंती, पुष्करा दवी प्राकट्योत्सव

०७.०५.२०२३ रविन्द्रनाथ टैगोर जयंती, देवर्षि नारद जन्मोत्सव

१९.०५.२०२३ शनिदेव प्राकट्योत्सव

२२.०५.२०२३ महाराणा प्रताप जयंती

२८.०५.२०२३ धूमावती दवी प्राकट्योत्सव

३०.०५.२०२३ श्री बटुकभैरव प्राकट्योत्सव

३१.०५.२०१३ गायत्री माता प्राकट्योत्सव

०५.०६.२०२३ गुरुहरगोविन्द सिंह जयंती

१४.०६.२०२३ देवरहा बाबा पुण्य तिथि

२०.०६.२०23 श्रीराम- बलराम रथोत्सव

२२.०६.२०२३ श्री कामाख्या देवी महोत्सव

०३.०८.२०२३ मैथिलीशरण गुप्त जयंती

१८.०८.२०२३ धर्मसम्राट स्वामी करपात्रीजी जन्मोत्सव

१९.०८.२०२३ ठकुराईन जयंती

२३.०८.२०२३ गोस्वामी तुलसीदास जन्मोत्सव

३०.०८.२०२३ हयग्रीव प्राकट्योत्सव, भारतेन्दु जयंती

धर्मरक्षापञ्चाङ्गम्

०१.०९.२०२३ विंध्याचल-भीमचण्डी देवी प्राकट्योत्सव

०५.०९.२०२३ श्री बलराम प्राकट्योत्सव, डॉ.राधाकृष्णन् जयंती

११.०९.२०२३ संत विनोवा भावे जयंती

१७.०९.२०२३ विश्वकर्माजी प्राकट्योत्सव, वाराह प्राकट्योत्सव

२३.०९.२०२३ श्रीचन्द जयंती

२६.०९.२०२३ श्री वामन प्राकट्योत्सव

०२.१०.२०२३ गाँधी, लाल बहादुर शास्त्री जयंती

१०.१०.२०२३ चरखा जयंती

१५.१०.२०२३ महाराज अग्रसेन जयंती

२४.१०.२०२३ माधवाचार्य जयंती

२८.१०.२०२३ वाल्मीकि जयंती, मीराबाई जयंती

३१.१०.२०२३ सरदार वल्लभभाई पटेल जयंती

०५.११.२०२३ श्रीराधा प्राकट्योत्सव

१०.११.२०२३ धनवन्तरी प्राकट्योत्सव

११.११.२०२३ हनुमान प्राकट्योत्सव, श्रीकामेश्वरी देवी प्राकट्योत्सव

२७.११.२०२३ गुरुनानक जयंती, विश्व प्रसिद्ध हरिहर क्षेत्र मेला सोनपुर

०५.१२.२०२३ कालभैरव प्राकट्योत्सव

२३.१२.२०२३ गीता जयंती

२५.१२.२०२३ पं. मदन मोहन मालवीय जयंती, श्री तुलसी पूजन दिवस

२६.१२.२०२३ षोडशी त्रिपुरसुंदरी देवी प्राकट्योत्सव, श्री दत्तात्रेय प्राकट्योत्सव

०५.०१.२०२४ गुरुगोविंद सिंह जयंती (नविन मतानुसार)

१२.०१.२०२४ स्वामी विवेकानंद जयंती (अंग्रेजी दिनांकानुसार)

१७.०१.२०२४ गुरुगोविंद सिंह जयंती (प्राचीन मतानुसार)

२१.०१.२०२४ तैलंग स्वामी जयंती

२३.०१.२०२४ सुभाषचंद्र बोस जयंती

२५.०१.२०२४ शाकम्भरी प्राकट्योत्सव

२८.०१.२०२४ लाला लाजपत राय जयंती

०२.०२.२०२४ श्री रामानन्दाचार्य जन्मोत्सव

१०.०२.२०२४ श्री वल्लभाचार्य जन्मोत्सव

१४.०२.२०२४ वागीश्वरी देवी प्राकट्योत्सव

१८.०२.२०२४ हरसु ब्रह्मदेव जयंती

२२.०२.२०२४ गुरु गोरखनाथ जन्मोत्सव

२३.०२.२०२४ स्वामी करपात्रीजी पुण्यतिथि

२४.०२.२०२४ श्री ललिता देवी प्राकट्योत्सव, संत रविदास जयंती

०३.०३.२०२४ जानकी प्राकट्योत्सव

०५.०३.२०२४ स्वामी दयानन्द जन्मोत्सव

०८.०३.२०२४ श्रीवैद्यनाथ प्राकट्योत्सव

१२.०३.२०२४ श्री रामकृष्ण परमहंस जन्मोत्सव

२५.०३.२०२४ चैतन्य महाप्रभु जन्मोत्सव

२७.०३.२०२४ संत तुकाराम जयंती

३०.०३.२०२४ विजय गोविन्द हलंकार जयंती

नोट- यह पञ्चाङ्ग केवल अध्ययन मात्र के लिए निर्मित किया गया है। यदि किसी को कहीं कोई त्रुटि दिखे, तो विद्वान् बन्धु हमें अवश्य सूचित करें।

अथ होड़ाचक्रं (मेलापकविचारोपयोगी)

नक्षत्र	अश्वि	भर	कृत्ति	रोहि	मृग	आर्द्रा	पुन	पुष्य	अश्ले	मघा	पू.फा	उ.फा	हस्त	चित्रा	स्वाती	विशा	अनु	ज्येष्ठा	मूल	पू.षा	उ.षा	श्रवण	धनि	शत	पू.भा	उ.भा	रेवती
अक्षर:	चु, चे, चो, ला	ली, लू, ले, लो	अ, ई, ऊ, ए	ओ वा वी वू	वे वो का की	कू घ ङ छ	के को हा ही	हू हे हो डा	डी डू डे डो	मा मी मू मे	मो टा टी टू	टे टो पा पी	पू ष ण ठ	पे पो रा री	रू रे रो ता	ती तू ते तो	ना नी नू ने	नो या यी यू	ये यो भा भी	भू धा फा ढा	भे भो जा जी	खी खू खे खो	गा गी गू गे	गो सा सी सू	से सो दा दी	दू थ झ ञ	दे दो चा ची
राशि:	मेष	मेष	मे१ वृ३	वृष	वृ२ मि२	मिथुन	मि३ क१	कर्क	कर्क	सिंह	सिंह	सि१ क३	कन्य	क२ तु२	तुला	तु३ वृ१	वृश्च	वृश्च	धनु	धनु	ध१ म३	मकर	म२ कु२	कुं	कु३ मी१	मीन	मीन
वर्णा:	क्षत्र	क्षत्र	क्ष१ वै३	वै	वै२ शू२	शू	शू३ ब्रा१	ब्रा	ब्रा	क्षत्र	क्षत्र	क्ष१ वै३	वैश्य	वै२ शू२	शूद्र	शू३ ब्रा१	ब्रा	ब्रा	क्षत्र	क्षत्र	क्ष१ वै३	वै	वै२ शू२	शू	शू३ ब्रा१	ब्रा	ब्रा
वन्य:	चतु	चतु	चतु	चतु	च२ न२	नर	न३ ज१	जल	जल	वन	वन	व१ न३	नर	नर	नर	न३ की१	की	की	नर	ना॥ चतु३ ॥	चतु	चतु१ ॥ जल२ ॥	जल २ नर२	नर	नर३ जल १	जल	जल
योनि:	अश्व	गज	मेष	सर्प	सर्प	श्वान	मार्जार	मेष	मार्जार	मूषक	मूषक	गो	महिष	व्याघ्र	महिष	व्याघ्र	मृग	मृग	श्वान	मर्कट	नकुल	मर्कट	सिंह	अश्व	सिंह	गो	गज
वैरम्	महिष	सिंह	मर्कट	नकुल	नकुल	मृग	मूषक	मर्कट	मूषक	मार्जार	मार्जार	व्याघ्र	अश्व	गो	अश्व	गो	श्वान	श्वान	मृग	मेष	सर्प	मेष	गज	महिष	गज	व्याघ्र	सिंह
राशीश:	भौम	भौम	भौ१ शु३	शु	शु२ बु२	बु	बु३ चं१	चं	चं	सूर्य	सूर्य	सू१ बु३	बु	बु२ शु२	शुक्र	शु३ भौ१	भौम	भौम	गुरु	गुरु	गु१ श३	शनि	शनि	शनि	श३ गु१	गुरु	गुरु
गण:	देव	मानव	राक्षस	मानव	देव	मानव	देव	देव	राक्षस	राक्षस	मानव	मानव	देव	राक्षस	देव	राक्षस	देव	राक्षस	राक्षस	मानव	मानव	देव	राक्षस	राक्षस	मानव	मानव	देव
नाड़ी	आदि	मध्य	अन्त्य	अन्त्य	मध्य	आदि	आदि	मध्य	अन्त्य	अन्त्य	मध्य	आदि	आदि	मध्य	अन्त्य	अन्त्य	मध्य	आदि	आदि	मध्य	अन्त्य	अन्त्य	मध्य	आदि	आदि	मध्य	अन्त्य

धर्मरक्षापञ्चाङ्गम्

श्रीसूर्योदयकालिकसाप्ताहिकसूर्यादिस्पष्टग्रहाः							
दिनांकः	सूर्यः	भौमः	बुधः	गुरुः	शुक्रः	शनिः	केतुः
२८.०३.२०२३	११.१२.४८.०५	०२.०६.२३.०९	११.२३.५१.०९	११.२४.२७.१५	००.१८.५७.०३	१०.०४.०२.२६	०६.११.२०.२६
०४.०४.२०२३	११.१९.४२.५४	०२.०९.२९.५४	००.०४.३८.००	११.२६.१८.१९	००.२७.१३.५२	१०.०४.४२.१२	०६.१०.५८.१०
११.०४.२०२३	११.२६.३५.४८	०२.१२.५८.५८	००.१३.५०.४२	११.२८.०१.३४	०१.०५.३०.४१	१०.०५.१८.०५	०६.१०.३५.५५
१८.०४.२०२३	००.०३.२६.४९	०२.१६.३९.०५	००.२०.०९.४३	११.२९.४४.४९	०१.१३.३६.०४	१०.०५.५३.५१	०६.१०.१३.३९
२५.०४.२०२३	००.१०.१६.०१	०२.२०.१९.०२	००.२२.३७.१८	००.०१.२८.०४	०१.२१.३३.२४	१०.०६.२१.५४	०६.०९.५१.३३
०२.०५.२०२३	००.१७.०३.२८	०२.२३.५७.५९	००.१९.०८.२५	००.०३.११.१८	०१.२९.३०.४४	१०.०६.५०.१०	०६.०९.२९.०८
०९.०५.२०२३	००.२३.४९.१४	०२.२७.५४.११	००.१३.११.३७	००.०४.४७.३७	०२.०७.२४.४७	१०.०७.१२.०६	०६.०९.०६.५२
१६.०५.२०२३	०१.००.३३.२९	०३.०१.५१.४५	००.११.२२.५४	००.०६.२३.०६	०२.१४.५०.१९	१०.०७.३२.३४	०६.०८.४४.३६
२३.०५.२०२३	०१.०७१६.२०	०३.०५.४८.४०	००.१४.४१.५६	००.०७.५७.२०	०२.२२.१५.३५	१०.०७.४८.४४	०६.०८.२२.२१
३०.०५.२०२३	०१.१३.५८.०२	०३.०९.४६.५३	००.२१.५५.५२	००.०९.३०.१४	०२.२९.३४.५३	१०.०८.०१.२४	०६.०८.००.०५
०६.०६.२०२३	०१.२०.३८.३९	०३.१३.५२.५७	०१.०१.४५.४८	००.११.०२.२०	०३.०६.०१.०१	१०.०८.१०.५७	०६.०७.३७.४९
१३.०६.२०२३	०१.२७.१८.२१	०३.१७.५९.००	०१.१२.५५.४०	००१२.२४.५२	०३.१२.०७.१२	१०.०८.१३.१२	०६.०७.१५.३४
२०.०६.२०२३	०२.०३.५७.१८	०३.२२.०५.०४	०१.२५.०९.२६	००.१३.४७.२३	०३.१८.१२.१४	१०.०८.१५.०७	०६.०६.५३.१८
२७.०६.२०२३	०२.१०.३५.४८	०३.१६.१४.४३	०२.०७.५७.३२	००.१५.०२.५७	०३.२२.५६.५९	१०.०८.०७.०६	०६.०६.३१.०२
०४.०७.२०२३	०२.१७.१३.५२	०४.००.२८.४६	०२.२१.०५.१६	००.१६.१५.०४	०३.२६.०६.४०	१०.०७.५९.२४	०६.०६.०८.४९
११.०७.२०२३	०२.२३.५१.५३	०४.०४.४२.३६	०३.०४.०६.१२	००.१७.२३.४३	०३.२९.१६.२१	१०.०७.४३.०५	०६.०५.४३.३१
१८.०७.२०२३	०३.००.३०.१७	०४.०५.५८.२५	०३.१६.२७.२१	००.१८.२२.४९	०४.०१.४७.३७	१०.०७.२५.०४	०६.०५.२४.१५
२५.०७.२०२३	०३.०७.०९.१६	०४.१३.१६.४४	०३.२७.५७.२०	००.१९.२१.५३	०४.००.३२.२०	१०.०७.०२.४४	०६.०५.०२.००
०१.०८.२०२३	०३.१३.४९.०२	०४.१७.३६.२०	०४.०८.१६.०८	००.२०.०७.२३	०३.२८.००.५९	१०.०६.३६.०२	०६.०४.३९.४४
०८.०८.२०२३	०३.२०.२९.४१	०४.२१.५५.४५	०४.१६.३०.५०	००.२०.५०.४७	०३.२३.५०.०९	१०.०६.०९.०४	०६.०४.१७.२८
१५.०८.२०२३	०३.२७.११.२२	०४.२६.१५.१०	०४.२१.५१.५३	००.२१.२४.१५	०३.१९.३९.२९	१०.०५.३५.३९	०६.०३.५५.१३
२२.०८.२०२३	०४.०३.५४.१४	०५.००.४०.००	०४.२२.१८.४८	००.२१.४६.३६	०३.१५.३२.००	१०.०५.०२.३६	०६.०३.३२.५७
२९.०८.२०२३	०४.१०.३८.३१	०५.०५.०८.२८	०४.१७.४९.०९	००.२२.०७.१५	०३.१४.११.०६	१०.०४.२९.३३	०६.०३.१०.४२
०५.०९.२०२३	०४.१७.२४.२९	०५.०९.३६.४९	०४.१२.२१.२१	००.२२.११.०२	०३.१४.३४.१२	१०.०३.५३.३०	०६.०२.४८.२६
१२.०९.२०२३	०४.२४.११.४६	०५.१४.०५.३९	०४.११.२६.१४	००.२२.१४.५०	०३.१७.५८.४४	१०.०३.२९.५४	०६.०२.२६.१०
१९.०९.२०२३	०५.०१.००.५९	०५.१८.५२.५९	०४.१५.१९.२८	००.२२.००.०५	०३.२१.२३.१६	१०.०३.०४.४०	०६.०२.०३.५५

धर्मरक्षापञ्चाङ्गम्

२६.०९.२०२३	०५.०७.५२.०१	०५.२३.२३.४४	०४.२२.५४.३०	००.२१.३७.२७	०३.२४.५०.२२	१०.०२.४३.४१	०६.०१.४१.३९
०३.१०.२०२३	०५.१४.४४.५७	०५.२८.०४.३०	०५.०२.२०.३६	००.२१.०८.४७	०४.००.४८.१४	१०.०२.२५.५८	०६.०१.१९.२३
१०.१०.२०२३	०५.२१.३९.४७	०६.०२.४६.१६	०५.१३.१७.५१	००.२०.२७.३३	०४.०७.०८.०८	१०.०२.११.३३	०६.००.५७.०८
१७.१०.२०२३	०५.२८.३६.३०	०६.०७.३४.५९	०५.२४.५७.१३	००.१९.४६.११	०४.१३.२८.०२	१०.०२.०४.३०	०६.००.३४.५२
२४.१०.२०२३	०६.०५.३५.०५	०६.१२.२३.४२	०६.०७.१७.५९	००.१८.४९.५३	०४.२०.१७.०९	१०.०१.५७.३०	०६.००.१२.३६
३१.१०.२०२३	०६.१२.३५.२५	०६.१७.१२.२५	०६.१९.४१.१६	००.१७.५२.४०	०४.२७.४७.१३	१०.०२.००.३७	०५.२९.५०.२१
०७.११.२०२३	०६.१९.३७.२३	०६.२२.०१.२०	०७.०१.३६.५९	००.१६.५५.२७	०५.०५.१७.२५	१०.०२.०३.२४	०५.२९.२८.०५
१४.११.२०२३	०६.२६.४०.५६	०६.२७.१०.४३	०७.१२.५१.४९	००.१५.५८.१५	०५.१२.४७.३८	१०.०२.१४.३९	०५.२९.०५.४९
२१.११.२०२३	०७.०३.४५.५३	०७.०२.१२.०५	०७.२२.५४.०४	००.१५.०४.२८	०५.२०.४६.००	१०.०२.२७.४८	०५.२८.४३.३४
२८.११.२०२३	०७.१०.५२.०२	०७.०७.१४.५५	०८.०१.३८.०७	००.१४.२३.१५	०५.२८.४७.२०	१०.०२.४५.१२	०५.२८.२१.१८
०५.१२.२०२३	०७.१७.५९.१५	०७.१२.२५.४६	०८.०७.२२.३४	००.१३.४२.०५	०६.०६.४९.०७	१०.०३.०६.०४	०५.२७.५९.०२
१२.१२.२०२३	०७.०५.०७.२३	०७.१७.३६.२७	०८.०९.२५.४१	००.१३.१६.२६	०६.१४.५८.४२	१०.०३.२९.१४	०५.२७.३६.४७
१९.१२.२०२३	०८.०२.१६.१६	०७.२२.४८.००	०८.०५.५६.१६	००.१२.५३.४८	०६.२३.१७.३५	१०.०३.५८.३६	०५.२७.१४.३१
२६.१२.२०२३	०८.०९.२५.४०	०७.२८.०६.१०	०७.२९.५४.०२	००.१२.४३.२४	०७.०१.३८.०८	१०.०४.२८.३८	०५.२६.५२.१६
०२.०१.२०२४	०८.१६.३५.२८	०८.०३.२७.३१	०७.२७.२७.४४	००.१२.४७.११	०७.०९.५९.०५	१०.०५.०६.०७	०५.२६.३०.००
०९.०१.२०२४	०८.२३.४५.२२	०८.०८.४८.५२	०८.००.००.५५	००.१२.५२.२५	०७.१८.३१.११	१०.०५.४३.३२	०५.२६.०७.४४
१६.०१.२०२४	०९.००.५४.५४	०८.१४.१०.५९	०८.०६.३१.५१	००.१३.१४.३७	०७.२७.०४.५४	१०.०६.२५.१९	०५.२५.४५.२९
२३.०१.२०२४	०९.०८.०३.५२	०८.१९.३६.३४	०८.१५.३७.१३	००.१३.३६.४९	०८.०५.४०.२१	१०.०७.०८.०१	०५.२५.२३.१३
३०.०१.२०२४	०९.१५.१२.०५	०८.२५.०१.००	०८.२६.१८.०५	००.१४.१३.२७	०८.१४.१७.२५	१०.०७.५३.४५	०५.२५.००.५७
०६.०२.२०२४	०९.२२.१९.२५	०९.००.२४.३९	०९.०८.०४.२५	००.१४.५६.३६	०८.२२.५९.३८	१०.०८.४१.४४	०५..२४.३८.४२
१३.०२.२०२४	०९.२९.२५.४४	०९.०५.४८.१४	०९.२०.३४.१८	००.१५.४४.२१	०९.०१.४१.५१	१०.०९.३१.२७	०५.२४.१६.२६
२०.०२.२०२४	१०.०६.३०.५१	०९.११.११.४४	१०.०३.२५.१२	००.१६.४३.०९	०९.१०.२२.१३	१०.१०.२४.४४	०५.२३.५४.१०
२७.०२.२०२४	१०.१३.३४.३६	०९.१६.३५.१४	१०.१६.१३.०३	००.१७.४२.०४	०९.१९.०५.३७	१०.११.१७.५७	०५.२३.३१.५५
०५.०३.२०२४	१०.२०.३६.४८	०९.२१.५८.५५	१०.२८.२०.०२	००.१८.५२.२३	०९.२७.४६.५३	१०.१२.११.१०	०५.२३.०९.३९
१२.०३.२०२४	१०.२७.३७.२५	०९.२७.२२.१७	११.०९.४५.३५	००.२०.०४.१३	१०.०६.२७.५९	१०.१३.०४.२३	०५.२२.४७.२३
१९.०३.२०२४	११.०४.३६.१६	१०.०२.४३.४७	११.१९.५१.३४	००.२१.२१.०९	१०.१५.०७.२३	१०.१३.५३.०७	०५.२२.२५.०८
२६.०३.२०२४	११.११.३३.१८	१०.०८.०५.१३	११.२८.०२.१४	००.२२.४३.२०	१०.२३.४६.४७	१०.१४.४१.०१	०५.२२.०२.५२
०२.०४.२०२४	११.१८.२८.२७	१०.१३.२६.३९	००.०३.०२.२७	००.२४.०६.१६	११.०२.२६.१२	१०.१५.२५.४८	०५.२१.४०.३६

बुध- दि.२५.०४.२३ से १५.०५.२३, २०.०८.२३ से ०९.०९.२३, १२.१२.२३ से ०१.०१.२४, ०६.०४.२४ से वक्री; **गुरु-**१४.०९.२३ से २३.१२.२३वक्री; **शुक्र-** १७.०७.२३ से ०२.०९.२३वक्री; **शनि-** १९.०६.२३ से २४.१०.२४वक्री;

धर्मरक्षापञ्चाङ्गम्

शिववास ज्ञान			
शुक्लपक्ष तिथियाँ	कृष्णपक्ष तिथियाँ	वास	फल
१	७	श्मशाने	×
२	१	गौरीसन्निधौ	शुभम्
३	२	सभायाम्	×
४	३	क्रीड़ायाम्	×
५	४	कैलाशे	शुभम्
६	५	वृषे	शुभम्
७	६	भोजने	×
८	७	श्मशाने	×
९	८, ३०	गौरीसन्निधौ	शुभम्
१०	९	सभायाम्	×
११	१०	क्रीड़ायाम्	×
१२	११	कैलाशे	शुभम्
१३	१२	वृषे	शुभम्
१४	१३	भोजने	×
१५	१४	श्मशाने	×

अग्निवास ज्ञान														
शुक्लपक्ष तिथियाँ				रविवार	सोमवार	मंगलवार	बुधवार	गुरुवार	शुक्रवार	शनिवार	कृष्णपक्ष तिथियाँ			
१	५	९	१३	भू	भू	×	×	भू	भू	×	२	६	१०	१४
२	६	१०	१४	भू	×	×	भू	भू	×	×	३	७	११	३०
३	७	११	१५	×	×	भू	भू	×	×	भू	×	४	८	१२
×	४	८	१२	×	भू	भू	×	×	भू	भू	१	५	९	१३

धर्मरक्षापञ्चाङ्गम्

श्रीसंवत् २०८० शकः १९४५ सौम्यायनं याम्यगोलः वसन्तर्तुः चैत्र शुक्लपक्षः/ दिनांकः- २२.०३.२०२३ से ०६.०४.२०२३ तक।												
दिनांक	वार	तिथ्यान्तः		नक्षत्रान्तः		योगान्तः		करणान्तः		योगः	सू. उ.	सू. अ.
22	बु	१	२१:१६	उ.भा.	१६:२०	शुक्ल	०९:५९	किं	१०:३५	लुम्बक	०५:५२	०६:०८
23	गु	२	१९:५५	रेवती	१५:३७	ब्रह्म ऐन्द्र	०७:३७ २९:३४	वा	०६:५१	मित्र	०५:५१	०६:०९
24	शु	३	१९:००	अश्विनी	१५:१९	वैधृति	२७:५१	तै	०४:०४	वज्र	०५:५०	०६:१०
25	श	४	१८:३५	भरणी	१५:२९	विष्कुम्भ	२६:३१	व	०२:२५	ध्वांक्ष	०५:४९	०६:११
26	र	५	१८:४०	कृत्तिका	१६:०९	प्रीति	२५:३७	बव	०२:०१	धूम्र	०५:४९	०६:११
27	चं	६	१९:१७	रोहिणी	१७:१८	आयुष्मान	२५:०६	कौ	०२:५६	प्रवर्धमान	०५:४८	०६:१२
28	मं	७	२०:२१	मृगशिरा	१८:५५	सौभाग्य	२४:५६	गर	०५:०४	राक्षस	०५:४७	०६:१३
29	बु	८	२१:५३	आर्द्रा	२०:५९	शोभन	२५:०७	भ	०८:२१	मुसल	०५:४६	०६:१४
30	गु	९	२३:४५	पुनर्वसु	२३:२३	अतिगण्ड	२५:३२	वा	१२:३८	सिद्धि	०५:४६	०६:१४
31	शु	१०	२५:४९	पुष्य	२५:५७	सुकर्मा	२६:०६	तै	१७:३५	उत्पात	०५:४५	०६:१५
01	श	११	२८:५५	श्लेषा	२८:३४	धृति	२६:४१	व	२२:५०	मानस	०५:४४	०६:१६
02	र	१२	समस्त	मघा	समस्त	शूल	२७:१०	बव	२७:५७	मुद्गर	०५:४३	०६:१७
03	चं	१२	०५:५३	मघा	०७:०२	गण्ड	२७:२८	वा	००:२५	ध्वांक्ष	०५:४३	०६:१७
04	मं	१३	०७:३३	पू.फा.	०९:१४	वृद्धि	२७:२७	तै	०४:३७	धूम्र	०५:४२	०६:१८
05	बु	१४	०८:४७	उ. फा.	११:०२	ध्रुव	२७:०६	व	०७:४५	प्रवर्धमान	०५:४१	०६:१९
06	गु	१५	०८:३६	हस्त	१२:२४	व्याघात	२६:२२	बव	०९:५१	राक्षस	०५:४०	०६:२०

धर्मरक्षापञ्चाङ्गम्

श्रीसंवत् २०८० शक: १९४५ सौम्यायनं याम्यगोल: वसन्तर्त्तु: वैशाखकृष्णपक्ष:/ दिनांक:- ०७.०४.२०२३ से २०.०४.२०२३ तक/												
दिनांक	वार	तिथ्यान्त:		नक्षत्रान्त:		योगान्त:		करणान्त:		योग:	सू.उ.	सू.अ.
07	शु	१	०९:५३	चित्रा	१३:१५	हर्षण	२५:१३	कौ	१०:३३	मुसल	०५:४०	०६:२०
08	श	२	०९:३७	स्वाती	१३:३५	वज्र	२३:४०	गर	०९:५६	सिद्धि	०५:३९	०६:२१
09	र	३	०८:५३	विशाखा	१३:२७	सिद्धि	२१:४५	भ	०८:०७	उत्पात	०५:३८	०६:२२
10	चं	४	०७:२	अनुराधा	१२:५२	व्यतिपात	१९:२९	वा	०५:१३	मानस	०५:३७	०६:२३
11	मं	५ ६	०६:०८ २८:१६	ज्येष्ठा	११:५८	वरीयान	१६:५८	तै	०१:२१	मुद्गर	०५:३६	०६:२४
12	बु	७	२६:०६	मूल	१०:४४	परिध	१४:१२	भ	२३:५९	ध्वज	०५:३५	०६:२५
13	गु	८	२३:५१	पू.षा.	०९:१७	शिव	११:१६	वा	१८:२९	धाता	०५:३५	०६:२५
14	शु	९	२१:२४	उ. षा.	०७:४१	सिद्ध साध्य	०८:१६ २९:१०	तै	१२:३८	आनन्द	०५:३४	०६:२६
15	श	१०	१८:५८	श्रवण धनिष्ठा	०६:०० २८:२२	शुभ	२६:०६	व	०६:३४	सुस्थिर	०५:३३	०६:२७
16	र	११	१६:३५	शतभिषा	२६:४९	शुक्ल	२३:०६	बव	००:३४	राक्षस	०५:३३	०६:२७
17	चं	१२	१४:२२	पू.भा.	२५:२६	ब्रह्म	२०:१४	तै	२२:०५	मुसल	०५:३२	०६:२८
18	मं	१३	१२:२०	उ.भा.	२४:१९	ऐन्द्र	१७:३३	व	१७:०३	सिद्धि	०५:३१	०६:२९
19	बु	१४	१०:३९	रेवती	२३:३४	वैधृति	१५:१०	श	१२:५१	उत्पात	०५:३१	०६:२९
20	गु	३०	०९:१७	अश्विनी	२३:०९	विष्कुम्भ	१३:०३	नाग	०९:२८	मानस	०५:३०	०६:३०

धर्मरक्षापञ्चाङ्गम्

श्रीसंवत् २०८० शकः १९४५ सौम्यायनं सौम्यगोलः वसन्तर्त्तुः वैशाखशुक्लपक्षः / दिनांकः- २१.०४.२०२३ से ०५.०५.२०२३ तक/												
दिनांक	वार	तिथ्यान्तः		नक्षत्रान्तः		योगान्तः		करणान्तः		योगः	सू.उ.	सू.अ.
21	शु	१	०८:२१	भरणी	२३:१२	प्रीति	११:१६	बव	०७:१०	मुद्गर	०५:२९	०६:३१
22	श	२	०७:५५	कृत्तिका	२३:४५	आयुष्यमान	०९:५४	कौ	०६:०४	ध्वज	०५:२९	०६:३१
23	र	३	०७:५८	रोहिणी	२४:४८	सौभाग्य	०८:५४	गर	०६:१४	धाता	०५:२८	०६:३२
24	चं	४	०८:३३	मृगशिरा	२६:२०	शोभन	०८:२१	भ	०७:४६	आनन्द	०५:२७	०६:३३
25	मं	५	०९:३६	आर्द्रा	२८:२०	अतिगण्ड	०८:०८	वा	१०:२३	चर	०५:२७	०६:३३
26	बु	६	११:०७	पुनर्वसु	समस्त	सुकर्मा	०७:५२	तै	१४:१२	गद	०५:२६	०६:३४
27	गु	७	१२:५७	पुनर्वसु	०६:३९	धृति	०८:४१	व	१८:४८	सिद्धि	०५:२६	०६:३४
28	शु	८	१२:५९	पुष्य	०९:१२	शूल	०९:१५	बव	२३:५५	उत्पात	०५:२५	०६:३५
29	श	९	१७:०२	श्लेषा	११:५०	गण्ड	०९:५२	कौ	२९:०५	मानस	०५:२४	०६:३६
30	र	१०	१८:५७	मघा	१४:२२	वृद्धि	१०:२७	तै	०१:२९	मुद्गर	०५:२४	०६:३६
01	चं	११	२०:३५	पू.फा.	१६:३७	ध्रुव	१०:४९	व	०५:५७	ध्वज	०५:२३	०६:३७
02	मं	१२	२१:४९	उ. फा.	१८:३२	व्याघात	१०:५६	बव	०९:३२	धाता	०५:२३	०६:३७
03	बु	१३	२२:३६	हस्त	१९:५९	हर्षण	१०:४०	कौ	१२:०४	आनन्द	०५:२२	०६:३८
04	गु	१४	२२:५०	चित्रा	२०:५७	वज्र	१०:०२	गर	१३:२३	चर	०५:२१	०६:३९
05	शु	१५	२२:३३	स्वाती	२१:२३	सिद्धि	०९:०१	भ	१३:२१	गद	०५:२१	०६:३९

धर्मरक्षापञ्चाङ्गम्

श्रीसंवत् २०८० शक: १९४५ सौम्यायनं सौम्यगोल: वसन्तर्तु: ज्येष्ठकृष्णपक्ष: / दिनांक:- ०६.०५.२०२३ से १९.०५.२०२३ तक/												
दिनांक	वार	तिथ्यान्त:		नक्षत्रान्त:		योगान्त:		करणान्त:		योग:	सू.उ.	सू.अ.
06	श	१	२१:४७	विशाखा	२१:२१	व्यतिपात	०७:३४	वा	१२:०४	शुभ	०५:२०	०६:४०
07	र	२	२०:३६	अनुराधा	२०:५२	वरीयान परिघ	०५:४६ २७:३६	तै	०९:३९	मृत्यु	०५:२०	०६:४०
08	चं	३	१९:००	ज्येष्ठा	२०:०३	शिव	२५:१०	व	०६:११	पद्म	०५:१९	०६:४१
09	मं	४	१७:०५	मूल	१८:५२	सिद्ध	२२:२८	बव	०१:५०	छत्र	०५:१८	०६:४२
10	बु	५	१४:५५	पू.षा.	१७:२८	साध्य	१९:३६	तै	२४:०३	श्रीवत्स	०५:१८	०६:४२
11	गु	६	१२:३५	उ. षा.	१५:५३	शुभ	१४:३६	व	१८:१४	सौम्य	०५:१७	०६:४३
12	शु	७	१०:०९	श्रवण	१४:१४	शुक्ल	१३:३३	बव	१२:१०	धूम्र	०५:१७	०६:४३
13	श	८	०७:४१	धनिष्ठा	१२:३४	ब्रह्म	१०:३०	कौ	०६:०३	प्रवर्धमान	०५:१६	०६:४४
14	र	९ १०	०५:१७ २७:०३	शतभिषा	१०:५९	ऐन्द्र वैधृति	०७:३० २८:३८	गर	००:०३	राक्षस	०५:१६	०६:४४
15	चं	११	२४:५९	पू.भा.	०९:३४	विष्कुम्भ	२५:५६	बव	२१:५४	मुसल	०५:१५	०६:४५
16	मं	१२	२३:३६	उ. भा.	०८:२३	प्रीति	२३:३०	कौ	१७:११	सिद्धि	०५:१५	०६:४५
17	बु	१३	२१:५१	रेवती	०७:३४	आयुष्यमान	२१:२०	गर	१३:१८	उत्पात	०५:१४	०६:४६
18	गु	१४	२०:५४	अश्विनी	०७:०४	सौभाग्य	१९:३२	भ	१०:२१	मानस	०५:१४	०६:४६
19	शु	३०	२०:२४	भरणी	०७:०१	शोभन	१८:०५	च	०८:३३	मुद्गर	०५:१३	०६:४७

धर्मरक्षापञ्चाङ्गम्

श्रीसंवत् २०८० शक: १९४५ सौम्यायनं सौम्यगोल: ग्रीष्मर्त्तु: ज्येष्ठाशुक्लपक्ष: / दिनांक:- २०.०५.२०२३ से ०४.०६.२०२३ तक/												
दिनांक	वार	तिथ्यान्त:		नक्षत्रान्त:		योगान्त:		करणान्त:		योग:	सू.उ.	सू.अ.
20	श	१	२०:२५	कृत्तिका	०७:२७	अतिगण्ड	१७:०३	किं	०७:५९	ध्वज	०५:१३	०६:४७
21	र	२	२०:५८	रोहिणी	०८:२३	सुकर्मा	१६:२५	वा	०८:४२	धाता	०५:१२	०६:४८
22	चं	३	२१:५८	मृगशिरा	०९:५१	धृति	१६:१०	तै	१०:४०	आनन्द	०५:१२	०६:४८
23	मं	४	२३:२६	आर्द्रा	११:४४	शूल	१६:१५	व	१३:४६	चर	०५:११	०६:४९
24	बु	५	२५:१३	पुनर्वसु	१४:००	गण्ड	१६:३९	बव	१७:५२	गद	०५:११	०६:४९
25	गु	६	२७:१४	पुष्य	१६:३०	वृद्धि	१७:१३	कौ	२२:३८	शुभ	०५:१०	०६:५०
26	शु	७	समस्त	श्लेषा	१९:०९	ध्रुव	१७:५३	गर	२७:४३	मृत्यु	०५:१०	०६:५०
27	श	७	०५:१५	मघा	२१:४२	व्याघात	१८:२९	व	००:१६	पद्म	०५:०९	०६:५१
28	र	८	०७:१०	पू.फा.	२४:०३	हर्षण	१८:५६	बव	०५:०३	छत्र	०५:०९	०६:५१
29	चं	९	०८:४९	उ. फा.	२६:०३	वज्र	१९:०८	कौ	०९:०६	श्रीवत्स	०५:०९	०६:५१
30	मं	१०	०९:५९	हस्त	२७:३५	सिद्धि	१८:५८	गर	१२:०८	सौम्य	०५:०८	०६:५२
31	बु	११	१०:५६	चित्रा	२८:४०	व्यतिपात	१८:२८	भ	१४:०६	कालदण्ड	०५:०८	०६:५२
01	गु	१२	११:०१	स्वाती	समस्त	वरीयान	१७:३३	वा	१४:४२	सुस्थिर	०५:०८	०६:५२
02	शु	१३	१०:४३	स्वाती	०५:१५	परिध	१६:१४	तै	१३:५८	गद	०५:०८	०६:५२
03	श	१४	०९:५८	विशाखा अनुराधा	०५:१९ २८:५६	शिव	१४:३१	व	१२:०५	शुभ	०५:०८	०६:५२
04	र	१५	०८:४५	ज्येष्ठा	२८:११	सिद्ध	१२:२७	बव	०९:०४	काण	०५:०७	०६:५३

धर्मरक्षापञ्चाङ्गम्

श्रीसंवत् २०८० शकः १९४५ सौम्यायनं सौम्यगोलः ग्रीष्मर्त्तुः आषाढ़कृष्णपक्षः / दिनांकः- ०५.०६.२०२३ से १८.०६.२०२३ तक/											
दिनांक	वार	तिथ्यान्तः		नक्षत्रान्तः		योगान्तः		करणान्तः		योगः	सू.उ.	सू.अ.
05	चं	१	०७:०८	मूल	२७:०४	साध्य	१०:०५	कौ	०५:०५	लुम्बक	०५:०६	०६:५४
06	मं	२ ३	०५:१२ २७:०२	पू.षा.	२५:४२	शुभ शुक्ल	०७:२९ २८:४०	गर	००:१६	मित्र	०५:०६	०६:५४
07	बु	४	२४:४१	उ. षा.	२४:१०	ब्रह्म	२५:४२	बव	२१:५४	वज्र	०५:०६	०६:५४
08	गु	५	२२:१४	श्रवण	२२:३२	ऐन्द्र	२२:४१	कौ	१५:५५	ध्वज	०५:०६	०६:५४
09	शु	६	१९:४६	धनिष्ठा	२०:५०	वैधृति	१९:३७	गर	०९:४५	धाता	०५:०६	०६:५४
10	श	७	१७:२१	शतभिषा	१९:१४	विष्कुम्भ	१६:३७	भ	०३:३८	आनन्द	०५:०६	०६:५४
11	र	८	१५:०४	पू.भा.	१७:४७	प्रीति	१३:४४	कौ	२४:५६	चर	०५:०६	०६:५४
12	चं	९	१२:५९	उ. भा.	१६:३१	आयुष्मान	१०:५९	गर	१९:४५	गद	०५:०५	०६:५५
13	मं	१०	११:१३	रेवती	१५:३८	सौभाग्य	०८:३१	भ	१५:१९	शुभ	०५:०५	०६:५५
14	बु	११	०९:४७	अश्विनी	१५:०२	शोभन अतिगण्ड	०६:१९ २८:२७	वा	११:४५	मृत्यु	०५:०५	०६:५५
15	गु	१२	०८:४६	भरणी	१४:५२	सुकर्मा	२६:५६	तै	०९:१३	पद्म	०५:०५	०६:५५
16	शु	१३	०८:१५	कृत्तिका	१५:१३	धृति	२५:५०	व	०७:५४	छत्र	०५:०५	०६:५५
17	श	१४	०८:१३	रोहिणी	१४:०८	शूल	२५:०८	श	०७:४९	श्रीवत्स	०५:०५	०६:५५
18	र	३०	०८:१९	मृगशिरा	१७:२३	गण्ड	१२:५०	नाग	०८:०४	सौम्य	०५:०५	०६:५५

धर्मरक्षापञ्चाङ्गम्

श्रीसंवत् २०८० शकः १९४५ सौम्यायनं सौम्यगोलः ग्रीष्मर्त्तुः आषाढ़शुक्लपक्षः / दिनांकः- १९.०६.२०२३ से ०३.०७.२०२३ तक/											
दिनांक	वार	तिथ्यान्तः		नक्षत्रान्तः		योगान्तः		करणान्तः		योगः	सू.उ.	सू.अ.
19	चं	१	०९:४०	आर्द्रा	११:११	वृद्धि	२४:५३	बव	११:२८	कालदण्ड	०५:०५	०६:५५
20	मं	२	११:०६	पुनर्वसु	२१:२३	ध्रुव	२५:१५	कौ	१५:०२	सुस्थिर	०५:०५	०६:५५
21	बु	३	१२:५१	पुष्य	२३:५०	व्याघात	२५:४८	गर	१९:२६	मातंग	०५:०५	०६:५५
22	गु	४	१४:५०	श्लेषा	२६:२७	हर्षण	२६:२९	भ	२४:२२	अमृत	०५:०५	०६:५५
23	शु	५	१६:५१	मघा	२९:०३	वज्र	२७:०७	वा	२९:२६	काण	०५:०५	०६:५५
24	श	६	१८:४६	पू.फा.	समस्त	सिद्धि	२७:३७	कौ	०१:४९	लुम्बक	०५:०५	०६:५५
25	र	७	२०:२४	पू.फा.	०७:२६	व्यतिपात	२७:५३	गर	०६:१५	छत्र	०५:०५	०६:५५
26	चं	८	२१:३८	उ. फा.	०९:३२	वरीयान	२७:४९	भ	०९:५०	श्रीवत्स	०५:०५	०६:५५
27	मं	९	२२:२५	हस्त	११:१०	परिध	२७:२३	वा	१२:२२	सौम्य	०५:०५	०६:५५
28	बु	१०	२२:४१	चित्रा	१२:२१	शिव	२६:३३	तै	१३:४१	कालदण्ड	०५:०५	०६:५५
29	गु	११	२२:२५	स्वाती	१३:०२	सिद्ध	२५:१९	व	१३:४१	सुस्थिर	०५:०५	०६:५५
30	शु	१२	२१:४१	विशाखा	१३:१३	साध्य	२३:४०	बव	१२:२५	मातंग	०५:०५	०६:५५
01	श	१३	२०:२९	अनुराधा	१२:५६	शुभ	२१:४१	कौ	१०:००	अमृत	०५:०५	०६:५५
02	र	१४	१८:५४	ज्येष्ठा	१२:१४	शुक्ल	१९:२३	गर	०६:३१	काण	०५:०५	०६:५५
03	चं	१५	१६:५९	मूल	११:१२	ब्रह्म	१६:४९	भ	०२:०८	लुम्बक	०५:०५	०६:५५

धर्मरक्षापञ्चाङ्गम्

श्रीसंवत् २०८० शकः १९४५ सौम्यायनं सौम्यगोलः वर्षर्तुः शुद्धश्रावणकृष्णपक्षः / दिनांकः- ०४.०७.२०२३ से १७.०७.२०२३ तक/												
दिनांक	वार	तिथ्यान्तः		नक्षत्रान्तः		योगान्तः		करणान्तः		योगः	सू.उ.	सू.अ.
04	मं	१	१४:५०	पू.षा.	०९:५५	ऐन्द्र	१४:०२	कौ	२४:१९	मित्र	०५:०६	०६:५४
05	बु	२	१२:२८	उ. षा.	०८:२४	वैधृति	११:०६	गर	१८:२५	वज्र	०५:०६	०६:५४
06	गु	३	१०:००	श्रवण धनिष्ठा	०६:४६ २९:०४	विष्कुम्भ प्रीति	०८:०५ २९:०१	भ	१२:१५	ध्वज	०५:०६	०६:५४
07	शु	४ ५	०७:३२ २९:०५	शतभिषा	२७:२८	आयुष्यमान	२६:०१	वा	०६:०२	सौम्य	०५:०७	०६:५३
08	श	६	२६:४७	पू.भा.	२५:५८	सौभाग्य	२३:०६	गर	२७:०३	कालदण्ड	०५:०७	०६:५३
09	र	७	२४:४१	उ. भा.	२४:४१	शोभन	२०:२०	भ	२१:३३	सुस्थिर	०५:०७	०६:५३
10	चं	८	२२:५३	रेवती	२३:४०	अतिगण्ड	१७:४८	वा	१६:४१	मातंग	०५:०७	०६:५३
11	मं	९	२१:२६	अश्विनी	२३:०१	सुकर्मा	१५:३४	तै	१२:३६	अमृत	०५:०८	०६:५२
12	बु	१०	२०:२३	भरणी	२२:४६	धृति	१३:३८	व	०९:२७	काण	०५:०८	०६:५२
13	गु	११	१९:४८	कृत्तिका	२२:५९	शूल	१२:०३	बव	०७:२४	लुम्बक	०५:०८	०६:५२
14	शु	१२	१९:४५	रोहिणी	२३:४२	गण्ड	१०:५२	कौ	०६:३५	मित्र	०५:०९	०६:५१
15	श	१३	२०:१२	मृगशिरा	२४:५६	वृद्धि	१०:०५	गर	०७:०३	वज्र	०५:०९	०६:५१
16	र	१४	२१:०७	आर्द्रा	२६:३७	ध्रुव	०९:४३	भ	०८:४६	ध्वांक्ष	०५:०९	०६:५१
17	चं	३०	२२:३१	पुनर्वसु	२८:४४	व्याघात	०९:४३	च	११:३९	धूम्र	०५:१०	०६:५०

धर्मरक्षापञ्चाङ्गम्

श्रीसंवत् २०८० शकः १९४५ याम्यायनं सौम्यगोलः वर्षर्तुः अधिकश्रावणशुक्लपक्षः / दिनांकः- १८.०७.२०२३ से ०१.०८.२०२३ तक/												
दिनांक	वार	तिथ्यान्तः		नक्षत्रान्तः		योगान्तः		करणान्तः		योगः	सू.उ.	सू.अ.
18	मं	१	२४:१४	पुष्य	समस्त	हर्षण	१०:०१	किं	१५:३२	प्रवर्धमान	०५:१०	०६:५०
19	बु	२	२६:१२	पुष्य	०७:०८	वज्र	१०:३२	वा	२०:०८	मातंग	०५:१०	०६:५०
20	गु	३	२८:१५	श्लेषा	०९:४५	सिद्धि	११:१२	तै	२५:०७	अमृत	०५:११	०६:४९
21	शु	४	समस्त	मघा	१२:२१	व्यतिपात	११:५२	व	३०:०२	काण	०५:११	०६:४९
22	श	४	०६:१०	पू.फा.	१४:४९	वरीयान	१२:२४	भ	०२:२५	लुम्बक	०५:१२	०६:४८
23	र	५	०७:४९	उ. फा.	१६:५९	परिध	१२:४३	वा	०६:३२	मित्र	०५:१२	०६:४८
24	चं	६	०९:०५	हस्त	१८:४४	शिव	१२:४३	तै	०९:४२	वज्र	०५:१२	०६:४८
25	मं	७	०९:५५	चित्रा	२०:०३	सिद्ध	१२:२३	व	११:४६	ध्वांक्ष	०५:१३	०६:४७
26	बु	८	१०:१३	स्वाती	२०:५०	साध्य	११:३६	बव	१२:३१	धूम्र	०५:१३	०६:४७
27	गु	९	१०:०२	विशाखा	२१:०८	शुभ	१०:२६	कौ	११:५९	प्रवर्धमान	०५:१४	०६:४६
28	शु	१०	०९:२०	अनुराधा	२०:५६	शुक्ल	०८:५१	गर	१०:१४	राक्षस	०५:१४	०६:४६
29	श	११	०८:११	ज्येष्ठा	२०:२०	ब्रह्म ऐन्द्र	०६:५५ २८:४०	भ	०७:२०	मुसल	०५:१५	०६:४५
30	र	१२ १३	०६:४८ २८:४४	मूल	१९:२४	वैधृति	२६:०८	वा	०३:२७	सिद्धि	०५:१५	०६:४५
31	चं	१४	२६:३६	पू.षा.	१८:०९	विष्कुम्भ	२३:२३	गर	२६:०२	उत्पात	०५:१६	०६:४४
01	मं	१५	२४:१६	उ. षा.	१६:४०	प्रीति	२०:२७	भ	२०:२५	मानस	०५:१६	०६:४४

धर्मरक्षापञ्चाङ्गम्

श्रीसंवत् २०८० शक: १९४५ याम्यायनं सौम्यगोल: वर्षर्त्तु: अधिकश्रावणकृष्णपक्ष: / दिनांक:- ०२.०८.२०२३ से १६.०८.२०२३ तक/											
दिनांक	वार	तिथ्यान्त:		नक्षत्रान्त:		योगान्त:		करणान्त:		योग:	सू.उ.	सू.अ.
02	बु	१	२१:५०	श्रवण	१५:०४	आयुष्यमान	१७:२७	वा	१४:२६	छत्र	०५:१७	०६:४३
03	गु	२	१९:२१	धनिष्ठा	१३:२३	सौभाग्य	१४:२२	तै	०८:२६	श्रीवत्स	०५:१७	०६:४३
04	शु	३	१६:५५	शतभिषा	११:४५	शोभन	११:२०	व	०२:०६	सौम्य	०५:१८	०६:४२
05	श	४	१४:३६	पू.भा.	१०:१२	अतिगण्ड	०८:२३	वा	२३:१६	कालदण्ड	०५:१८	०६:४२
06	र	५	१२:३१	उ. भा.	०८:५१	सुकर्मा धृति	०५:३५ २६:५९	तै	१८:००	सुस्थिर	०५:१९	०६:४१
07	चं	६	१०:४२	रेवती	०७:४७	शूल	२४:४०	व	१३:२६	मातंग	०५:२०	०६:४०
08	मं	७	०९:१३	अश्विनी	०७:०२	गण्ड	२२:४०	बव	०९:४३	अमृत	०५:२०	०६:४०
09	बु	८	०८:०९	भरणी	०६:४१	वृद्धि	२०:५९	कौ	०७:००	काण	०५:२१	०६:३९
10	गु	९	०७:३३	कृत्तिका	०६:४७	ध्रुव	१९:४३	गर	०५:३०	लुम्बक	०५:२१	०६:३९
11	शु	१०	०७:२८	रोहिणी	०७:२३	व्याघात	१८:५१	भ	०५:१४	मित्र	०५:२२	०६:३८
12	श	११	०७:५५	मृगशिरा	०८:३०	हर्षण	१८:२५	वा	०६:१९	वज्र	०५:२३	०६:३७
13	र	१२	०८:४९	आर्द्रा	१०:०३	वज्र	१८:१७	तै	०८:३४	ध्वांक्ष	०५:२३	०६:३७
14	चं	१३	१०:१२	पुनर्वसु	१२:०६	सिद्धि	१८:३२	व	११:५९	धूम्र	०५:२४	०६:३६
15	मं	१४	११:५५	पुष्य	१४:२६	व्यतिपात	१९:००	श	१६:१७	प्रवर्धमान	०५:२४	०६:३६
16	बु	३०	१३:५३	श्लेषा	१७:००	वरीयान	१९:३८	नाग	२१:११	राक्षस	०५:२५	०६:३५

धर्मरक्षापञ्चाङ्गम्

श्रीसंवत् २०८० शक: १९४५ याम्यायनं सौम्यगोल: वर्षर्त्तु: शुद्धश्रावणशुक्लपक्ष: / दिनांक:- १७.०८.२०२३ से ३१.०८.२०२३ तक/												
दिनांक	वार	तिथ्यान्त:		नक्षत्रान्त:		योगान्त:		करणान्त:		योग:	सू.उ.	सू.अ.
17	गु	१	१५:५७	मघा	१९:३८	परिध	२०:१८	बव	२६:१७	मुसल	०५:२६	०६:३४
18	शु	२	१७:५३	पू.फा.	२०:०८	शिव	२०:५१	कौ	३१:०८	सिद्धि	०५:२६	०६:३४
19	श	३	१९:३५	उ. फा.	२४:२२	सिद्ध	२१:१३	तै	०३:१४	उत्पात	०५:२७	०६:३३
20	र	४	२०:५५	हस्त	२६:१४	साध्य	२१:१६	व	०६:५९	मानस	०५:२८	०६:३२
21	चं	५	२१:४६	चित्रा	२७:३९	शुभ	२०:५६	बव	०९:४३	मुद्गर	०५:२८	०६:३२
22	मं	६	२२:०९	स्वाती	२८:३४	शुक्ल	२०:१४	कौ	११:१३	ध्वज	०५:२९	०६:३१
23	बु	७	२२:००	विशाखा	२८:५८	ब्रह्म	१९:०८	गर	११:१८	धाता	०५:३०	०६:३०
24	गु	८	२१:२०	अनुराधा	२८:५२	ऐन्द्र	१७:३७	भ	१०:२६	आनन्द	०५:३०	०६:३०
25	शु	९	२०:१४	ज्येष्ठा	२८:२१	वैधृति	१५:४४	वा	०८:१२	चर	०५:३१	०६:२९
26	श	१०	१८:४५	मूल	२७:३१	विष्कुम्भ	१३:३२	तै	०४:५५	गद	०५:३२	०६:२८
27	र	११	१६:५४	पू.षा.	२६:१८	प्रीति	११:०२	व	००:४४	शुभ	०५:३२	०६:२८
28	चं	१२	१४:४८	उ. षा.	२४:५३	आयुष्यमान सौभाग्य	०८:१९ २९:२३	वा	२३:०८	मृत्यु	०५:३३	०६:२७
29	मं	१३	१२:३०	श्रवण	२३:१८	शोभन	२६:२३	तै	१७:२०	लुम्बक	०५:३४	०६:२६
30	बु	१४	१०:०४	धनिष्ठा	२१:३७	अतिगण्ड	२३:१७	व	११:५५	मित्र	०५:३४	०५:२६
31	गु	१५ १	०७:३७ २९:११	शतभिषा	१९:५८	सुकर्मा	२०:१४	बव	०५:०५	वज्र	०५:३५	०६:२५

धर्मरक्षापञ्चाङ्गम्

श्रीसंवत् २०८० शकः १९४५ याम्यायनं सौम्यगोलः वर्षर्तुः भाद्रपदकृष्णपक्षः / दिनांकः- ०१.०९.२०२३ से १५.०९.२०२३ तक/												
दिनांक	वार	तिथ्यान्तः		नक्षत्रान्तः		योगान्तः		करणान्तः		योगः	सू.उ.	सू.अ.
01	शु	२	२६:५५	पू.भा.	१८:२४	धृति	१७:१४	तै	२६:०९	ध्वांक्ष	०५:३६	०६:२४
02	श	३	२४:४९	उ. भा.	१६:५९	शूल	१४:२३	व	२०:३९	धूम्र	०५:३७	०६:२३
03	र	४	२३:०१	रेवती	१५:५०	गण्ड	११:४४	बव	१५:४४	प्रवर्धमान	०५:३८	०६:२२
04	चं	५	२१:३३	अश्विनी	१५:०२	वृद्धि	०९:२०	कौ	११:३६	राक्षस	०५:३९	०६:२१
05	मं	६	२०:२७	भरणी	१४:३३	ध्रुव व्याघात	०७:१३ २९:२६	गर	०८:२२	मुसल	०५:३९	०६:२१
06	बु	७	१९:५०	कृत्तिका	१४:३१	हर्षण	२८:०२	भ	०६:१४	सिद्धि	०५:३९	०६:२१
07	गु	८	१९:४४	रोहिणी	१४:५९	वज्र	२७:०४	वा	०५:१८	उत्पात	०५:४०	०६:२०
08	शु	९	२०:१०	मृगशिरा	१५:५८	सिद्धि	२६:३०	तै	०५:४१	मानस	०५:४१	०६:१९
09	श	१०	२१:०५	आर्द्रा	१७:२६	व्यतिपात	२६:१६	व	०७:२१	मुद्गर	०५:४१	०६:१९
10	र	११	२२:२८	पुनर्वसु	१९:२२	वरीयान	२६:२५	बव	१०:१२	ध्वज	०५:४२	०६:१८
11	चं	१२	२४:१३	पुष्य	२१:२४	परिध	२६:५०	कौ	१४:०५	धाता	०५:४३	०६:१७
12	मं	१३	२६:१३	श्लेषा	२४:१०	शिव	२७:२५	गर	१८:४३	आनन्द	०५:४४	०६:१६
13	बु	१४	२८:१७	मघा	२६:४६	सिद्ध	२८:०२	भ	२३:४७	चर	०५:४४	०६:१६
14	गु	३०	समस्त	पू.फा.	२९:१९	साध्य	२८:३५	च	२८:५१	गद	०५:४५	०६:१५
15	शु	३०	०६:१८	उ. फा.	समस्त	शुभ	२८:५८	नाग	०१:२०	शुभ	०५:४६	०६:१४

धर्मरक्षापञ्चाङ्गम्

श्रीसंवत् २०८० शकः १९४५ याम्यायनं सौम्यगोलः वर्षर्त्तुः भाद्रपदशुक्लपक्षः / दिनांकः- १६.०९.२०२३ से २९.०९.२०२३ तक/												
दिनांक	वार	तिथ्यान्तः		नक्षत्रान्तः		योगान्तः		करणान्तः		योगः	सू.उ.	सू.अ.
16	श	१	०८:०२	उ. फा.	०७:३९	शुक्ल	२९:०३	बव	०५:३७	उत्पात	०५:४७	०६:१३
17	र	२	०९:२३	हस्त	०९:३६	ब्रह्म	२८:४७	कौ	०९:०१	मानस	०५:४७	०६:१३
18	चं	३	१०:१९	चित्रा	११:०७	ऐन्द्र	२८:१०	गर	११:१८	मुद्गर	०५:४८	०६:१२
19	मं	४	१०:४५	स्वाती	१२:०९	वैधृति	२७:०८	भ	१२:२०	ध्वज	०५:४९	०६:११
20	बु	५	१०:३८	विशाखा	१२:३९	विष्कुम्भ	२५:४१	वा	१२:०२	धाता	०५:४९	०६:११
21	गु	६	१०:०२	अनुराधा	१२:४२	प्रीति	२३:५३	तै	१०:३०	आनन्द	०५:५०	०६:१०
22	शु	७	०८:५८	ज्येष्ठा	१२:१६	आयुष्यमान	२१:४४	व	०७:४७	चर	०५:५१	०६:०९
23	श	८ ९	०७:३० २९:४२	मूल	११:३०	सौभाग्य	१९:१८	बव	०४:०६	गद	०५:५२	०६:०८
24	र	१०	२३:३८	पू.षा.	१०:२१	शोभन	१६:३५	तै	२७:००	शुभ	०५:५२	०६:०८
25	चं	११	२५:२२	उ. षा.	०८:५८	अतिगण्ड	१३:४२	व	२१:३३	मृत्यु	०५:५३	०६:०७
26	मं	१२	२२:५९	श्रवण धनिष्ठा	०७:२५ २९:४६	सुकर्मा	१०:४१	बव	१५:४२	लुम्बक	०५:५४	०६:०६
27	बु	१३	२०:३३	शतभिषा	२८:०५	धृति शूल	०७:३६ २८:३९	कौ	०९:३९	मानस	०५:५५	०६:०५
28	गु	१४	१८:०९	पू.भा.	२६:२९	गण्ड	२५:२६	गर	०३:३६	मुद्गर	०५:५५	०६:०५
29	शु	१५	१५:५४	उ. भा.	२५:०२	वृद्धि	२२:३०	बव	२४:५५	ध्वज	०५:५६	०६:०४

धर्मरक्षापञ्चाङ्गम्

श्रीसंवत् २०८० शकः १९४५ याम्यायनं सौम्यगोलः शरदृतुः आश्विनकृष्णपक्षः / दिनांकः- ३०.०९.२०२३ से १४.१०.२०२३ तक/

दिनांक	वार	तिथ्यान्तः		नक्षत्रान्तः		योगान्तः		करणान्तः		योग	सू.उ.	सू.अ.
30	श	१	१३:५०	रेवती	२३:४९	ध्रुव	१९:४६	कौ	१९:४२	धाता	०५:५७	०६:०३
01	र	२	१२:०२	अश्विनी	२२:५६	व्याघात	१७:१७	गर	१५:१०	आनन्द	०५:५८	०६:०२
02	चं	३	१०:३४	भरणी	२२:२२	हर्षण	१५:०२	भ	११:३१	चर	०५:५८	०६:०२
03	मं	४	०९:३१	कृत्तिका	२२:१४	वज्र	१३:०९	वा	०८:४९	गद	०५:५९	०६:०१
04	बु	५	०८:५६	रोहिणी	२२:३६	सिद्धि	११:३८	तै	०७:२०	शुभ	०६:००	०६:००
05	गु	६	०८:५०	मृगशिरा	२३:२६	व्यतिपात	१०:३१	व	०७:०५	मृत्यु	०६:००	०६:००
06	शु	७	०९:१७	आर्द्रा	२४:४९	वरीयान	०९:४९	बव	०८:१०	पद्म	०६:०१	०५:५९
07	श	८	१०:१३	पुनर्वसु	२६:३८	परिध	०९:२९	कौ	१०:२८	छत्र	०६:०२	०५:५८
08	र	९	११:३८	पुष्य	२८:५१	शिव	०९:३१	गर	१३:५८	श्रीवत्स	०६:०३	०५:५७
09	चं	१०	१३:२४	श्लेषा	समस्त	सिद्ध	०९:४९	भ	१८:२२	सौम्य	०६:०३	०५:५७
10	मं	११	१५:२६	श्लेषा	०७:१९	साध्य	१०:१८	वा	२३:२४	आनन्द	०६:०४	०५:५६
11	बु	१२	१७:३३	मघा	०९:५७	शुभ	१०:५३	तै	२८:४०	चर	०६:०५	०५:५५
12	गु	१३	१९:३६	पू.फा.	१२:३२	शुक्ल	११:२६	गर	०१:१२	गद	०६:०६	०५:५४
13	शु	१४	२१:२१	उ. फा.	१४:५३	ब्रह्म	११:४९	भ	०५:५६	शुभ	०६:०६	०५:५४
14	श	३०	२२:४६	हस्त	१६:५७	ऐन्द्र	११:५९	च	०९:५३	मृत्यु	०६:०७	०५:५३

धर्मरक्षापञ्चाङ्गम्

श्रीसंवत् २०८० शकः १९४५ याम्यायनं सौम्यगोलः शरदृतुः आश्विनशुक्लपक्षः / दिनांकः- १५.१०.२०२३ से २८.१०.२०२३ तक/

दिनांक	वार	तिथ्यान्तः		नक्षत्रान्तः		योगान्तः		करणान्तः		योगः	सू.उ.	सू.अ.
15	र	१	२३:४४	चित्रा	१८:३५	वैधृति	११:४७	किं	१२:५०	पद्म	०६:०८	०५:५२
16	चं	२	२४:११	स्वाती	१९:४४	विष्कुम्भ	११:१५	वा	१४:३५	छत्र	०६:०८	०५:५२
17	मं	३	२४:०८	विशाखा	२०:२३	प्रीति	१०:१९	तै	१५:०३	श्रीवत्स	०६:०९	०५:५१
18	बु	४	२३:३४	अनुराधा	२०:३३	आयुष्यमान	०८:५८	व	१४:१४	सौम्य	०६:१०	०५:५०
19	गु	५	२२:३२	ज्येष्ठा	२०:१५	सौभाग्य शोभन	०७:१४ २९:०८	बव	१२:१२	कालदण्ड	०६:११	०५:४९
20	शु	६	२१:०५	मूल	१९:३२	अतिगण्ड	२६:४५	कौ	०९:०५	सुस्थिर	०६:११	०५:४९
21	श	७	१९:१९	पू.षा.	१८:२९	सुकर्मा	२४:०५	गर	०५:०२	मातंग	०६:१२	०५:४८
22	र	८	१७:१७	उ. षा.	१७:१०	धृति	२१:१३	भ	००:१४	अमृत	०६:१३	०५:४७
23	चं	९	१५:०२	श्रवण	१५:३८	शूल	१८:१२	कौ	२२:०२	सिद्धि	०६:१३	०५:४७
24	मं	१०	१२:४१	धनिष्ठा	१४:००	गण्ड	१५:०६	गर	१६:०७	उत्पात	०६:१४	०५:४६
25	बु	११	१०:१७	शतभिषा	१२:१९	वृद्धि	११:५८	भ	१०:०६	मानस	०६:१५	०५:४५
26	गु	१२ १३	०५:५५ २९:४१	पू.भा.	१०:४१	ध्रुव व्याघात	०८:५२ २९:५२	वा	०४:११	मुद्गर	०६:१५	०५:४५
27	शु	१४	२७:३९	उ. भा.	०९:१२	हर्षण	२७:०३	गर	२६:०१	ध्वज	०६:१६	०५:४४
28	श	१५	२५:५३	रेवती	०७:५५	वज्र	२४:२७	भ	२१:१४	धाता	०६:१७	०५:४३

धर्मरक्षापञ्चाङ्गम्

श्रीसंवत् २०८० शक: १९४५ याम्यायनं याम्यगोल: शरदृतु: कार्तिककृष्णपक्ष: / दिनांक:- २९.१०.२०२३ से १३.११.२०२३ तक/												
दिनांक	वार	तिथ्यान्त:		नक्षत्रान्त:		योगान्त:		करणान्त:		योग:	सू.उ.	सू.अ.
29	र	१	२४:२८	अश्विनी भरणी	०६:५५ ३०:१५	सिद्धि	२२:०६	वा	१७:१४	आनन्द	०६:१७	०५:४३
30	चं	२	२३:२७	कृत्तिका	३०:०१	व्यतिपात	२०:०६	तै	१४:१०	सुस्थिर	०६:१८	०५:४२
31	मं	३	२२:५४	रोहिणी	३०:१५	वरीयान	१८:२६	व	१२:१०	मातंग	०६:१९	०५:४१
01	बु	४	२२:५१	मृगशिरा	समस्त	परिध	१७:०९	बव	११:२४	अमृत	०६:१९	०५:४१
02	गु	५	२३:२०	मृगशिरा	०६:५९	शिव	१६:१८	कौ	११:५६	मृत्यु	०६:२०	०५:४०
03	शु	६	२४:१९	आर्द्रा	०८:१४	सिद्ध	१५:५१	गर	१३:४४	पद्म	०६:२१	०५:३९
04	श	७	२५:४५	पुनर्वसु	०९:५५	साध्य	१५:४२	भ	१६:४३	छत्र	०६:२१	०५:३९
05	र	८	२७:३३	पुष्य	१२:०२	शुभ	१५:५४	वा	२०:४४	श्रीवत्स	०६:२२	०५:३८
06	चं	९	२९:३८	श्लेषा	१४:२७	शुक्ल	१६:१८	तै	२५:३२	सौम्य	०६:२३	०५:३७
07	मं	१०	समस्त	मघा	१७:०३	ब्रह्म	१६:५०	व	३०:४८	कालदण्ड	०६:२३	०५:३७
08	बु	१०	०७:४७	पू.फा.	१९:३९	ऐन्द्र	१७:२३	भ	०३:२८	सुस्थिर	०६:२४	०५:३६
09	गु	११	०९:५०	उ. फा.	२२:०४	वैधृति	१७:४८	वा	०८:३६	मातंग	०६:२४	०५:३६
10	शु	१२	११:३९	हस्त	२४:१४	विष्कुम्भ	१८:०२	तै	१३:०४	अमृत	०६:२५	०५:३५
11	श	१३	१३:०६	चित्रा	२५:५८	प्रीति	१७:५६	व	१६:३९	काण	०६:२६	०५:३४
12	र	१४	१६:०४	स्वाती	२७:१४	आयुष्मान	१७:३०	श	१९:०४	लुम्बक	०६:२६	०५:३४
13	चं	३०	१६:३३	विशाखा	२८:०१	सौभाग्य	१६:३९	नाग	२०:१४	मित्र	०६:२७	०५:३३

धर्मरक्षापञ्चाङ्गम्

श्रीसंवत् २०८० शक: १९४५ याम्यायनं याम्यगोल: शरदृतु: कार्तिकशुक्लपक्ष: / दिनांक:- १४.११.२०२३ से २७.११.२०२३ तक/												
दिनांक	वार	तिथ्यान्त:		नक्षत्रान्त:		योगान्त:		करणान्त:		योग:	सू.उ.	सू.अ.
14	मं	१	१४:२९	अनुराधा	२८:१६	शोभन	१५:२४	बव	२०:०५	वज्र	०६:२७	०५:३३
15	बु	२	१३:५६	ज्येष्ठा	२८:०४	अतिगण्ड	१३:४६	कौ	१८:४१	ध्वांक्ष	०६:२८	०५:३२
16	गु	३	१२:५५	मूल	२७:२७	सुकर्मा	११:४७	गर	१६:०६	धूम्र	०६:२९	०५:३१
17	शु	४	११:३०	पू.षा.	२६:२९	धृति	०९:२७	भ	१२:३२	प्रवर्धमान	०६:२९	०५:३१
18	श	५	०९:४५	उ. षा.	२५:१४	शूल गण्ड	०६:५२ २८:०१	वा	०८:०७	राक्षस	०६:३०	०५:३०
19	र	६ ७	०७:४२ २९:२८	श्रवण	२३:४४	वृद्धि	२३:०१	तै	०३:०१	गद	०६:३०	०५:३०
20	चं	८	२७:०७	धनिष्ठा	२२:०७	ध्रुव	२१:५५	भ	२४:२८	शुभ	०६:३१	०५:२९
21	मं	९	२४:४५	शतभिषा	२०:२६	व्याघात	१८:४५	वा	१८:३३	मृत्यु	०६:३१	०५:२९
22	बु	१०	२२:२६	पू.भा.	१८:४८	हर्षण	१५:३८	तै	१२:४०	पद्म	०६:३२	०५:२८
23	गु	११	२०:१३	उ. भा.	१७:१५	वज्र	१२:३५	व	०६:५९	छत्र	०६:३२	०५:२८
24	शु	१२	१८:१३	रेवती	१५:५४	सिद्धि	०९:३९	बव	०१:४३	श्रीवत्स	०६:३२	०५:२८
25	श	१३	१६:३०	अश्विनी	१४:४९	व्यतिपात वरीयान	०६:५७ २८:३०	तै	२४:५३	सौम्य	०६:३३	०५:२७
26	र	१४	१५:०७	भरणी	१४:०४	परिध	२६:२१	व	२१:२६	कालदण्ड	०६:३३	०५:२७
27	चं	१५	१४:०९	कृत्तिका	१३:४४	शिव	२४:३३	बव	१८:५८	सुस्थिर	०६:३४	०५:२६

धर्मरक्षापञ्चाङ्गम्

श्रीसंवत् २०८० शक: १९४५ याम्यायनं याम्यगोल: हेमन्तर्त्तु: मार्गशीर्षकृष्णपक्ष: / दिनांक:- २८.११.२०२३ से १२.१२.२०२३ तक/												
दिनांक	वार	तिथ्यान्त:		नक्षत्रान्त:		योगान्त:		करणान्त:		योग:	सू.उ.	सू.अ.
28	मं	१	१३:३९	रोहिणी	१३:५०	सिद्ध	२३:०८	कौ	१७:४३	मातंग	०६:३४	०५:२६
29	बु	२	१३:४०	मृगशिरा	१४:२७	साध्य	२२:०६	गर	१७:४३	अमृत	०६:३५	०५:२५
30	गु	३	१४:१३	आर्द्रा	१५:३३	शुभ	२१:२९	भ	१९:०४	काण	०६:३५	०५:२५
01	शु	४	१५:१३	पुनर्वसु	१७:०७	शुक्ल	२१:१२	वा	२१:३६	लुम्बक	०६:३५	०५:२५
02	श	५	१६:४४	पुष्य	१९:१०	ब्रह्म	२१:१७	तै	२५:१९	मित्र	०६:३६	०५:२४
03	र	६	१८:३४	श्लेषा	२१:३०	ऐन्द्र	२१:३६	व	२९:५५	वज्र	०६:३६	०५:२४
04	चं	७	२०:३९	मघा	२४:०४	वैधृति	२२:०५	भ	०२:३१	ध्वांक्ष	०६:३६	०५:२४
05	मं	८	२२:४९	पू.फा.	२६:४१	विष्कुम्भ	२२:३९	वा	०७:४९	धूम्र	०६:३७	०५:२३
06	बु	९	२४:५४	उ. फा.	२९:१०	प्रीति	२३:०६	तै	१३:०७	प्रवर्धमान	०६:३७	०५:२३
07	गु	१०	२६:४३	हस्त	समस्त	आयुष्यमान	२३:२३	व	१७:५८	राक्षस	०६:३७	०५:२३
08	शु	११	२८:०९	हस्त	०७:२३	सौभाग्य	२३:२३	बव	२२:०२	अमृत	०६:३७	०५:२३
09	श	१२	२९:०८	चित्रा	०९:१४	शोभन	२३:०२	कौ	२५:०३	काण	०६:३८	०५:२२
10	र	१३	२९:३६	स्वाती	१०:२९	अतिगण्ड	२२:१९	गर	२६:५१	लुम्बक	०६:३८	०५:२२
11	चं	१४	२९:३२	विशाखा	११:३१	सुकर्मा	२१:१२	भ	२७:२१	मित्र	०६:३८	०५:२२
12	मं	३०	२८:५९	अनुराधा	११:५३	धृति	१९:४०	च	२६:३४	वज्र	०६:३८	०५:२२

धर्मरक्षापञ्चाङ्गम्

श्रीसंवत् २०८० शकः १९४५ याम्यायनं याम्यगोलः हेमन्तर्तुः मार्गशीर्षशुक्लपक्षः / दिनांकः- १३.१२.२०२३ से २६.१२.२०२३ तक/											
दिनांक	वार	तिथ्यान्तः		नक्षत्रान्तः		योगान्तः		करणान्तः		योगः	सू.उ.	सू.अ.
13	बु	१	२७:५८	ज्येष्ठा	११:४७	शूल	१७:४७	किं	२४:३५	ध्वांक्ष	०६:३९	०५:२१
14	गु	२	२६:३३	मूल	११:१५	गण्ड	१५:३३	वा	२१:३२	धूम्र	०६:३९	०५:२१
15	शु	३	२४:४७	पू.षा.	१०:२३	वृद्धि	१३:०२	तै	१७:३३	प्रवर्धमान	०६:३९	०५:२१
16	श	४	२२:४५	उ. षा.	०९:०९	ध्रुव	१०:१५	व	१२:४८	राक्षस	०६:३९	०५:२१
17	र	५	२०:३२	श्रवण धनिष्ठा	०७:४४ ३०:०८	व्याघात हर्षण	०७:१७ २८:१२	बव	०७:३०	गद	०६:३९	०५:२१
18	चं	६	१८:१३	शतभिषा	२८:२८	वज्र	२५:०२	कौ	०१:४९	अमृत	०६:३९	०५:२१
19	मं	७	१५:५१	पू.भा.	२६:४८	सिद्धि	२१:५२	व	२३:००	काण	०६:३९	०५:२१
20	बु	८	१३:३२	उ. भा.	२५:०४	व्यतिपात	१८:४६	बव	१७:१२	लुम्बक	०६:३९	०५:२१
21	गु	९	११:२१	रेवती	२३:५०	वरीयान	१५:४७	कौ	११:४४	मित्र	०६:३९	०५:२१
22	शु	१०	०९:२३	अश्विनी	२२:४१	परिध	१२:५९	गर	०६:४९	वज्र	०६:३९	०५:२१
23	श	११ १२	०७:४१ ३०:२१	भरणी	२१:५३	शिव	१०:२६	भ	०२:२६	ध्वांक्ष	०६:३९	०५:२१
24	र	१३	२९:२५	कृत्तिका	२१:२६	सिद्ध साध्य	०८:०९ ३०:१२	कौ	२८:०५	धूम्र	०६:३९	०५:२१
25	चं	१४	२८:५९	रोहिणी	२१:२५	शुभ	२८:३९	गर	२६:२२	प्रवर्धमान	०६:३९	०५:२१
26	मं	१५	२९:०२	मृगशिरा	२१:५४	शुक्ल	२७:२७	भ	२५:५३	राक्षस	०६:३९	०५:२१

धर्मरक्षापञ्चाङ्गम्

श्रीसंवत् २०८० शक: १९४५ याम्यायनं याम्यगोल: हेमन्तर्त्तु: पौषकृष्णपक्ष: / दिनांक:- २७.१२.२०२३ से ११.०१.२०२४ तक/												
दिनांक	वार	तिथ्यान्त:		नक्षत्रान्त:		योगान्त:		करणान्त:		योग:	सू.उ.	सू.अ.
27	बु	१	२९:३७	आर्द्रा	२२:५४	ब्रह्म	२६:४१	वा	२६:४२	मुसल	०६:३९	०५:२१
28	गु	२	समस्त	पुनर्वसु	२४:२४	ऐन्द्र	२६:१७	तै	२८:४६	सिद्धि	०६:३९	०५:२१
29	शु	२	०६:४१	पुष्य	२६:२०	वैधृति	२६:१४	गर	००:०६	उत्पात	०६:३९	०५:२१
30	श	३	०८:१३	श्लेषा	२८:३७	विष्कुम्भ	२६:३०	भ	०३:५६	मानस	०६:३९	०५:२१
31	र	४	१०:०७	मघा	समस्त	प्रीति	२६:५६	वा	०८:३९	मुद्गर	०६:३९	०५:२१
01	चं	५	१२:१२	मघा	०७:०८	आयुष्यमान	२७:२८	तै	१३:५५	ध्वांक्ष	०६:३८	०५:२२
02	मं	६	१४:२३	पू.फा.	०९:४५	सौभाग्य	२७:५८	व	१९:२२	धूम्र	०६:३८	०५:२२
03	बु	७	१६:२६	उ. फा.	१२:१८	शोभन	२८:१८	बव	२४:२९	प्रवर्धमान	०६:३८	०५:२२
04	गु	८	१८:१३	हस्त	१४:३६	अतिगण्ड	२८:२५	कौ	२८:५७	राक्षस	०६:३८	०५:२२
05	शु	९	१९:३७	चित्रा	१६:३३	सुकर्मा	२८:१०	तै	००:४२	मुसल	०६:३८	०५:२२
06	श	१०	२०:३३	स्वाती	१८:०३	धृति	२७:३५	व	०३:३९	सिद्धि	०६:३७	०५:२३
07	र	११	२०:५९	विशाखा	१९:०४	शूल	२६:३६	बव	०५:२३	उत्पात	०६:३७	०५:२३
08	चं	१२	२०:५३	अनुराधा	१९:३३	गण्ड	२५:१३	कौ	०५:४७	मानस	०६:३७	०५:२३
09	मं	१३	२०:१६	ज्येष्ठा	१९:३४	वृद्धि	२३:२५	गर	०४:५४	मुद्गर	०६:३६	०५:२४
10	बु	१४	१९:१३	मूल	१९:०७	ध्रुव	२१:१८	भ	०२:५१	ध्वज	०६:३६	०५:२४
11	गु	३०	१७:४६	पू.षा.	१८:२०	व्याघात	१८:५३	नाग	२७:५५	धाता	०६:३६	०५:२४

धर्मरक्षापञ्चाङ्गम्

श्रीसंवत् २०८० शक: १९४५ याम्यायनं याम्यगोल: हेमन्तर्त्तु: पौषशुक्लपक्ष: / दिनांक:- १२.०१.२०२४ से २५.०१.२०२४ तक/											
दिनांक	वार	तिथ्यान्त:		नक्षत्रान्त:		योगान्त:		करणान्त:		योग:	सू.उ.	सू.अ.
12	शु	१	१५:५८	उ. षा.	१७:१५	हर्षण	१६:१०	बव	२३:२८	आनन्द	०६:३५	०५:२५
13	श	२	१३:५६	श्रवण	१५:४८	वज्र	१३:१५	कौ	१८:२२	सुस्थिर	०६:३५	०५:२५
14	र	३	११:४२	धनिष्ठा	१४:१५	सिद्धि	१०:१२	गर	१२:४८	मातंग	०६:३५	०५:२५
15	चं	४	०९:२२	शतभिषा	१२:३४	व्यतिपात वरीयान	०७:०३ २७:५२	भ	०६:५९	अमृत	०६:३४	०५:२६
16	मं	५ ६	०७:०० २८:४२	पू.भा.	१०:५४	परिध	२५:४५	वा	०१:०६	काण	०६:३४	०५:२६
17	बु	७	२६:३३	उ. भा.	०९:१८	शिव	२१:४४	गर	२२:३९	लुम्बक	०६:३४	०५:२६
18	गु	८	२४:३५	रेवती	०७:५०	सिद्ध	१८:५०	भ	१७:३१	मित्र	०६:३३	०५:२७
19	शु	९	२२:५६	अश्विनी भरणी	०६:३९ २९:४७	साध्य	१६:१२	वा	१३:०२	वज्र	०६:३३	०५:२७
20	श	१०	२१:३७	कृत्तिका	२९:१३	शुभ	१३:४९	तै	०९:२०	ध्वज	०६:३२	०५:२८
21	र	११	२०:४४	रोहिणी	२९:०५	शुक्ल	११:४७	व	०६:३६	धाता	०६:३२	०५:२८
22	चं	१२	२०:२०	मृगशिरा	२९:२८	ब्रह्म	१०:०४	बव	०५:०१	आनन्द	०६:३१	०५:२९
23	मं	१३	२०:२६	आर्द्रा	३०:२१	ऐन्द्र	०८:५०	कौ	०४:४०	चर	०६:३१	०५:२९
24	बु	१४	२१:०४	पुनर्वसु	समस्त	वैधृति	०७:५१	गर	०५:३७	गद	०६:३०	०५:३०
25	गु	१५	२२:११	पुनर्वसु	०७:४३	विष्कुम्भ	०७:२२	भ	०७:४९	सिद्धि	०६:३०	०५:३०

धर्मरक्षापञ्चाङ्गम्

श्रीसंवत् २०८० शक: १९४५ सौम्यायनं याम्यगोल: शिशिरर्त्तु: माघकृष्णपक्ष: / दिनांक:- २६.०१.२०२४ से ०९.०२.२०२४ तक/												
दिनांक	वार	तिथ्यान्त:		नक्षत्रान्त:		योगान्त:		करणान्त:		योग:	सू.उ.	सू.अ.
26	शु	१	२३:४५	पुष्य	०९:३२	प्रीति	०७:११	वा	११:१२	उत्पात	०६:२९	०५:३१
27	श	२	२५:४०	श्लेषा	११:४६	आयुष्यमान	०७:२२	तै	१५:३४	मानस	०६:२९	०५:३१
28	र	३	२७:४७	मघा	१४:१४	सौभाग्य	०७:४५	व	२०:३७	मुद्गर	०६:२८	०५:३२
29	चं	४	२९:५७	पू.फा.	१६:५२	शोभन	०८:१७	बव	२६:००	ध्वज	०६:२८	०५:३२
30	मं	५	समस्त	उ. फा.	१९:२५	अतिगण्ड	०८:४९	कौ	३१:१६	धाता	०६:२७	०५:३३
31	बु	५	०७:५८	हस्त	२१:४७	सुकर्मा	०९:१४	तै	०३:४९	आनन्द	०६:२६	०५:३४
01	गु	६	०९:४३	चित्रा	२३:५०	धृति	०९:२७	व	०८:१२	चर	०६:२६	०५:३४
02	शु	७	११:०३	स्वाती	२५:२५	शूल	०९:२०	बव	११:३५	गद	०६:२५	०५:३५
03	श	८	११:५८	विशाखा	२६:३३	गण्ड	०८:५४	कौ	१३:५३	शुभ	०६:२५	०५:३५
04	र	९	१२:१९	अनुराधा	२७:१०	वृद्धि	०८:०२	गर	१४:४७	मृत्यु	०६:२४	०५:३६
05	चं	१०	१२:०७	ज्येष्ठा	२७:१७	ध्रुव व्याघात	०६:४७ २९:०९	भ	१४:२१	पद्म	०६:२३	०५:३७
06	मं	११	११:२९	मूल	२६:५८	हर्षण	२७:०९	वा	१२:४४	छत्र	०६:२३	०५:३७
07	बु	१२	१०:२२	पू.षा.	२६:१३	वज्र	२४:४९	तै	१०:००	श्रीवत्स	०६:२२	०५:३८
08	गु	१३	०८:५३	उ. षा.	२५:१०	सिद्धि	२२:१३	व	०६:१७	सौम्य	०६:२२	०५:३८
09	शु	१४ ३०	०७:०३ २८:५८	श्रवण	२३:४९	व्यतिपात	१९:२२	श	०१:४४	धूम्र	०६:२१	०५:३९

धर्मरक्षापञ्चाङ्गम्

श्रीसंवत् २०८० शक: १९४५ सौम्यायनं याम्यगोल: शिशिरर्त्तु: माघशुक्लपक्ष: / दिनांक:- १०.०२.२०२४ से २४.०२.२०२४ तक/												
दिनांक	वार	तिथ्यान्त:		नक्षत्रान्त:		योगान्त:		करणान्त:		योग:	सू.उ.	सू.अ.
10	श	१	२६:४३	धनिष्ठा	२२:१७	वरीयान	१६:२२	किं	२३:४५	प्रवर्धमान	०६:२०	०५:४०
11	र	२	२४:२२	शतभिषा	२०:३९	परिध	१३:१५	वा	१८:०२	राक्षस	०६:२०	०५:४०
12	चं	३	२१:५९	पू.भा.	१६:५८	शिव	१०:०४	तै	१२:०९	मुसल	०६:१९	०५:४१
13	मं	४	१९:४०	उ. भा.	१७:२०	सिद्ध साध्य	०६:५६ २७:५४	व	०६:१८	सिद्धि	०६:१८	०५:४२
14	बु	५	१७:३२	रेवती	१५:५२	शुभ	२५:००	बव	००:४५	उत्पात	०६:१८	०५:४२
15	गु	६	१५:३५	अश्विनी	१४:३५	शुक्ल	२२:१८	तै	२३:१३	मानस	०६:१८	०५:४२
16	शु	७	१३:५७	भरणी	१३:३८	ब्रह्म	१९:५१	व	१९:११	मुद्गर	०६:१७	०५:४३
17	श	८	१२:४०	कृत्तिका	१३:००	ऐन्द्र	१७:४३	बव	१५:५९	ध्वज	०६:१६	०५:४४
18	र	९	११:४८	रोहिणी	१२:४७	वैधृति	१५:५५	कौ	१३:५१	धाता	०६:१६	०५:४४
19	चं	१०	११:२५	मृगशिरा	१३:०३	विष्कुम्भ	१४:३०	गर	१२:५५	आनन्द	०६:१५	०५:४५
20	मं	११	११:३२	आर्द्रा	१३:४८	प्रीति	१३:२९	भ	१३:१६	चर	०६:१४	०५:४६
21	बु	१२	१२:१२	पुनर्वसु	१५:०५	आयुष्यमान	१२:५३	वा	१४:५८	गद	०६:१३	०५:४७
22	गु	१३	१३:१८	पुष्य	१६:४८	सौभाग्य	१२:३७	तै	१७:४६	शुभ	०६:१२	०५:४८
23	शु	१४	१४:५४	श्लेषा	१८:५७	शोभन	१२:४२	व	२१:४७	मृत्यु	०६:११	०५:४९
24	श	१५	१६:४९	मघा	२१:२३	अतिगण्ड	१३:०४	बव	२६:३४	पद्म	०६:११	०५:४९

धर्मरक्षापञ्चाङ्गम्

श्रीसंवत् २०८० शक: १९४५ सौम्यायनं याम्यगोल: शिशिरर्त्तु: फाल्गुनकृष्णपक्ष: / दिनांक:- २५.०२.२०२४ से १०.०३.२०२४ तक/											
दिनांक	वार	तिथ्यान्त:		नक्षत्रान्त:		योगान्त:		करणान्त:		योग:	सू.उ.	सू.अ.
25	र	१	१८:५५	पू.फा.	२३:५९	सुकर्मा	१३:३४	कौ	३१:५२	छत्र	०६:१०	०५:५०
26	चं	२	२१:०३	उ. फा.	२६:३५	धृति	१४:०८	तै	०४:३३	श्रीवत्स	०६:०९	०५:५१
27	मं	३	२३:०३	हस्त	२९:०१	शूल	१४:३८	व	०९:४४	सौम्य	०६:०९	०५:५१
28	बु	४	२४:४५	चित्रा	समस्त	गण्ड	१४:५६	बव	१४:२४	कालदण्ड	०६:०८	०५:५२
29	गु	५	२६:०१	चित्रा	०७:०७	वृद्धि	१४:५८	कौ	१८:०९	चर	०६:०७	०५:५३
01	शु	६	२६:५२	स्वाती	१०:४८	ध्रुव	१४:३७	गर	२०:५१	गद	०६:०६	०५:५४
02	श	७	२७:११	विशाखा	१०:०४	व्याघात	१३:५६	भ	२२:१९	शुभ	०६:०६	०५:५४
03	र	८	२६:५७	अनुराधा	१०:४८	हर्षण	१२:५०	वा	२२:२६	मृत्यु	०६:०५	०५:५५
04	चं	९	२६:१२	ज्येष्ठा	११:०२	वज्र	११:१९	तै	२१:१५	पद्म	०६:०४	०५:५६
05	मं	१०	२५:०३	मूल	१०:४७	सिद्धि	०९:२६	व	१८:५५	छत्र	०६:०३	०५:५७
06	बु	११	२३:३१	पू.षा.	१०:०८	व्यतिपात वरीयान	०७:१३ २८:४५	बव	१५:३५	श्रीवत्स	०६:०३	०५:५७
07	गु	१२	२१:३८	उ. षा.	०९:०९	परिध	२५:५९	कौ	११:२०	सौम्य	०६:०२	०५:५८
08	शु	१३	१९:३०	श्रवण	०७:५१	शिव	२३:०१	गर	०६:२१	धूम्र	०६:०१	०५:५९
09	श	१४	१७:१२	धनिष्ठा शतभिषा	०६:२२ २८:४५	सिद्ध	१९:५७	भ	००:५२	प्रवर्धमान	०६:००	०६:००
10	र	३०	१४:५०	पू.भा.	२७:०४	साध्य	१६:५१	नाग	२२:०४	चर	०६:००	०६:००

धर्मरक्षापञ्चाङ्गम्

श्रीसंवत् २०८० शक: १९४५ सौम्यायनं याम्यगोल: शिशिरर्त्तु: फाल्गुनशुक्लपक्ष: / दिनांक:- ११.०३.२०२४ से २५.०३.२०२४ तक/												
दिनांक	वार	तिथ्यान्त:		नक्षत्रान्त:		योगान्त:		करणान्त:		योग:	सू.उ.	सू.अ.
11	चं	१	१२:२६	उ. भा.	२५:२६	शुभ	१३:४४	बव	१६:०७	गद	०५:५९	०६:०१
12	मं	२	१०:०६	रेवती	२३:५४	शुक्ल	१०:४०	कौ	१०:२०	शुभ	०५:५८	०६:०२
13	बु	३	०७:५६	अश्विनी	२२:३६	ब्रह्म ऐन्द्र	०७:४५ २९:०१	गर	०४:५६	मृत्यु	०५:५८	०६:०२
14	गु	४ ५	०५:५९ २८:२१	भरणी	२१:३३	वैधृति	२६:३१	भ	००:०४	पद्म	०५:५७	०६:०३
15	शु	६	२७:०४	कृत्तिका	२०:५०	विष्कुम्भ	२४:१८	कौ	२४:२५	छत्र	०५:५६	०६:०४
16	श	७	२६:१२	रोहिणी	२०:३२	प्रीति	२२:२४	गर	२१:४७	श्रीवत्स	०५:५५	०६:०५
17	र	८	२५:५०	मृगशिरा	२०:४१	आयुष्यमान	२०:५४	भ	२०:१६	सौम्य	०५:५४	०६:०६
18	चं	९	२५:५८	आर्द्रा	२१:२२	सौभाग्य	१९:४८	वा	२०:००	कालदण्ड	०५:५४	०६:०६
19	मं	१०	२६:३८	पुनर्वसु	२२:३१	शोभन	१९:०६	तै	२१:०२	सुस्थिर	०५:५३	०६:०७
20	बु	११	२७:४४	पुष्य	२४:०८	अतिगण्ड	१८:४६	व	२३:१७	मातंग	०५:५२	०६:०८
21	गु	१२	२९:१७	श्लेषा	२६:१३	सुकर्मा	१८:४७	बव	२६:४०	अमृत	०५:५१	०६:०९
22	शु	१३	समस्त	मघा	२८:३६	धृति	१९:०७	कौ	३१:०१	काण	०५:५१	०६:०९
23	श	१३	०७:११	पू.फा.	समस्त	शूल	१९:३७	तै	०३:२२	लुम्बक	०५:५०	०६:१०
24	र	१४	०९:१६	पू.फा.	०७:१०	गण्ड	२०:१३	व	०८:३७	छत्र	०५:४९	०६:११
25	चं	१५	११:२३	उ. फा.	०९:४८	वृद्धि	२०:४६	बव	१३:५४	श्रीवत्स	०५:४९	०६:११

धर्मरक्षापञ्चाङ्गम्

श्रीसंवत् २०८० शक: १९४५ सौम्यायनं याम्यगोल: वसन्तर्त्तु: चैत्रकृष्णपक्ष: / दिनांक:- २६.०३.२०२४ से ०८.०४.२०२४ तक/													
दिनांक	वार	तिथ्यान्त:		नक्षत्रान्त:		योगान्त:		करणान्त:		योग:	सू.उ.	सू.अ.
26	मं	१	१३:१९	हस्त	१२:१६	ध्रुव	२१:०९	कौ	१८:४७	सौम्य	०५:४८	०६:१२
27	बु	२	१४:५८	चित्रा	१४:२८	व्याघात	२१:१७	गर	२२:५८	कालदण्ड	०५:४७	०६:१३
28	गु	३	१६:११	स्वाती	१६:१६	हर्षण	२१:०४	भ	२६:०२	सुस्थिर	०५:४६	०६:१४
29	शु	४	१७:००	विशाखा	१७:३८	वज्र	२०:३२	वा	२८:०४	मातंग	०५:४६	०६:१४
30	श	५	१७:१४	अनुराधा	१८:२८	सिद्धि	१९:३३	तै	२८:४२	अमृत	०५:४५	०६:१५
31	र	६	१६:५६	ज्येष्ठा	१८:४८	व्यतिपात	१८:१२	व	२८:०१	काण	०५:४४	०६:१६
01	चं	७	१६:१०	मूल	१८:३९	वरीयान	१६:२५	बव	२६:०८	लुम्बक	०५:४३	०६:१७
02	मं	८	१४:५९	पू.षा.	१८:०५	परिघ	१४:२०	कौ	२३:११	मित्र	०५:४३	०६:१७
03	बु	९	१३:२४	उ. षा.	१७:११	शिव	११:५६	गर	१९:१४	वज्र	०५:४२	०६:१८
04	गु	१०	११:२८	श्रवण	१५:५७	सिद्ध	०९:१५	भ	१४:२७	ध्वज	०५:४१	०६:१९
05	शु	११	०९:१८	धनिष्ठा	१४:३०	साध्य शुभ	०६:२३ २७:२३	वा	०९:०४	धाता	०५:४०	०६:२०
06	श	१२ १३	०६:५९ २८:३४	शतभिषा	१२:५४	शुक्ल	२४:१९	तै	०३:१७	आनन्द	०५:४०	०६:२०
07	र	१४	२६:०९	पू.भा.	११:१३	ब्रह्म	२१:११	भ	२४:१५	चर	०५:३९	०६:२१
08	चं	३०	२३:४९	उ. भा.	०९:३४	ऐन्द्र	१८:०७	च	१८:१९	गद	०५:३८	०६:२२

धर्मरक्षापञ्चाङ्गम्

विवाह मुहुर्त

२९.०४.२०२३ शनिवार विवाह

३०.०४.२०२३ रविवार तिलक

०१.०५.२०२३ सोमवार विवाह

०२.०५.२०२३ मंगलवार विवाह

०३.०५.२०२३ बुधवार विवाह विशेष

०५.०५.२०२३ शुक्रवार तिलक

०६.०५.२०२३ शनिवार विवाह

०७.०५.२०२३ रविवार तिलक

०८.०५.२०२३ सोमवार विवाह

०९.०५.२०२३ मंगलवार तिलक

१०.०५.२०२३ बुधवार विवाह

११.०५.२०२३ गुरुवार विवाह विशेष

१२.०५ . २०२३ शुक्रवार विवाह विशेष

१३.०५.२०२३ शनिवार दिवा

१४.०५.२०२३ रविवार तिलक

१५.०५.२०२३ सोमवार विवाह

१७.०५.२०२३ बुधवार विवाह विशेष

२०.०५.२०२३ शनिवार विवाह

२१.०५.२०२३ रविवार विवाह

२६.०५.२०२३ शुक्रवार विवाह

२७.०५.२०२३ शनिवार तिलक

२८.०५.२०२३ रविवार विवाह

२९.०५.२०२३ सोमवार विवाह

३०.०५.२०२३ मंगलवार विवाह

३१.०५.२०२३ बुधवार विवाह विशेष

०१.०६.२०२३ गुरुवार विवाह

०३.०६.२०२३ शनिवार विवाह

०५.०६.२०२३ सोमवार विवाह

०६.०६.२०२३ मंगलवार विवाह

०७.०६.२०२३ बुधवार तिलक/विवाह विशेष

०८.०६.२०२३ गुरुवार विवाह विशेष

०९.०६.२०२३ शुक्रवार तिलक विशेष

१०.०६.२०२३ शनिवार तिलक

११.०६.२०२३ रविवार विवाह

१२.०६.२०२३ सोमवार विवाह

१३.०६.२०२३ मंगलवार तिलक

१५.०६.२०२३ गुरुवार तिलक

२२.०६.२०२३ गुरुवार विवाह

२३.०६.२०२३ शुक्रवार विवाह

२४.०६.२०२३ शनिवार तिलक

२५.०६.२०२३ रविवार विवाह

२७.०६.२०२३ मंगलवार विवाह विशेष

२८.०६.२०२३ बुधवार विवाह

२९.०६.२०२३ गुरुवार

२३.११.२०२३ गुरुवार विवाह

२४.११.२०२३ शुक्रवार दिवा

२६.११.२०२३ रविवार तिलक

२८.११.२०२३ मंगलवार विवाह

२९.११.२०२३ बुधवार दिवा

०३.१२.२०२३ रविवार विवाह

०४.१२.२०२३ सोमवार विवाह/ तिलक विशेष

०५.१२.२०२३ मंगलवार विवाह

०७.१२.२०२३ गुरुवार विवाह

०८.१२.२०२३ शुक्रवार विवाह विशेष

धर्मरक्षापञ्चाङ्गम्

०९.१२.२०२३ शनिवार विवाह

१३.१२.२०२३ बुधवार विवाह

१४.१२.२०२३ गुरुवार तिलक

१५.१२.२०२३ शुक्रवार विवाह

१७.०१.२०२४ बुधवार विवाह

१८.०१.२०२४ गुरुवार विवाह विशेष

२०.०१.२०२४ शनिवार तिलक

२१.०१.२०२४ रविवार विवाह

२२.०१.२०२४ सोमवार विवाह

२७.०१.२०२४ शनिवार विवाह

२८.०१.२०२४ रविवार तिलक

२९.०१.२०२४ सोमवार विवाह

३०.०१.२०२४ मंगलवार विवाह

३१.०१.२०२४ बुधवार विवाह विशेष

०१.०२.२०२४ गुरुवार विवाह

०२.०२.२०२४ शुक्रवार तिलक

०३.०२.२०२४ शनिवार विवाह

०४.०२.२०२४ रविवार तिलक/ विवाह विशेष

०५.०२.२०२४ सोमवार विवाह

०६.०२.२०२४ मंगलवार विवाह

०७.०२.२०२४ बुधवार विवाह

०८.०२.२०२४ गुरुवार तिलक

१२.०२.२०२४ सोमवार विवाह

१३.०२.२९२४ मंगलवार विवाह

१४.०२.२०२४ बुधवार दिवा

१६.०२.२०२४ शुक्रवार तिलक

१७.०२.२०२४ शनिवार विवाह

१८.०२.२०२४ रविवार विवाह

१९.०२.२०२४ सोमवार दिवा

२४.०२.२०२४ शनिवार तिलक

२५.०२.२०२४ रविवार विवाह

२६.०२.२०२४ सोमवार विवाह

२७.०२.२०२४ मंगलवार विवाह

२८.०२.२०२४ बुधवार विवाह विशेष

२९.०२.२०२४ गुरुवार विवाह

०२.०३.२०२४ शनिवार विवाह

०४.०३.२०२४ सोमवार विवाह

०५.०३.२०२४ मंगलवार तिलक

०६.०३.२०२४ बुधवार विवाह

०७.०३.२०२४ गुरुवार विवाह विशेष

०८.०३.२०२४ शुक्रवार विवाह विशेष

११.०३.२०२४ सोमवार विवाह

गृहारम्भ मुहुर्त

२९.०५.२०२३ सोमवार

०२.०६.२०२३ शुक्रवार

२८.०८.२०२३ सोमवार

३१.०८.२०२३ गुरुवार

०२.०९.२०२३ शनिवार

२३.१०.२०२३ सोमवार

२५.१०.२०२३ बुधवार

२६.१०.२०२३ गुरुवार

२२.११.२०२३ बुधवार

२३.११.२०२३ गुरुवार

२४.११.२०२३ शुक्रवार

२९.११.२०२३ बुधवार

१७.०१.२०२४ बुधवार

२२.०१.२०२४ सोमवार

धर्मरक्षापञ्चाङ्गम्

२५.०१.२०२४ गुरुवार

१९.०२.२०२४ सोमवार

२१.०२.२०२४ बुधवार

२२.०२.२०२४ गुरुवार

२६.०२.२०२४ सोमवार

२९.०२.२०२४ गुरुवार

गृहप्रवेश मुहूर्त

०३.०५.२०२३ बुधवार

१५.०५.२०२३ सोमवार

१७.०५.२०२३ बुधवार

२४.०५.२०२३ बुधवार

२५.०५.२०२३ गुरुवार

२९.०५.२०२३ सोमवार

०१.०६.२०२३ गुरुवार

०८.०२.२०२४ गुरुवार

१४.०२.२०२४ बुधवार

१९.०२.२०२४ सोमवार

२१.०२.२०२४ बुधवार

२२.०२.२०२४ गुरुवार

०६.०३.२०२४ बुधवार

०७.०३.२०२४ गुरुवार

०८.०३.२०२४ शुक्रवार

जीर्णादिगृहप्रवेश मुहुर्त

०२.०६.२०२३ शुक्रवार

१३.०७.२०२३ गुरुवार

१४.०७.२०२३ शुक्रवार

२१.०८.२०२३ सोमवार

२८.०८.२०२३ सोमवार

११.११.२०२३ शनिवार

१८.११.२०२३ शनिवार

२२.११.२०२३ बुधवार

२३.११.२०२३ गुरुवार

२४.११.२०२३ शुक्रवार

०७.१२.२०२३ गुरुवार

०८.१२.२०२३ शुक्रवार

०९.१२.२०२३ शनिवार

उपनयन मुहुर्त

२३.०३.२०२३ गुरुवार

२४.०३.२०२३ शुक्रवार

३१.०३.२०२३ शुक्रवार

०७.०५.२०२३ रविवार

१०.०५.२०२३ बुधवार

२१.०५.२०२३ रविवार

२२.०५.२०२३ सोमवार

२४.०५.२०२३ बुधवार

२९.०५.२०२३ सोमवार

३१.०५.२०२३ बुधवार

०५.०६.२०२३ सोमवार

०८.०६.२०२३ गुरुवार

२१.०६.२०२३ बुधवार

१९.०२.२०२४ सोमवार

२१.०२.२०२४ बुधवार

२६.०२.२०२४ सोमवार

१३.०३.२०२४ बुधवार

२०.०३.२०२४ बुधवार

२१.०३.२०२४ गुरुवार

धर्मरक्षापञ्चाङ्गम्

सत्य प्रशंसा

सत्येन रक्ष्यते धर्मो विद्याऽभ्यासेन रक्ष्यते ।

मृज्यया रक्ष्यते रुपं कुलं वृत्तेन रक्ष्यते ॥

धर्म का रक्षण सत्य से, विद्या का अभ्यास से, रुप का सफाई से, और कुल का रक्षण आचरण करने से होता है ।

सत्येन धार्यते पृथ्वी सत्येन तपते रविः ।

सत्येन वायवो वान्ति सर्वं सत्ये प्रतिष्ठितम् ॥

सत्य से पृथ्वी का धारण होता है, सत्य से सूर्य तपता है, सत्य से पवन चलता है । सब सत्य पर आधारित है ।

नास्ति सत्यसमो धर्मो न सत्याद्विद्यते परम् ।

न हि तीव्रतरं किञ्चिदनृतादिह विद्यते ॥

सत्य जैसा अन्य धर्म नहीं । सत्य से पर कुछ नहीं । असत्य से ज्यादा तीव्रतर कुछ नहीं ।

सत्यमेव व्रतं यस्य दया दीनेषु सर्वदा ।

कामक्रोधौ वशे यस्य स साधुः – कथ्यते बुधैः ॥

'केवल सत्य' ऐसा जिसका व्रत है, जो सदा दीन की सेवा करता है, काम-क्रोध जिसके वश में है, उसी को ज्ञानी लोग 'साधु' कहते हैं ।

सत्यमेव जयते नानृतम् सत्येन पन्था विततो देवयानः ।

येनाक्रमत् मनुष्यो हयात्मकामो यत्र तत् सत्यस्य परं निधानं ॥

जय सत्य का होता है, असत्य का नहीं । दैवी मार्ग सत्य से फैला हुआ है । जिस मार्ग पे जाने से मनुष्य आत्मकाम बनता है, वही सत्य का परम् धाम है ।

सत्यं ब्रूयात् प्रियं ब्रूयात् न ब्रूयात् सत्यमप्रियम् ।

नासत्यं च प्रियं ब्रूयात् एष धर्मः सनातनः ॥

सत्य और प्रिय बोलना चाहिए; पर अप्रिय सत्य नहीं बोलना और प्रिय असत्य भी नहीं बोलना यह सनातन धर्म है ।

नानृतात्पातकं किञ्चित् न सत्यात् सुकृतं परम् ।

विवेकात् न परो बन्धुः इति वेदविदो विदुः ॥

वेदों के जानकार कहते हैं कि अनृत (असत्य) के अलावा और कोई पातक नहीं; सत्य के अलावा अन्य कोई सुकृत नहीं और विवेक के अलावा अन्य कोई भाई नहीं ।

अग्निना सिच्यमानोऽपि वृक्षो वृद्धिं न चाप्नुयात् ।

तथा सत्यं विना धर्मः पुष्टिं नायाति कर्हिचित् ॥

अग्नि से सींचे हुए वृक्ष की वृद्धि नहीं होती, जैसे सत्य के बिना धर्म पुष्ट नहीं होता ।

ये वदन्तीह सत्यानि प्राणत्यागेऽप्युपस्थिते ।

धर्मरक्षापञ्चाङ्गम्

प्रमाणभूता भूतानां दुर्गाण्यतितरन्ति ते ॥

प्राणत्याग की परिस्थिति में भी जो सत्य बोलता है, वह प्राणियों में प्रमाणभूत है । वह संकट पार कर जाता है ।

सत्यहीना वृथा पूजा सत्यहीनो वृथा जपः ।

सत्यहीनं तपो व्यर्थमूषरे वपनं यथा ॥

उज्जड जमीन में बीज बोना जैसे व्यर्थ है, वैसे बिना सत्य की पूजा, जप और तप भी व्यर्थ है ।

भूमिः कीर्तिः यशो लक्ष्मीः पुरुषं प्रार्थयन्ति हि ।

सत्यं समनुवर्तन्ते सत्यमेव भजेत् ततः ॥

भूमि, कीर्ति, यश और लक्ष्मी, सत्य का अनुसरण करनेवाले पुरुष की प्रार्थना करते हैं । इस लिए सत्य को हि भजना चाहिए ।

सत्यं स्वर्गस्य सोपानं पारावरस्य नौरिव ।

न पावनतमं किञ्चित् सत्यादभ्यधिकं क्वचित् ॥

समंदर के जहाज की तरह, सत्य स्वर्ग का सोपान है । सत्य से ज़ादा पावनकारी और कुछ नहीं ।

सत्येन पूयते साक्षी धर्मः सत्येन वर्धते ।

तस्मात् सत्यं हि वक्तव्यं सर्ववर्णेषु साक्षिभिः ॥

सत्य वचन से साक्षी पावन बनता है, सत्य से धर्म बढता है । इस लिए सभी वर्णो में, साक्षी ने सत्य हि बोलना चाहिए ।

तस्याग्निर्जलमर्णवः स्थलमरिर्मित्रं सुराः किंकराः

कान्तारं नगरं गिरि गृहमहिर्माल्यं मृगारि मृगः ।

पातालं बिलमस्त्र मुत्पलदलं व्यालः श्रृगालो विषं

पीयुषं विषमं समं च वचनं सत्याञ्चितं वक्ति यः ॥

जो सत्य वचन बोलता है, उसके लिए अग्नि जल बन जाता है, समंदर जमीन, शत्रु मित्र, देव सेवक, जंगल नगर, पर्वत घर, साँप फूलों की माला, सिंह हिरन, पाताल दर, अस्त्र कमल, शेर लोमड़ी, विष अमृत और विषम सम बन जाते हैं ।

विद्या प्रशंसा

नास्ति विद्या समं चक्षु नास्ति सत्य समं तपः।

नास्ति राग समं दुखं नास्ति त्याग समं सुखं॥

विद्या के समान आँख नहीं है, सत्य के समान तपस्या नहीं है, आसक्ति के समान दुःख नहीं है और त्याग के समान सुख नहीं है ।

गुरु शुश्रूषया विद्या पुष्कलेन् धनेन वा।

अथ वा विद्यया विद्या चतुर्थो न उपलभ्यते॥

विद्या गुरु की सेवा से, पर्याप्त धन देने से अथवा विद्या के आदान-प्रदान से प्राप्त होती है। इसके अतिरिक्त विद्या प्राप्त करने का चौथा तरीका नहीं है ।

अर्थातुराणां न सुखं न निद्रा कामातुराणां न भयं न लज्जा ।
विद्यातुराणां न सुखं न निद्रा क्षुधातुराणां न रुचि न बेला ॥

अर्थातुर को सुख और निद्रा नहीं होते, कामातुर को भय और लज्जा नहीं होते । विद्यातुर को सुख व निद्रा, और भूख से पीडित को रुचि या समय का भान नहीं रहता ।

पठतो नास्ति मूर्खत्वं अपनो नास्ति पातकम् ।
मौनिनः कलहो नास्ति न भयं चास्ति जाग्रतः ॥

पढनेवाले को मूर्खत्व नहीं आता; जपनेवाले को पातक नहीं लगता; मौन रहनेवाले का झघडा नहीं होता; और जागृत रहनेवाले को भय नहीं होता ।

विद्याभ्यास स्तपो ज्ञानमिन्द्रियाणां च संयमः ।
अहिंसा गुरुसेवा च निःश्रेयसकरं परम् ॥

विद्याभ्यास, तप, ज्ञान, इंद्रिय-संयम, अहिंसा और गुरुसेवा – ये परम् कल्याणकारक हैं ।

विद्या वितर्को विज्ञानं स्मृतिः तत्परता क्रिया ।
यस्यैते षड्गुणास्तस्य नासाध्यमतिवर्तते ॥

विद्या, तर्कशक्ति, विज्ञान, स्मृतिशक्ति, तत्परता, और कार्यशीलता, ये छे जिसके पास हैं, उसके लिए कुछ भी असाध्य नहीं ।

गीती शीघ्री शिरः कम्पी तथा लिखित पाठकः ।
अनर्थज्ञोऽल्पकण्ठश्च षडेते पाठकाधमाः ॥

गाकर पढना, शीघ्रता से पढना, पढते हुए सिर हिलाना, लिखा हुआ पढ जाना, अर्थ न जानकर पढना, और धीमा आवाज होना ये छे पाठक के दोष हैं ।

सद्विद्या यदि का चिन्ता वराकोदर पूरणे ।
शुकोऽप्यशनमाप्नोति रामरामेति च ब्रुवन् ॥

सद्विद्या हो तो क्षुद्र पेट भरने की चिंता करने का कारण नहीं । तोता भी "राम राम" बोलने से खुराक पा हि लेता है ।

सुखार्थिनः कुतोविद्या नास्ति विद्यार्थिनः सुखम् ।
सुखार्थी वा त्यजेद् विद्यां विद्यार्थी वा त्यजेत् सुखम् ॥

जिसे सुख की अभिलाषा हो (कष्ट उठाना न हो) उसे विद्या कहाँ से ? और विद्यार्थी को सुख कहाँ से ? सुख की ईच्छा रखनेवाले को विद्या की आशा छोडनी चाहिए, और विद्यार्थी को सुख की ।

न चोरहार्यं न च राजहार्यंन भ्रातृभाज्यं न च भारकारी ।
व्यये कृते वर्धते एव नित्यं विद्याधनं सर्वधन प्रधानम् ॥

विद्यारुपी धन को कोई चुरा नहीं सकता, राजा ले नहीं सकता, भाईयों में उसका भाग नहीं होता, उसका भार नहीं लगता, (और) खर्च करने से बढता है । सचमुच, विद्यारुप धन सर्वश्रेष्ठ है ।

नास्ति विद्यासमो बन्धुर्नास्ति विद्यासमः सुहृत् ।

नास्ति विद्यासमं वित्तं नास्ति विद्यासमं सुखम् ॥

विद्या जैसा बंधु नहीं, विद्या जैसा मित्र नहीं, (और) विद्या जैसा अन्य कोई धन या सुख नहीं ।

ज्ञातिभि र्वण्टयते नैव चोरेणापि न नीयते ।

दाने नैव क्षयं याति विद्यारत्नं महाधनम् ॥

यह विद्यारुपी रत्न महान धन है, जिसका वितरण ज्ञातिजनों द्वारा हो नहीं सकता, जिसे चोर ले जा नहीं सकते, और जिसका दान करने से क्षय नहीं होता ।

सर्वद्रव्येषु विद्यैव द्रव्यमाहुरनुत्तमम् ।

अहार्यत्वादनर्ध्यत्वादक्षयत्वाच्च सर्वदा ॥

सब द्रव्यों में विद्यारुपी द्रव्य सर्वोत्तम है, क्यों कि वह किसी से हरा नहीं जा सकता; उसका मूल्य नहीं हो सकता, और उसका कभी नाश नहीं होता ।

विद्या नाम नरस्य रूपमधिकं प्रच्छन्नगुप्तं धनम्

विद्या भोगकरी यशः सुखकरी विद्या गुरूणां गुरुः ।

विद्या बन्धुजनो विदेशगमने विद्या परं दैवतम्

विद्या राजसु पूज्यते न हि धनं विद्याविहीनः पशुः ॥

विद्या इन्सान का विशिष्ट रुप है, गुप्त धन है । वह भोग देनेवाली, यशदात्री, और सुखकारक है । विद्या गुरुओं का गुरु है, विदेश में वह इन्सान की बंधु है । विद्या बडी देवता है; राजाओं में विद्या की पूजा होती है, धन की नहीं । इसलिए विद्याविहीन पशु हि है ।

मातेव रक्षति पितेव हिते नियुंक्ते

कान्तेव चापि रमयत्यपनीय खेदम् ।

लक्ष्मीं तनोति वितनोति च दिक्षु कीर्तिम्

किं किं न साधयति कल्पलतेव विद्या ॥

विद्या माता की तरह रक्षण करती है, पिता की तरह हित करती है, पत्नी की तरह थकान दूर करके मन को रीझाती है, शोभा प्राप्त कराती है, और चारों दिशाओं में कीर्ति फैलाती है । सचमुच, कल्पवृक्ष की तरह यह विद्या क्या-क्या सिद्ध नहीं करती ?

विद्याविनयोपेतो हरति न चेतांसि कस्य मनुजस्य।

कांचनमणिसंयोगो नो जनयति कस्य लोचनानन्दम् ॥

विद्यावान और विनयी पुरुष किस मनुष्य का चित्त हरण नहीं करता ? सुवर्ण और मणि का संयोग किसकी आँखों को सुख नहीं देता ?

धर्मरक्षापञ्चाङ्गम्

हर्तृ र्न गोचरं याति दत्ता भवति विस्तृता ।

कल्पान्तेऽपि न या नश्येत् किमन्यद्विद्यया विना ॥

जो चोरों के नजर पडती नहीं, देने से जिसका विस्तार होता है, प्रलय काल में भी जिसका विनाश नहीं होता, वह विद्या के अलावा अन्य कौन सा द्रव्य हो सकता है ?

द्यूतं पुस्तकवाद्ये च नाटकेषु च सक्तिता ।

स्त्रियस्तन्द्रा च निन्द्रा च विद्याविघ्नकराणि षट् ॥

जुआ, वाद्य, नाट्य (कथा/फिल्म) में आसक्ति, स्त्री (या पुरुष), तंद्रा, और निंद्रा – ये छे विद्या में विघ्नरुप होते हैं ।

अलसस्य कुतो विद्या अविद्यस्य कुतो धनम् ।

अधनस्य कुतो मित्रममित्रस्य कुतः सुखम् ॥

आलसी इन्सान को विद्या कहाँ ? विद्याविहीन को धन कहाँ ? धनविहीन को मित्र कहाँ ? और मित्रविहीन को सुख कहाँ ?

रूपयौवनसंपन्ना विशाल कुलसम्भवाः ।

विद्याहीना न शोभन्ते निर्गन्धा इव किंशुकाः ॥

रुपसंपन्न, यौवनसंपन्न, और चाहे विशाल कुल में पैदा क्यों न हुए हों, पर जो विद्याहीन हों, तो वे सुगंधरहित केसुडे के फूल की भाँति शोभा नहीं देते ।

विद्याभ्यास स्तपो ज्ञानमिन्द्रियाणां च संयमः ।

अहिंसा गुरुसेवा च निःश्रेयसकरं परम् ॥

विद्याभ्यास, तप, ज्ञान, इंद्रिय-संयम, अहिंसा और गुरुसेवा – ये परम् कल्याणकारक हैं ।

विद्या ददाति विनयं विनयाद् याति पात्रताम्।

पात्रत्वाद्धनमाप्नोति धनाद्धर्मं ततः सुखम्॥

विद्या से विनय (नम्रता) आती है, विनय से पात्रता (सजनता) आती है पात्रता से धन की प्राप्ति होती है, धन से धर्म और धर्म से सुख की प्राप्ति होती है ।

दानानां च समस्तानां चत्वार्येतानि भूतले ।

श्रेष्ठानि कन्यागोभूमिविद्या दानानि सर्वदा ॥

सब दानों में कन्यादान, गोदान, भूमिदान, और विद्यादान सर्वश्रेष्ठ है ।

क्षणशः कणशश्चैव विद्यामर्थं च साधयेत् ।

क्षणे नष्टे कुतो विद्या कणे नष्टे कुतो धनम् ॥

एक एक क्षण गवाये बिना विद्या प्राप्त करना चाहिए; और एक एक कण बचा करके धन ईकट्ठा करना चाहिए । क्षण गवानेवाले को विद्या कहाँ, और कण को क्षुद्र समझनेवाले को धन कहाँ ?

विद्या नाम नरस्य कीर्तिरतुला भाग्यक्षये चाश्रयो

धेनुः कामदुधा रतिश्च विरहे नेत्रं तृतीयं च सा ।

सत्कारायतनं कुलस्य महिमा रत्नैर्विना भूषणम्

तस्मादन्यमुपेक्ष्य सर्वविषयं विद्याधिकारं कुरु ॥

विद्या अनुपम कीर्ति है; भाग्य का नाश होने पर वह आश्रय देती है, कामधेनु है, विरह में रति समान है, तीसरा नेत्र है, सत्कार का मंदिर है, कुल-महिमा है, बगैर रत्न का आभूषण है; इस लिए अन्य सब विषयों को छोडकर विद्या का अधिकारी बन ।

व्यायाम प्रशंसा

व्यायामात् लभते स्वास्थ्यं दीर्घायुष्यं बलं सुखं।

आरोग्यं परमं भाग्यं स्वास्थ्यं सर्वार्थसाधनम् ॥

व्यायाम से स्वास्थ्य, लम्बी आयु, बल और सुख की प्राप्ति होती है। निरोगी होना परम भाग्य है और स्वास्थ्य से अन्य सभी कार्य सिद्ध होते हैं ।

व्यायामं कुर्वतो नित्यं विरुद्धमपि भोजनम् ।

विदग्धमविदग्धं वा निर्दोषं परिपच्यते ॥

व्यायाम करने वाला मनुष्य गरिष्ठ, जला हुआ अथवा कच्चा किसी प्रकार का भी खराब भोजन क्यों न हो, चाहे उसकी प्रकृति के भी विरुद्ध हो, भलीभांति पचा जाता है और कुछ भी हानि नहीं पहुंचाता ।

शरीरोपचयः कान्तिर्गात्राणां सुविभक्तता ।

दीप्ताग्नित्वमनालस्यं स्थिरत्वं लाघवं मृजा ॥

व्यायाम से शरीर बढ़ता है । शरीर की कान्ति वा सुन्दरता बढ़ती है । शरीर के सब अंग सुड़ौल होते हैं । पाचनशक्ति बढ़ती है । आलस्य दूर भागता है । शरीर दृढ़ और हल्का होकर स्फूर्ति आती है । तीनों दोषों की (मृजा) शुद्धि होती है।

न चैनं सहसाक्रम्य जरा समधिरोहति ।

स्थिरीभवति मांसं च व्यायामाभिरतस्य च ॥

व्यायामी मनुष्य पर बुढ़ापा सहसा आक्रमण नहीं करता, व्यायामी पुरुष का शरीर और हाड़ मांस सब स्थिर होते हैं ।

श्रमक्लमपिपासोष्णशीतादीनां सहिष्णुता ।

आरोग्यं चापि परमं व्यायामदुपजायते ॥

श्रम थकावट ग्लानि (दुःख) प्यास शीत (जाड़ा) उष्णता (गर्मी) आदि सहने की शक्ति व्यायाम से ही आती है और परम आरोग्य अर्थात् स्वास्थ्य की प्राप्ति भी व्यायाम से ही होती है ।

न चास्ति सदृशं तेन किंचित्स्थौल्यापकर्षणम् ।

न च व्यायामिनं मर्त्यमर्दयन्त्यरयो भयात् ॥

अधिक स्थूलता को दूर करने के लिए व्यायाम से बढ़कर कोई और औषधि नहीं है, व्यायामी मनुष्य से उसके शत्रु सर्वदा डरते हैं और उसे दुःख नहीं देते ।

समदोषः समाग्निश्च समधातुमलक्रियः ।

प्रसन्नात्मेन्द्रियमनाः स्वस्थ इत्यभिधीयते ॥

जिस मनुष्य के दोष वात, पित्त और कफ, अग्नि (जठराग्नि), रसादि सात धातु, सम अवस्था में तथा स्थिर रहते हैं, मल मूत्रादि की क्रिया ठीक होती है और शरीर की सब क्रियायें समान और उचित हैं, और जिसके मन इन्द्रिय और आत्मा प्रसन्न रहें वह मनुष्य स्वस्थ है ।

परोपकार प्रशंसा

परोपकाराय फलन्ति वृक्षाः परोपकाराय वहन्ति नद्यः ।

परोपकाराय दुहन्ति गावः परोपकारार्थ मिदं शरीरम् ॥

परोपकार के लिए वृक्ष फल देते हैं, नदीयाँ परोपकार के लिए ही बहती हैं और गाय परोपकार के लिए दूध देती हैं अर्थात् यह शरीर भी परोपकार के लिए ही है ।

रविश्चन्द्रो घना वृक्षा नदी गावश्च सज्जनाः ।

एते परोपकाराय युगे दैवेन निर्मिता ॥

सूर्य, चन्द्र, बादल, नदी, गाय और सज्जन - ये हरेक युग में ब्रहमा ने परोपकार के लिए निर्माण किये हैं ।

परोपकारशून्यस्य धिक् मनुष्यस्य जीवितम् ।

जीवन्तु पशवो येषां चर्माप्युपकरिष्यति ॥

परोपकार रहित मानव के जीवन को धिक्कार है । वे पशु धन्य है, मरने के बाद जिनका चमडा भी उपयोग में आता है ।

आत्मार्थं जीवलोकेऽस्मिन् को न जीवति मानवः ।

परं परोपकारार्थं यो जीवति स जीवति ॥

इस जीवलोक में स्वयं के लिए कौन नहीं जीता ? परंतु, जो परोपकार के लिए जीता है, वही सच्चा जीना है ।

परोपकृति कैवल्ये तोलयित्वा जनार्दनः ।

गुर्वीमुपकृतिं मत्वा ह्यवतारान् दशाग्रहीत् ॥

विष्णु भगवान ने परोपकार और मोक्षपद दोनों को तोलकर देखे, तो उपकार का पल्लु ज्यादा झुका हुआ दिखा; इसलिए परोपकारार्थ उन्हों ने दस अवतार लिये ।

श्लोकार्धेन प्रवक्ष्यामि यदुक्तं ग्रन्थकोटिभिः ।

परोपकारः पुण्याय पापाय परपीडनम् ॥

जो करोडो ग्रंथों में कहा है, वह मैं आधे श्लोक में कहता हूँ; परोपकार पुण्यकारक है, और दूसरे को पीडा देना पापकारक है ।

भवन्ति नम्रस्तरवः फलोद्गमैः नवाम्बुभिर्दूरविलम्बिनो घनाः ।

अनुद्धताः सत्पुरुषाः समृद्धिभिः स्वभाव एवैष परोपकारिणाम् ॥

वृक्षों पर फल आने से वे झुकते हैं (नम्र बनते हैं); पानी में भरे बादल आकाश में नीचे आते हैं; अच्छे लोग समृद्धि से गर्विष्ठ नहीं बनते, परोपकारियों का यह स्वभाव हि होता है ।

राहिणि नलिनीलक्ष्मी दिवसो निदधाति दिनकराप्रभवाम् ।

धर्मरक्षापञ्चाङ्गम्

अनपेक्षितगुणदोषः परोपकारः सतां व्यसनम् ॥

दिन में जिसे अनुराग है वैसे कमल को, दिन सूर्य से पैदा हुई शोभा देता है । अर्थात् परोपकार करना तो सज्जनों का व्यसन-आदत है, उन्हें गुण-दोष की परवा नहीं होती ।

पिबन्ति नद्यः स्वयमेव नाम्भः स्वयं न खादन्ति फलानि वृक्षाः ।

नादन्ति सस्यं खलु वारिवाहाः परोपकाराय सतां विभूतयः ॥

नदियाँ अपना पानी खुद नहीं पीती, वृक्ष अपने फल खुद नहीं खाते, बादल खुद ने उगाया हुआ अनाज खुद नहीं खाते । सत्पुरुषों का जीवन परोपकार के लिए हि होता है ।

धर्म प्रशंसा



श्रूयतां धर्म सर्वस्वं श्रुत्वा चैव अनुवर्त्यताम्।

आत्मनः प्रतिकूलानि, परेषां न समाचरेत् ॥

धर्म का सर्वस्व क्या है, सुनो और सुनकर उस पर चलो ! अपने को जो अच्छा न लगे, वैसा आचरण दूसरे के साथ नही करना चाहिये।

धर्म एव हतो हन्ति धर्मो रक्षति रक्षितः।

तस्माद्धर्मो न हन्तव्यो मा नो धर्मो हतोऽवधीत् ॥

मरा हुआ धर्म मारने वाले का नाश, और रक्षित धर्म रक्षक की रक्षा करता है। इसलिए धर्म का हनन कभी न करना, इस डर से कि मारा हुआ धर्म कभी हमको न मार डाले।

सुखार्थं सर्वभूतानां मताः सर्वाः प्रवृत्तयः ।

सुखं नास्ति विना धर्मं तस्मात् धर्मपरो भव ॥

सब प्राणियों की प्रवृत्ति सुख के लिए होती है, (और) बिना धर्म के सुख मिलता नही । इस लिए, तू धर्मपरायण बन ।

स जीवति गुणा यस्य धर्मो यस्य जीवति ।

गुणधर्मविहीनो यो निष्फलं तस्य जीवितम् ॥

जो गुणवान है, धार्मिक है वही जीते हैं (या “जीये” कहे जाते हैं) । जो गुण और धर्म से रहित है उसका जीवन निष्फल है ।

धर्मरक्षापञ्चाङ्गम्

अथाहिंसा क्षमा सत्यं ह्रीश्रद्धेन्द्रिय संयमाः ।

दानमिज्या तपो ध्यानं दशकं धर्म साधनम् ॥

अहिंसा, क्षमा, सत्य, लज्जा, श्रद्धा, इंद्रियसंयम, दान, यज्ञ, तप और ध्यान – ये दस धर्म के साधन है ।

धर्मः कल्पतरुः मणिः विषहरः रत्नं च चिन्तामणिः

धर्मः कामदुधा सदा सुखकरी संजीवनी चौषधीः ।

धर्मः कामघटः च कल्पलतिका विद्याकलानां खनिः

प्रेम्णैनं परमेण पालय हृदा नो चेत् वृथा जीवनम् ॥

धर्म कल्पतरु, विषहर मणि, चिंतामणि रत्न है । धर्म सदा सुख देनेवाली कामधेनु है, और संजीवनी औषधि है । धर्म कामघट, कल्पलता, विद्या और कला का खजाना है । इस लिए, तूं उस धर्म का प्रेम और आनंद से पालन कर, वर्ना तेरा जीवन व्यर्थ है ।

अध्रुवेण शरीरेण प्रतिक्षण विनाशिना ।

ध्रुवं यो नार्जयेत् धर्मं स शोच्यः मूढचेतनः ॥

प्रतिक्षण नष्ट होनेवाले, अनिश्चित शरीर के मुकाबले, निश्चित ऐसे धर्म को जो प्राप्त नहीं करता, वह मूर्ख शोक करने योग्य है ।

पूर्वे वयसि तत्कुर्याधेन वृद्धः सुखं वसेत् ।

यावज्जीवेन तत्कुर्याद्येनामुत्रसुखं वसेत् ॥

यौवन में ऐसा करना चाहिए जिससे बुढ़ापा सुख से कटे। यह जीवन ऐसे जीना जिससे परलोक (या दूसरे जन्म) में चैन मिले ।

अस्थिरं जीवितं लोके ह्यस्थिरे धनयौवने ।

अस्थिराः पुत्रदाराश्च धर्मः कीर्ति द्वयं स्थिरम् ॥

इस जगत में धन, जीवन, यौवन अस्थिर हैं; पुत्र और स्त्री भी अस्थिर हैं । केवल धर्म और कीर्ति (ये दो हि) स्थिर है ।

उत्थायोत्थाय बोद्धव्यं किमद्य सुकृतं कृतम् ।

आयुषः खण्डमादाय रविरस्तं गमिष्यति ॥

रोज उठकर “आज क्या सुकृत्य किया” यह जान लेना चाहिए, क्यों कि सूर्य (हररोज) आयुष्य का छोटा तुकडा लेकर अस्त होता है ।

अजरामरवत्प्राज्ञो विद्यामर्थं च चिन्तयेत् ।

गृहीत इव केशेषु मृत्युना धर्ममाचरेत् ॥

बूढापा और मृत्यु नहीं आयेंगे ऐसा समजकर विद्या और धन का चिंतन करना चाहिए । पर मृत्यु ने हमें बाल से जकड रखा है, ऐसा समजकर धर्म का आचरण करना चाहिए ।

जीवन्तं मृतवन्मन्ये देहिनं धर्मवर्जितम् ।

धर्मरक्षापञ्चाङ्गम्

मृतो धर्मेण संयुक्तो दीर्घजीवी न संशयः ॥

धर्महीन मनुष्य को जिंदा होने के बावजुद मैं मृत समजता हूँ । धर्मयुक्त इन्सान मर कर भी दीर्घायु(नाम अमर) रहता है, उस में संदेह नहीं ।

अनित्यानि शरीराणि विभवो नैव शाश्वतः ।

नित्य संनिहितो मृत्युः कर्तव्यो धर्मसङ्ग्रहः ॥

शरीर अनित्य है; धन भी नित्य नहीं(हमेशा रहने वाला नहीं) है; और मृत्यु निश्चित है, इस लिए धर्मसंग्रह करना चाहिए ।

सकलापि कला कलावतां विकला धर्मकलां विना खलु ।

सकले नयने वृथा यथा तनुभाजां कनीनिकां विना ॥

जैसे इन्सान की आँखें कीकी के बिना निस्तेज है, वैसे हि धर्म की कला के बिना सभी कला व्यर्थ है ।

मृतं शरीरमुत्सृज्य काष्ठलोष्ठसमं क्षितौ ।

विमुखा बान्धवा यान्ति धर्मस्तमनुगच्छति ॥

मृत शरीर को छोड़कर जैसे लकड़ी के टुकड़े चले जाते हैं, वैसे संबंधी भी मुँह फेरकर चले जाते हैं । केवल धर्म ही मनुष्य के पीछे जाता है ।

आहार निद्रा भय मैथुनं च सामान्यमेतत् पशुभिर्नराणाम् ।

धर्मो हि तेषामधिको विशेषः धर्मेण हीनाः पशुभिः समानाः ॥

आहार, निद्रा, भय और मैथुन – ये तो इन्सान और पशु में समान है । इन्सान में विशेष केवल धर्म है, अर्थात् बिना धर्म के लोग पशुतुल्य है ।

धर्मस्य फलमिच्छन्ति धर्मं नेच्छन्ति मानवाः ।

फलं पापस्य नेच्छन्ति पापं कुर्वन्ति सादराः ॥

लोगों को धर्म का फल चाहिए, पर धर्म का आचरण नहि ! और पाप का फल नहि चाहिए, पर गर्व से पापाचरण करते हैं।

सत्येनोत्पद्यते धर्मो दयादानेन वर्धते ।

क्षमायां स्थाप्यते धर्मो क्रोधलोभा द्विनश्यति ॥

धर्म सत्य से उत्पन्न होता है, दया और दान से बढता है, क्षमा से स्थिर होता है, और क्रोध एवं लोभ से नष्ट होता है ।

धर्मो मातेव पुष्णाति धर्मः पाति पितेव च ।

धर्मः सखेव प्रीणाति धर्मः स्निह्यति बन्धुवत् ॥

धर्म माता की तरह हमें पुष्ट करता है, पिता की तरह हमारा रक्षण करता है, मित्र की तरह खुशी देता है, और सम्बन्धियों की भाँति स्नेह देता है ।

अन्यस्थाने कृतं पापं धर्मस्थाने विमुच्यते ।

धर्मस्थाने कृतं पापं वज्रलेपो भविष्यति ॥

धर्मरक्षापञ्चाङ्गम्

अन्य जगहों पे किये हुए पापों से धर्मस्थान में मुक्ति मिलती है, पर धर्मस्थान में किया हुआ पाप वज्रलेप बनता है ।

धृतिः क्षमा दमोऽस्तेयं शौच मिन्द्रियनिग्रहः ।

धी र्विद्या सत्यमक्रोधो दशकं धर्म लक्षणम् ॥

धारणा शक्ति, क्षमा, दम, अस्तेय (चोरी न करना), शौच, इन्द्रियनिग्रह, बुद्धि, विद्या, सत्य, अक्रोध – ये दस धर्म के लक्षण हैं ।

दान प्रशंसा

सङ्ग्रहैकपरः प्राप समुद्रोऽपि रसातलम् ।

दाता तु जलदः पश्य भुवनोपरि गर्जति ॥

देखो, संग्रह में मग्न रहने वाला समंदर रसातल को चला गया, (किंतु) देने वाला बादल पृथ्वी पर आज भी गरजता है ।

कदर्योपात्त वित्तानां भोगो भाग्यवतां भवेत् ।

दन्ता दलति कष्टेन जिह्वा गिलति लीलया ॥

कंजूस ने अर्जित किया हुए धन का उपभोग भाग्यशाली को प्राप्त होता है, जिस प्रकार दांत कष्ट सह कर जो (खुराक) चबाता है, उसे जबान आसानी से निगल जाती है ।

रक्षन्ति कृपणाः पाणौ द्रव्यं प्राणमिवात्मनः ।

तदेव सन्तः सततमुत्सृजन्ति यथा मलम् ॥

कृपण (लोभी व्यक्ति) प्राण की तरह द्रव्य(धन)का अपने हाथ में रक्षण करता है, पर संत पुरुष उसी द्रव्य को मल की तरह त्याग देते है ।

दाता नीचोऽपि सेव्यः स्यान्निष्फलो न महानपि ।

जलार्थी वारिधि त्यक्त्वा पश्य कूपं निषेवते ॥

दाता छोटा हो तो भी उसका आश्रय लेना, पर जो फलरहित है, वह बडा हो(अर्थवान्), फिर भी उसका आश्रय नहि लेना । देखो ! प्यासा, सागर का त्याग करके कुँए के पास ही जाता है ।

अहो एषां वरं जन्म सर्व प्राण्युपजीवनम् ।

धन्या महीरुहा येभ्यो निराशां यान्ति नार्थिनः ॥

सब प्राणियों पर उपकार करनेवाले इन (वृक्षों) का जन्म श्रेष्ठ है, वृक्षों को धन्य है कि जिनसे याचक निराश नहीं होते ।

धिग् धिग् दानम सत्कारं पौरुषं धिक्कलङ्कितम् ।

जीवितं मानहीनं धिग् धिक्कन्यां बहुभाषिणीम् ॥

बिना सत्कार के दान को धिक्कार है; कलंकित पौरुष को धिक्कार है; मानरहित जीवन को धिक्कार है, और बहुत बोलने वाली स्त्री को भी धिक्कार है ।

गर्जित्वा बहुदूरमुन्नति-भृतो मुञ्चन्ति मेघा जलम्

भद्रस्यापि गजस्य दानसमये सञ्जायतेऽन्तर्मदः ।

पुष्पाडम्बर यापनेन ददति प्रायः फलानि द्रुमाः

नो छेको नो मदो न कालहरणं दान प्रवृतौ सताम् ॥

उन्नत बादल, दूर से गर्जना करके पानी देते हैं, भद्र हाथी में भी दान के समय (गण्डस्थल में रस उत्पन्न होते वक्त) मद उत्पन्न होता है, वृक्ष भी पुष्पों का आडंबर दूर करके फल देते हैं; अर्थात् दानप्रवृत्त होने में सज्जनों को दंभ, घमंड या कालहरण नहीं होते ।

उत्तमोऽप्रार्थितो दत्ते मध्यमः प्रार्थितः पुनः ।

याचकै र्याच्यमानोऽपि दत्ते न त्वधमाधमः ॥

उत्तम (मनुष्य) मांगे बगैर देता है, मध्यम मागने के बाद देता है; पर, अधम में अधम तो याचकों के मागने पर भी नहीं देता ।

शतेषु जायते शूरः सहस्त्रेषु च पण्डितः ।

वक्ता दशसहस्त्रेषु दाता भवति वा न वा ॥

शूर सौ में एक, पण्डित हजार में एक और वक्ता दस हजार में एक हो सकता है; पर दाता तो कोई मुश्किल से ही मिलता है ।

देयं भो ह्यधने धनं सुकृतिभिः नो सञ्चितं सर्वदा

श्रीकर्णस्य बलेश्च विक्रमपते रद्यापि कीर्तिः स्थिता ।

आश्चर्यं मधु दानभोगरहितं नष्टं चिरात् सञ्चितम्

निर्वेदादिति पाणिपादयुगलं घर्षन्त्यहो मक्षिकाः ॥

निर्धन को धन देना चाहिए क्यों कि सत्पुरुषों ने कदापि उसका संचय नहीं किया, (देखो) श्री कर्ण, बलि और विक्रम की कीर्ति आज तक स्थिर रही है । (दूसरी ओर) आश्चर्य है कि मधुमक्खियों ने मधु का दीर्घकाल तक केवल संचय ही किया, न तो उसका दान किया और न उपभोग !

सुक्षेत्रे वापयेद्बीजं सुपात्रे निक्षिपेत् धनम् ।

सुक्षेत्रे च सुपात्रे च ह्युप्तं दत्तं न नश्यति ॥

अच्छे खेत में बीज बोना चाहिए, सुपात्र को धन देना चाहिए । अच्छे खेत में बोया हुआ और सुपात्र को दिया हुआ, कभी नष्ट नहीं होता ।

अल्पमपि क्षितौ क्षिप्तं वटबीजं प्रवर्धते ।

जलयोगात् यथा दानात् पुण्यवृक्षोऽपि वर्धते ॥

जमीन पर डाला हुआ छोटा सा वटवृक्ष का बीज, जैसे जल के योग से बढता है, वैसे पुण्यवृक्ष भी दान से बढता है ।

सार्थः प्रवसतो मित्रं भार्या मित्रं गृहे सतः ।

आतुरस्य भिषग् मित्रं दानं मित्रं मरिष्यतः ॥

समूह प्रवासी का मित्र है, पत्नी गृह में रहने वाले की मित्र है, वैद्य रोगी का और दान मरते हुए मनुष्य का (या मर्त्य मनुष्य का) मित्र है ।

हस्तस्य भूषणं दानं सत्यं कण्ठस्य भूषणम् ।

श्रोत्रस्य भूषणं शास्त्रं भूषणैः किं प्रयोजनम् ॥

हाथ का भूषण दान है, कण्ठ का भूषण सत्य, और कान का भूषण शास्त्र है, तो फिर अन्य आभूषणों की क्या आवश्यकता है ?

न्यायागतेन द्रव्येण कर्तव्यं पारलौकिकम् ।

दानं हि विधिना देयं काले पात्रे गुणान्विते ॥

न्यायपूर्ण मिले हुए धन से, पारलौकिक कर्तव्य करना चाहिए । दान विधिपूर्वक, गुणवान मनुष्य को, सही समयपर देना चाहिए ।

मातापित्रो र्गुरौ मित्रे विनीते चोपकारिणि ।

दीनानाथ विशिष्टेषु दत्तं तत्सफलं भवेत् ॥

माता-पिता को, गुरु को, मित्र को, संस्कारी लोगों को, उपकार करने वाले को और खासकर दीन-अनाथ को (या ईश्वर को) जो दिया जाता है, वह सफल होता है ।

न रणे विजयात् शूरोऽध्ययनात् न च पण्डितः

न वक्ता वाक्पटुत्वेन न दाता चार्थ दानतः ।

इन्द्रियाणां जये शूरो धर्मं चरति पण्डितः

हित प्रायोक्तिभिः वक्ता दाता सन्मान दानतः ॥

व्यक्ति रणमैदान में विजय प्राप्त करने से नहीं, बल्कि इंद्रियविजय से शूर कहलाता है; अध्ययन से नहीं, बल्कि धर्माचरण से पण्डित कहलाता है; वाक्चातुर्य से नहीं, पर हितकारक वाणी से वक्ता कहलाता है; और (केवल) धन देने से नहीं, बल्कि सम्मान देने से (सम्मानपूर्वक देने से) दाता बनता है ।

दानं ख्यातिकरं सदा हितकरं संसार सौख्याकरं

नृणां प्रीतिकरं गुणाकरकरं लक्ष्मीकरं किङ्करम् ।

स्वर्गावासकरं गतिक्षयकरं निर्वाणसम्पत्करम्

वर्णायु र्बलबुद्धि वर्ध्दनकरं दानं प्रदेयं बुधैः ॥

दान ख्याति बढाने वाला, सदा हित करने वाला, संसार सुखी करने वाला, प्रीतिकर, गुणों का लाने वाला, लक्ष्मीदायक, सेवकरुप, स्वर्गदाता, गति क्षय करने वाला, मोक्षरुप संपत्त देने वाला, आयुष्य, बल और बुद्धिदाता है । (इस लिए) बुद्धिमान् लोगों को दान करना चाहिए ।

देयं भेषजमार्तस्य परिश्रान्तस्य चासनम् ।

तृषितस्य च पानीयं क्षुधितस्य च भोजनम् ॥

पीडित को औषध, थके हुए को आसन, प्यासे को पानी और भूखे को भोजन देना चाहिए ।

गोदुग्धं वाटिकापुष्पं विद्या कूपोदकं धनम् ।

दानाद्विवर्धते नित्यमदानाच्च विनश्यति ॥

दान करने से (हर प्रकार की समृद्धि जैसे..) गाय का दूध, बाग के फूल, विद्या, कुँए का पानी और धन (इत्यादि) नित्य बढते रहते हैं, पर आदान से ये सब नष्ट होते हैं ।

अभिगम्योत्तमं दानमाहूतं चैव मध्यमम् ।

अधमं याच्यमानं स्यात् सेवादानं तु निष्फलम् ॥

खुद उठकर दिया हुआ दान उत्तम है; बुलाकर दिया हुआ दान मध्यम है; याचना के पश्चात् दिया हुआ दान अधम है; और सेवा के बदले में दिया हुआ दान निष्फल है (अर्थात् वह दान नहीं, व्यवहार है) ।

पात्रेभ्यः दीयते नित्यमनपेक्ष्य प्रयोजनम् ।

केवलं त्यागबुध्दया यद् धर्मदानं तदुच्यते ॥

किसी प्रकार के प्रयोजन बिना, जो केवल त्यागबुद्धि से दिया जाता है, वही धर्मदान कहलाता है ।

अपात्रेभ्यः तु दत्तानि दानानि सुबहून्यपि ।

वृथा भवन्ति राजेन्द्र भस्मन्याज्याहुति र्यथा ॥

हे राजेन्द्र ! जैसे (यज्ञकुंड में बची) भस्म पर घी की आहुति देना निरर्थक है, वैसे ही अपात्र को दिया हुआ बहुत सारा दान व्यर्थ है ।

भवन्ति नरकाः पापात् पापं दारिद्य सम्भवम् ।

दारिद्यमप्रदानेन तस्मात् दानपरो भव ॥

पाप से नरक उत्पन्न होता है; पाप दारिद्य में से, और दारिद्य अप्रदान में से निर्माण होता है । अर्थात् तू दान के लिए तत्पर बन ।

दानेन प्राप्यते स्वर्गो दानेन सुखमश्नुते ।

इहामुत्र च दानेन पूज्यो भवति मानवः ॥

दान से स्वर्ग प्राप्त होता है, दान से ही सुख मिलता है । इस लोक और परलोक में इन्सान दान से ही पूज्य बनता है ।

दातव्यं भोक्तव्यं सति विभवे सञ्चयो न कर्तव्यः ।

पश्येह मधुकरीणां सञ्चितमर्थं हरन्त्यन्ये ॥

जब धन हो तब दान करना चाहिए और उपभोग करना चाहिए न कि उसका संचय करना । देखो ! मधुमक्खी ने इकट्ठा किया हुआ धन दूसरा ले जाता है ।

दानेन भूतानि वशी भवन्ति दानेन वैराण्यपि यान्ति नाशम् ।

परोऽपि बन्धुत्वभुपैति दानैर् दानं हि सर्वव्यसनानि हन्ति ॥

दान से सभी प्राणी वश होते है; दान से बैर खत्म हो जाता है । #दान से शत्रु भी भाई बन जाता है; दान से ही सभी संकट दूर होते हैं ।

बोधयन्ति न याचन्ते भिक्षाद्वारा गृहे गृहे ।

दीयतां दीयतां नित्यमदातुः फलमीदृशम् ॥

धर्मरक्षापञ्चाङ्गम्

घर-घर जानेवाले याचक, भिक्षा नहीं मांग रहे बल्कि यह उपदेश दे रहे हैं कि नित्य दान देते रहो, (अन्यथा) अदातृत्व का परिणाम हम को देख लो !

अनुकूले विधौ देयं एतः पूरयिता हरिः ।

प्रतिकूले बिधौ देयं यतः सर्वं हरिष्यति ॥

तकदीर अनुकूल हो तब दान देना चाहिए क्यों कि सब देने वाला भगवान है । तकदीर प्रतिकूल हो तब भी देना चाहिए क्यों कि सब हरण करने वाला भी भगवान ही है ।

दाता प्रतिगृहीता च शुद्धि र्देयं च धर्मयुक् ।

देशकालौ च दानानाम ङ्गन्येतानि षड् विदुः ॥

दाता, लेनेवाला, पावित्र्य, देय वस्तु, देश, और काल – ये छे दान के अंग हैं ।

आनन्दाश्रूणि रोमाञ्चो बहुमानः प्रियं वचः ।

तथानुमोदता पात्रे दानभूषणपञ्चकम् ॥

आनंदाश्रु, रोमांच, लेनेवाले के प्रति अति आदर, प्रिय वचन, सुपात्र को दान देने का अनुमोदन – ये पाँच दान के भूषण हैं ।

अनादरो विलम्बश्च वै मुख्यं निष्ठुरं वचः ।

पश्चात्तापश्च पञ्चापि दानस्य दूषणानि च ॥

तिरष्कार, देने में विलंब, मुँह फेरना, निष्ठुर वचन, और देने के बाद पश्चाताप – ये पाँच दान के दूषण हैं ।

यद् दत्वा तप्यते पश्चादपात्रेभ्यस्तथा च यत् ।

अश्रद्धया च यद्दानं दाननाशास्त्रयः स्वमी ॥

देने के बाद पश्चात्ताप होना, अपात्र को देना, और श्रद्धारहित देना – इनसे दान नष्ट हो जाता है ।

द्वाविमौ पुरुषौ लोके न भूतौ न भविष्यतः ।

प्रार्थितं यश्च कुरुते यश्च नार्थयते परम् ॥

दो प्रकार के लोग होना मुश्किल है; जो दूसरों की प्रार्थना पूरी करता है, और जो दूसरे से कुछ मागता नहीं ।

लब्धानामपि वित्तानां बोद्धव्यौ द्वावतिक्रमौ ।

अपात्रे प्रतिपत्तिश्च पात्रे चाप्रतिपादनम् ॥

वित्तवानों के हाथ से धन का दो तरीकों से दुरुपयोग होता है; कुपात्र को दान देकर, और सत्पात्र को न देकर ।

पिपीलिकार्जितं धान्यं मक्षिकासंचितं मधु ।

लुब्धेनोपार्जितं द्रव्यं समूलं च विनश्यति ॥

चींटी से इकट्ठा किया हुआ धान्य, मधुमक्खी से इकट्ठा किया हुआ मधु, लोभी से इकट्ठा किया हुआ धन, इन सभी को लेने वाला का मूल से ही नाश होता है ।

अदेशकाले यद्दानमपात्रेभ्यश्च दीयते ।

असत्कृतमवज्ञातं तत्तामसमुदाहृतम् ॥

जो दान बिना सत्कार, तिरष्कारपूर्वक, अयोग्य देश-काल में या कुपात्र को दिया जाता है, वह तामस दान कहलाता है ।

यत्तु प्रत्युपकारार्थं फलमुद्दिश्य वा पुनः ।

दीयते च परिक्लिष्टं तद्दानं राजसं स्मृतम् ॥

जो दान क्लेश से, प्रत्युपकार की भावना से, या फल मिलने की अपेक्षा से दिया जाता है, वह राजस दान कहा गया है ।

दातव्यमिति यद्दानं दीयतेऽनुपकारिणे ।

देशे काले च पात्रे च तद्दानं सात्त्विकं स्मृतम् ॥

“दान देना कर्तव्य है” ऐसी भावना से जो दान देश, काल, और योग्य पात्र देखकर, प्रत्युपकार की भावना रखे बगैर दिया जाता है वह सात्त्विक दान कहा गया है ।

आत्मार्थं जीवलोकेस्मिन् को न जीवति मानवः ।

परं परोपकारार्थं यो जीवति स जीवति ॥

इस दुनिया में अपने लिए कौन मानव नहीं जीता (सब जीते हैं) ? लेकिन परोपकार के लिए जीए उसे जीया कहते हैं ।

यस्मिन् जीवति जीवन्ति बहवः स तु जीवति ।

काकोऽपि किं न कुरुते चंच्वा स्वोदरपूरणम् ॥

जिसके जीने से कई लोग जीते हैं, वह जीया कहलाता है, अन्यथा क्या कौआ भी चोंच से अपना पेट नहीं भरता ?

यस्य जीवन्ति धर्मेण पुत्रा मित्राणि बान्धवाः ।

सफलं जीवितं तस्य नात्मार्थे को हि जीवति ॥

जिसके सत्कर्म से पुत्र, मित्र और बंधु जीते हैं उसका जीवन सफल है अन्यथा अपने लिए कौन नहीं जीता “सब जीते हैं” ।

दानं भोगो नाशस्तिस्त्रो गतयो भवन्ति वित्तस्य ।

यो न ददाति न भुङ्क्ते तस्य तृतीया गतिर्भवति ॥

दान, भोग, व नाश – ये वित्त की तीन गतियाँ हैं । जो देता नहीं है, और भुगतता भी नहीं है, उसके वित्त की तीसरी गति अर्थात् नाश होता है ।

वाणी सरस्वती यस्य भार्या पुत्रवती सती ।

लक्ष्मीः दानवती यस्य सफलं तस्य जीवितम् ॥

जिसकी वाणी रसवती हो, पत्नी पुत्रवती हो, और लक्ष्मी दानवती हो उसका जीवन सफल है ।

दानोपभोगरहिता दिवसा यस्य यान्ति वै ।

स लोहकारभस्रेव श्वसन्नपि न जीवति ॥

जिसके दिन दान का उपभोग लिये बिना पसार होता है, वह साँस लेते हुए भी लोहार के धमन की भाँति जीवंत नहीं है ।

कुपात्र दानात् च भवेत् दरिद्रो दारिद्र्य दोषेण करोति पापम् ।

पापप्रभावात् नरकं प्रयाति पुनर्दरिद्रः पुनरेव पापी ॥

कुपात्र को दान देने से दरिद्री बनता है । दारिद्र्य दोष से पाप होता है । पाप के प्रभाव से नरक में जाता है; फिर से दरिद्री और फिर से पाप होता है ।

सुपात्रदानात् च भवेत् धनाढ्यो धनप्रभावेण करोति पुण्यम् ।

पुण्यप्रभावात् सुरलोकवासी पुनर्धनाढ्यः पुनरेव भोगी ॥

सुपात्र को दान देने से व्यक्ति धनवान बनता है; (फिर) धन के प्रभाव से पुण्यकर्म करता है; पुण्य के प्रभाव से उसे स्वर्ग प्राप्त होता है; और फिर से धनवान और फिर से भोगी बनता है ।

फलं यच्छति दातृभ्यो दानं नात्रास्ति संशयः ।

फलं तुल्यं ददात्येतदाश्चर्यं त्वनुमोदकम् ॥

दान करने से दान फल देता है उसमें संशय नहि, पर पीछे से वह उतना ही आनंद रुपी फल देता है, वह आश्चर्य है ।

सुदानात्प्राप्यते भोगः सुदानात्प्राप्यते यशः ।

सुदानात् जायते कीर्तिः सुदानात् प्राप्यते सुखम् ॥

सत् (सम्यक्) दान करने से यश, कीर्ति और सुख प्राप्त होते हैं ।

मायाहंङ्कार लज्जाभिः प्रत्युपक्रिययाऽथवा ।

यत्किञ्चिद्दीयते दानं न तध्दर्मस्य साधकम् ॥

माया से, अहंकार से, लज्जा से या बदला लेने की भावना से जो कुछ भी दान दिया जाता है, उस दान से धर्म नहीं साधा जाता ।

यदि चास्तमिते सूर्ये न दत्तं धनमर्थिनाम् ।

तध्दनं नैव जानामि प्रातः कस्य भविष्यति ॥

सूर्यास्त के वक्त जो धन याचकों को नहि दिया जाता, वह दूसरे दिन सुबह किसका होगा, यह मैं नहीं जानता !

अशनादीनि दानानि धर्मोपकरणानि च ।

साधुभ्यः साधुयोग्यानि देयानि विधिना बुधैः ॥

साधु पुरुषों को, साधुओं के योग्य अशन आदि धर्म के उपकरणों का दान बुधजनों को विधिपूर्वक करना चाहिए ।

धर्मरक्षापञ्चाङ्गम्

नाना दानं मया दत्तं रत्नानि विविधानि च ।

नो दत्तं मधुरं वाक्यं तेनाहं शूकरो मुखे ॥

मैंने अनेक प्रकार के दान और विविध रत्न दिये, पर एक भी मधुर वाक्य नहीं दिया, इस लिए मेरा मुख सूअर का है ।

अर्थिप्रश्नकृतौ लोके सुलभौ तौ गृहे गृहे ।

दाता चोत्तरदश्चैव दुर्लभौ पुरुषौ भुवि ॥

इस दुनिया में याचक और प्रश्नकर्ता घर-घर में सुलभ है, पर दाता और उत्तर देने वाले अति दुर्लभ है ।

भारत महिमा

अत्र जन्म सहस्राणां सहस्रैरपि सत्तम।

कदाचिल्लभते जन्तुर्मानुष्यं पुण्यसञ्चयात्।।

सैंकड़ों जन्मों के पश्चात् पुण्य जागने पर ही किसी को भारत की भूमि पर मनुष्ये के रूप में जन्म मिलता है।

ऐक्यं बलं समाजस्य तदभावे स दुर्बलः ।

तस्मात् ऐक्यं प्रशंसन्ति दृढं राष्ट्रहितैषिणः ॥

एकता समाज की शक्ति है, और इसके बिना हम दुर्बल है। अत: देश के शुभ चिंतक एकता को प्रोत्साहन देते हैं।

गायन्ति देवाः किल गीतकानि धन्यास्तु ते भारतभूमिभागे ।

स्वर्गापवर्गास्पदमार्गभूते भवन्ति भूयः पुरुषाः सुरत्वात्॥

देवगण भी यह गान करते हैं कि जिन्होंने भारतवर्ष में जन्म लिया है, जो कि स्वर्ग और मोक्ष का मार्ग है, वे पुरुष हम देवताओं से भी अधिक धन्य हैं।

रत्नाकरधौतपदां हिमालयकिरीटिनीम्।

ब्रह्मराजर्षिरत्नाढ्यां वन्देभारतमातरम्॥

जिनके पैर समुद्र द्वारा धोए जाते हैं और जो हिमालय से सुशोभित हैं, वह, जो कई ब्रह्मऋषियों और राजऋषियों से भरा है। ऐसी मेरी भारत माता को अभिवन्दन।

उत्तरं यत्समुद्रस्य हिमाद्रेश्चैव दक्षिणम्।

वर्षं तद्भारतं नाम भारती यत्र सन्ततिः।।

जो समुद्र के उत्तर तथा हिमालय के दक्षिण में स्थित है, वह देश भारतवर्ष कहलाता है। उसमें भरत की संतान बसी हुई है।

भारतीया वयम् भारतीया वयम् ।

भारतं मे प्रियं राजते भूतले

यस्य दिव्यं यशः कोविदैर्गीयते ।

मानवानां कृते यत् कृतं भारते

तन्न सत्यं क्वचिद् दृश्यते भूतले ॥

धर्मरक्षापञ्चाङ्गम्

हम सभी भारतीय हैं, हम सब भारतीय हैं। मेरा प्रिय भारत सम्पूर्ण संसार में सुशोभित है। जिसके दिव्य यश का गीत प्रकांड विद्वानों के द्वारा गाया जाता है। भारत में जो मानवता का रूप दिखाई देता है वह सत्य संसार में कहीं भी नहीं दिखाई देता है।

वयं भारतीयाः स्वभूमिं नमामः

परं धर्ममेकं सदा मानयामः।

यदर्थं धनं जीवनं चार्पयामः

प्रियं भारतं तत् सदा वन्दनीयम् ।।

हम भारतीय अपनी भूमि को नमन करते है सदा एक परमधर्म को मानेंगे। जिसके लिए धन जीवन का अर्पण करेंगे। ऐसे प्रिय भारत की सदा वंदना करेंगे।

वन्दे नितरां भारतवसुधाम्।

दिव्यहिमालय-गंगा-यमुना-सरयू-

कृष्णशोभितसरसाम् ॥

देवभूमि हिमालय, गंगा, यमुना, सरयू, कृष्णा और कई नदियों के साथ चमकने वाली भारत की भूमि को नमन

रक्तेन भाव्यं स्वातंत्र्ययज्ञम् न भिक्षया वा सत्याग्रहेण ।

आज़ादहिन्दस्य प्रवर्तकः सः सुभाषचंद्रः जयतु सदैव ।।

स्वतंत्रता का यज्ञ खून की समिधा से होता है, भिक्षा या सत्याग्रह से नही। ये बताने वाले आज़ाद हिन्द के निर्माता सुभाषचन्द्र की जय हो !!

नोटः- महान सत्यता, यथार्थ ज्ञान, क्षात्रतेज, धर्म के प्रति समर्पण, दक्षता, तपस्या, शक्ति और बलिदान – ये गुण राष्ट्र को बनाएँ रखते हैं।

गुरु प्रशंसा

गुरुर्ब्रह्मा ग्रुरुर्विष्णुः गुरुर्देवो महेश्वरः।

गुरुः साक्षात् परं ब्रह्म तस्मै श्री गुरवे नमः।।

गुरु ब्रह्मा है, गुरु विष्णु है, और गुरु ही भगवान शंकर है। गुरु हि साक्षात् परब्रह्म है, उन सद्गुरु को प्रणाम करता हूँ।

अखण्डमण्डलाकारं व्याप्तं येन चराचरम्।

तत्पदं दर्शितं येन तस्मै श्रीगुरवे नमः।।

उस महान गुरु को मेरा प्रणाम, जिसने उस अवस्था का साक्षात्कार करना संभव किया जो पूरे ब्रम्हांड में व्याप्त है, सभी जीवित और मृत्य (मृत) में।

अज्ञान तिमिरान्धस्य ज्ञानाञ्जन शलाकया ।

चक्षुरुन्मीलितं येन तस्मै श्री गुरवे नमः ॥

जिसने ज्ञानांजनरुप शलाका से, अज्ञानरुप अंधकार से अंध हुए लोगों की आँखें खोली, उन गुरु को नमस्कार ।

धर्मरक्षापञ्चाङ्गम्

अनेकजन्मसंप्राप्त कर्मबन्धविदाहिने ।

आत्मज्ञानप्रदानेन तस्मै श्रीगुरवे नमः ॥

उस महान गुरु को नमस्कार, जो असंख्य जन्मों के कर्मों से बने बंधनों को स्वयं जलाने का आत्मज्ञान दान दे रहा है।

मन्नाथः श्रीजगन्नाथः मद्गुरुः श्रीजगद्गुरुः ।

मदात्मा सर्वभूतात्मा तस्मै श्रीगुरवे नमः ॥

उस महान गुरु को गुरु को मेरा सादर प्रणाम, जो मेरा इश्वर और पुरे ब्रम्हांड का इश्वर है, मेरा गुरु और पुरे ब्रम्हांड का गुरु है, जो मेरे अन्दर और सभी चेतन में व्याप्त है।

त्वमेव माता च पिता त्वमेव, त्वमेव बन्धुश्च सखा त्वमेव ।

त्वमेव विद्या द्रविणं त्वमेव, त्वमेव सर्वं मम देव देव ॥

हे गुरुदेव आप मेरे माता और पिता के समान है, आप मेरे भाई और साथी है, आप ही मेरे ज्ञान और धन है. प्रभु, आप सब कुछ हैं।

विद्वत्त्वं दक्षता शीलं सङ्कान्तिरनुशीलनम् ।

शिक्षकस्य गुणाः सप्त सचेतस्त्वं प्रसन्नता ॥

विद्वत्व, दक्षता, शील, संक्रांति, अनुशीलन, सचेतत्व, और प्रसन्नता – ये सात शिक्षक के गुण हैं।

धर्मज्ञो धर्मकर्ता च सदा धर्मपरायणः।

तत्वेभ्यः सर्वशास्त्रार्थादेशको गुरुरुच्यते॥

धर्म को जाननेवाले, धर्म मुताबिक आचरण करनेवाले, धर्मपरायण, और सब शास्त्रों में से तत्वों का आदेश करनेवाले गुरु कहे जाते हैं।

विनयफलं शुश्रूषा गुरुशुश्रूषाफलं श्रुतं ज्ञानम्।

ज्ञानस्य फलं विरतिः विरतिफलं चाश्रवनिरोधः।।

विनय का फल सेवा है, गुरुसेवा का फल ज्ञान है, ज्ञान का फल विरक्ति (स्थायित्व) है, और विरक्ति का फल आश्रवनिरोध (बंधनमुक्ति तथा मोक्ष) है।

महाजनस्य संपर्क: कस्य नोन्नतिकारक:।

पद्मपत्रस्थितं तोयं धत्ते मुक्ताफलश्रियम्॥

महाजनों गुरुओं के संपर्क से किस की उन्नति नहीं होती। कमल के पत्ते पर पड़ी पानी की बूंद मोती की तरह चमकती है।

नीचं शय्यासनं चास्य सर्वदा गुरुसंनिधौ।

गुरोस्तु चक्षुर्विषये न यथेष्टासनो भवेत्।।

गुरु के पास हमेशा उनसे छोटे आसन पर ही बैठना चाहिए। गुरु के आते हुए दिखाई देने पर भी अपनी मनमानी से नहीं बैठे रहना चाहिए।

धर्मज्ञो धर्मकर्ता च सदा धर्मपरायणः ।

तत्वेभ्यः सर्वशास्त्रार्थादेशको गुरुरुच्यते ॥

धर्म को जाननेवाले, धर्म मुताबिक आचरण करनेवाले, धर्मपरायण, और सब शास्त्रों में से तत्त्वों का आदेश करनेवाले गुरु कहे जाते हैं ।

निवर्तयत्यन्यजनं प्रमादतः स्वयं च निष्पापपथे प्रवर्तते ।

गुणाति तत्वं हितमिच्छुरंगिनाम् शिवार्थिनां यः स गुरु र्निगद्यते ॥

जो दूसरों को प्रमाद करने से रोकते हैं, स्वयं निष्पाप रास्ते से चलते हैं, हित और कल्याण की कामना रखनेवाले को तत्त्वबोध करते हैं, उन्हें गुरु कहते हैं ।

किमत्र बहुनोक्तेन शास्त्रकोटि शतेन च ।

दुर्लभा चित्त विश्रान्तिः विना गुरुकृपां परम् ॥

बहुत कहने से क्या ? करोडों शास्त्रों से भी क्या ? चित्त की परम् शांति, गुरु के बिना मिलना दुर्लभ है ।

प्रेरकः सूचकश्वैव वाचको दर्शकस्तथा ।

शिक्षको बोधकश्चैव षडेते गुरवः स्मृताः ॥

प्रेरणा देनेवाले, सूचन देनेवाले, (सच) बतानेवाले, (रास्ता) दिखानेवाले, शिक्षा देनेवाले, और बोध करानेवाले – ये सब गुरु समान है ।

गुकारस्त्वन्धकारस्तु रुकार स्तेज उच्यते ।

अन्धकार निरोधत्वात् गुरुरित्यभिधीयते ॥

'गु'कार अर्थात् अंधकार, और 'रु'कार अर्थात् तेज; जो अंधकार का (ज्ञान का प्रकाश देकर) निरोध करता है, वही गुरु कहा जाता है ।

शरीरं चैव वाचं च बुद्धिन्द्रिय मनांसि च ।

नियम्य प्राञ्जलिः पश्येत् वीक्षमाणो गुरोर्मुखम् ॥

शरीर, वाणी, बुद्धि, इंद्रिय और मन को संयम में रखकर, हाथ जोडकर गुरु के सन्मुख देखना चाहिए ।

गुरोर्यत्र परीवादो निंदा वापिप्रवर्तते ।

कर्णौ तत्र विधातव्यो गन्तव्यं वा ततोऽन्यतः ॥

जहाँ गुरु की निंदा होती है वहाँ उसका विरोध करना चाहिए । यदि यह शक्य न हो तो कान बंद करके बैठना चाहिए; और (यदि) वह भी शक्य न हो तो वहाँ से उठकर दूसरे स्थान पर चले जाना चाहिए ।

यः समः सर्वभूतेषु विरागी गतमत्सरः ।

जितेन्द्रियः शुचिर्दक्षः सदाचार समन्वितः ॥

गुरु सब प्राणियों के प्रति वीतराग और मत्सर से रहित होते हैं । वे जीतेन्द्रिय, पवित्र, दक्ष और सदाचारी होते हैं ।

एकमप्यक्षरं यस्तु गुरुः शिष्ये निवेदयेत् ।

पृथिव्यां नास्ति तद् द्रव्यं यद्दत्वा ह्यनृणी भवेत् ॥

गुरु शिष्य को जो एक अक्षर भी कहे, तो उसके बदले में पृथ्वी का ऐसा कोई धन नहीं, जो देकर गुरु के ऋण में से मुक्त हो सकें ।

बहवो गुरवो लोके शिष्य वित्तपहारकाः ।

क्वचितु तत्र दृश्यन्ते शिष्यचित्तापहारकाः ॥

जगत में अनेक गुरु शिष्य का वित्त हरण करनेवाले होते हैं; परंतु, शिष्य का चित्त हरण करनेवाले गुरु शायद हि दिखाई देते हैं ।

सर्वाभिलाषिणः सर्वभोजिनः सपरिग्रहाः ।

अब्रह्मचारिणो मिथ्योपदेशा गुरवो न तु ॥

अभिलाषा रखनेवाले, सब भोग करनेवाले, संग्रह करनेवाले, ब्रह्मचर्य का पालन न करनेवाले, और मिथ्या उपदेश करनेवाले, गुरु नहीं है ।

दुग्धेन धेनुः कुसुमेन वल्ली शीलेन भार्या कमलेन तोयम् ।

गुरुं विना भाति न चैव शिष्यः शमेन विद्या नगरी जनेन ॥

जैसे दूध बगैर गाय, फूल बगैर लता, शील बगैर भार्या, कमल बगैर जल, शम बगैर विद्या, और लोग बगैर नगर शोभा नहीं देते, वैसे हि गुरु बिना शिष्य शोभा नहीं देता ।

पूर्णे तटाके तृषितः सदैव भूतेऽपि गेहे क्षुधितः स मूढः ।

कल्पद्रुमे सत्यपि वै दरिद्रः गुर्वादियोगेऽपि हि यः प्रमादी ॥

जो व्यक्ति न गुरु मिलने के बाद भी प्रमादी रहे, वह मूर्ख पानी से भरे हुए सरोवर के पास होते हुए भी प्यासा, घर में अनाज होते हुए भी भूखा, और कल्पवृक्ष के पास रहते हुए भी दरिद्र है ।

दृष्टान्तो नैव दृष्टस्त्रिभुवनजठरे सद्गुरोर्ज्ञानदातुः

स्पर्शश्चेत्तत्र कलप्यः स नयति यदहो स्वहृतामश्मसारम् ।

न स्पर्शत्वं तथापि श्रितचरगुणयुगे सद्गुरुः स्वीय-

शिष्ये स्वीयं साम्यं विधते भवति निरुपमस्तेवालौकिकोऽपि ॥

तीनों लोक, स्वर्ग, पृथ्वी, पाताल में ज्ञान देनेवाले गुरु के लिए कोई उपमा नहीं दिखाई देती । गुरु को पारसमणि के जैसा मानते है, तो वह ठीक नहीं है, कारण पारसमणि केवल लोहे को सोना बनाता है, पर स्वयं जैसा नहीं बनाता ! सद्गुरु तो अपने चरणों का आश्रय लेनेवाले शिष्य को अपने जैसा बना देता है; इस लिए गुरुदेव के लिए कोई उपमा नहि है, गुरु तो अलौकिक है ।

पिता का महत्व

पिता धर्मः पिता स्वर्गः पिता हि परमं तपः।

पितरि प्रीतिमापन्ने प्रीयन्ते सर्वदेवताः॥

पितरौ यस्य तृप्यन्ति सेवया च गुणेन च।

तस्य भागीरथीस्नानमहन्यहनि वर्तते॥

सर्वतीर्थमयी माता सर्वदेवमयः पिता।

धर्मरक्षापञ्चाङ्गम्

मातरं पितरं तस्मात् सर्वयत्नेन पूजयेत्॥

मातरं पितरंश्चैव यस्तु कुर्यात् प्रदक्षिणम्।

प्रदक्षिणीकृता तेन सप्तदीपा वसुन्धरा॥

पद्मपुराण में कहा गया है कि पिता धर्म है, पिता स्वर्ग है और पिता ही सबसे श्रेष्ठ तप है। पिता के प्रसन्न हो जाने पर सम्पूर्ण देवता प्रसन्न हो जाते हैं। जिसकी सेवा और सदगुणों से पिता-माता संतुष्ट रहते हैं, उस पुत्र को प्रतिदिन गंगा-स्नान का पुण्य मिलता है। माता सर्वतीर्थमयी है और पिता सम्पूर्ण देवताओं का स्वरूप है। इसलिये सब प्रकार से माता-पिता का पूजन करना चाहिये। माता-पिता की परिक्रमा करने से पृथ्वी की परिक्रमा हो जाती है।

पन्चान्यो मनुष्येण परिचया प्रयत्नतरू ।

पिता मातााग्निरात्मा च गुरुश्च भरतर्षभ ।।

भरतश्रेष्ठ ! पिता, माता अग्नि, आत्मा और गुरु – मनुष्य को इन पांच अग्नियों की बड़े यत्न से सेवा करनी चाहिए।

सत्यं माता पिता ज्ञानं धर्मो भ्राता दया सखी।

शान्तिः पत्नी क्षमा पुत्रः षडमी मम बान्धवाः।।

सवाई मेरी माता है। ज्ञान पिता है। धर्म भाई है। और दया सहेली है। शान्ति पत्नी और क्षमा पुत्र है। ये छः मेरे बन्धु हैं।

मातृपितृकृताभ्यासो गुणितामेति बालकः ।

न गर्भच्युतिमात्रेण पुत्रो भवति पण्डितः ।।

माता और पिता के कारित अभ्यास से बालक विद्वान बनता है न कि गर्भ से बाहर आते ही बिना पुरुषार्थ के ही विद्वान् बन जाता है।

पिता स्वर्गः पिता धर्मः पिता परमकं तपः ।

पितरि प्रीतिमापन्ने सर्वाः प्रीयन्ति देवताः ॥

मेरे पिता मेरे स्वर्ग हैं, मेरे पिता मेरे धर्म हैं, वे मेरे जीवन की परम तपस्या हैं। जब वे खुश होते हैं, तब सभी देवता खुश होते हैं !

सर्वतीर्थमयी माता सर्वदेवमयः पिता ।

मातरं पितरं तस्मात् सर्वयत्नेन पूजयेत् ॥

मनुष्य के लिये उसकी माता सभी तीर्थों के समान तथा पिता सभी देवताओं के समान पूजनीय होते है।अतः उसका यह परम् कर्तव्य है कि वह उनका अच्छे से आदर और सेवा करे।

जनकश्चोपनेता च यश्च विद्यां प्रयच्छति।

अन्नदाता भयत्राता पश्चैते पितरः स्मृताः॥

जन्मदाता, उपनयन संस्कारकर्ता, विद्या प्रदान करने वाला अन्नदाता और भय से रक्षा करने वाला – ये पांच व्यक्ति को पिता कहा गया है।

नारी एक शक्ति

धर्मरक्षापञ्चाङ्गम्

दशपुत्रसमा कन्या दशपुत्रान्प्रवर्धयन्।

यत्फलं लभते मर्त्यस्तल्लभ्यं कन्ययैकया॥

अकेली कन्या ही दश पुत्रों के समान है। दश पुत्रों के लालन पालन से जो फल प्राप्त होता है वह अकेले कन्या के पोषण से ही प्राप्त हो जाता है।

यत्र नार्यस्तु पूज्यन्ते रमन्ते तत्र देवताः।

यत्रैतास्तु न पूज्यन्ते सर्वास्तत्राफला क्रियाः॥

मनुस्मृति में कहा गया है कि जहां स्त्रियों का आदर होता है, वहां देवता रमण करते हैं। जहां उनका का आदर नहीं होती, वहां सब काम निष्फल होते हैं।

अतुलं तत्र तत्तेजः सर्वदेवशरीरजम्।

एकस्थं तदभून्नारी व्याप्तलोकत्रयं त्विषा॥

सभी देवताओं से उत्पन्न हुआ और तीनों लोकों में व्याप्त। वह अतुल्य तेज जब एकत्रित हुआ तब वह नारी बनी।

नास्ति मातृसमा छाया नास्ति मातृसमा गतिः।

नास्ति मातृसमं त्राणं नास्ति मातृसमा प्रपा॥

माता के समान कोई छाया नहीं, कोई आश्रय नहीं, कोई सुरक्षा नहीं और न ही माता के समान इस संसार में कोई जीवनदाता है।

न कन्यायाः पिता विद्वान् ग्रहिणयात्-शुल्कम् अणु-अपि।

गृहणन्-शुल्कं हि लोभेन स्यान् नरो अपत्यविक्रयी ।।

विद्वान् पिता, कन्यादान में कुछ भी उसके बदले में मूल्य न लेवे, यदि लोभ से कुछ ले लेता है, तो वह संतान को बेचने वाला होता हैं।

शोचन्ति जामयोयत्र विनश्यत्याशु तत् कुलम्।

न शोचन्ति तु यत्रैता वर्धते तद्धि सर्वदा।।

जिस कुल में स्त्रियां शोक में रहती है, वह कुल शीघ्र ही बिगड़ जाता है, और जहां प्रसन्न रहती है, वह सदा के लिए बढ़ता जाता है।

जामयो यानि गेहानी शपन्त्यप्रतिपूजिताः।

तानि कृत्याहतानीव विनश्यन्ति समन्ततः।।

जिस कुल में स्त्रियों का सत्कार नहीं है, वह उनके श्राप से नष्ट हो जाता है, जैसे मारण करने से हो जाता है।

तस्मादेताः सदा पूज्या भूषणाच्छादनाशनैः।

भूतिकामैर्नरैर्नित्यं सत्करेषूत्सवेषु च॥

स्त्रियों को सत्कार के मौक़े पर और उत्सवों पर सदा गहना, वस्त्र और स्वादिष्ट भोजन से संतुष्ट करना चाहिए।

बालिका अहं बालिका नव युग जनिता अहं बालिका ।

नाहमबला दुर्बला आदिशक्ति अहमम्बिका ।।

मैं एक लड़की हूँ, आधुनिक समय की लड़की हूँ। मैं कमजोर या शक्तिहीन नहीं हूं। मैं हूँ आदिशक्ति, मैं हूँ अंबिका...!!

मित्र प्रशंसा

आढ् यतो वापि दरिद्रो वा दुःखित सुखितोऽपिवा ।

निर्दोषश्च सदोषश्च व्यस्यः परमा गतिः ॥

चाहे धनी हो या निर्धन, दुःखी हो या सुखी, निर्दोष हो या सदोष – मित्र ही मनुष्य का सबसे बड़ा सहारा होता है।

न कश्चित कस्यचित मित्रं न कश्चित कस्यचित रिपुः ।

व्यवहारेण जायन्ते, मित्राणि रिप्वस्तथा ।।

न कोई किसी का मित्र होता है, न कोई किसी का शत्रु। व्यवहार से ही मित्र या शत्रु बनते हैं।

विवादो धनसम्बन्धो याचनं चातिभाषणम् ।

आदानमग्रतः स्थानं मैत्रीभङ्गस्य हेतवः॥

वाद-विवाद, धन के लिये सम्बन्ध बनाना, माँगना, अधिक बोलना, ऋण लेना, आगे निकलने की चाह रखना – यह सब मित्रता के टूटने में कारण बनते हैं।

तावत्प्रीति भवेत् लोके यावद् दानं प्रदीयते ।

वत्सः क्षीरक्षयं दृष्ट्वा परित्यजति मातरम्॥

लोगों का प्रेम तभी तक रहता है जब तक उनको कुछ मिलता रहता है। मां का दूध सूख जाने के बाद बछड़ा तक उसका साथ छोड़ देता है।

आलस्यं हि मनुष्याणां शरीरस्थो महान् रिपुः।

नास्त्युद्यमसमो बन्धुः कृत्वा यं नावसीदति ॥

मनुष्यों के शरीर में रहने वाला आलस्य ही उनका सबसे बड़ा शत्रु होता है परिश्रम जैसा दूसरा (हमारा)कोई अन्य मित्र नहीं होता क्योंकि परिश्रम करने वाला कभी दुखी नहीं होता।

यस्य मित्रेण संभाषो यस्य मित्रेण संस्थितिः।

यस्य मित्रेण संलापस्ततो नास्तीह पुण्यवान्॥

जिसका मित्र के साथ बोल-चाल, रहना-सहना, गुप्त बातचीत (समस्याओं के



समाधान हेतु) हो उसके समान कोई इस संसार में पुण्यवान् नहीं है।

एक एव सुहृद्धर्मो निधनेऽप्यनुयाति यः।

शरीरेण समं नाशं सर्वमन्यत्तु गच्छति॥

धर्म ही एक ऐसा मित्र हैं जो मरने पर भी (आत्मा के) साथ जाता है, अन्य सब वस्तु शरीर के साथ (यहाँ) ही नाश हो जाती हैं।

सुभाषितानि

एकं हन्यान्न वा हन्यादिषुर्मुक्तो धनुष्मता।

बुद्धिर्बुद्धिमतोत्सृष्टा हन्याद् राष्ट्रम सराजकम् ॥

कोई धनुर्धर जब बाण छोड़ता है तो सकता है कि वह बाण किसी को मार दे या न भी मारे, लेकिन जब एक बुद्धिमान कोई गलत निर्णय लेता है तो उससे राजा सहित संपूर्ण राष्ट्र का विनाश हो सकता है ।

त्रिविधं नरकस्येदं द्वारम नाशनमात्मनः ।

काम: क्रोधस्तथा लोभस्तस्मादेतत्त्रयं त्यजेत् ॥

काम, क्रोध और लोभ-आत्मा को भ्रष्ट कर देने वाले नरक के तीन द्वार कहे गए हैं । इन तीनों का त्याग श्रेयस्कर है ।

प्राप्यापदं न व्यथते कदाचि- दुद्योगमन्विच्छति चाप्रमत्तः।

धर्मरक्षापञ्चाङ्गम्

दुःखं च काले सहते महात्मा धुरन्धरस्तस्य जिताः सप्तनाः ॥

जो व्यक्ति मुसीबत के समय भी कभी विचलित नहीं होता, बल्कि सावधानी से अपने काम में लगा रहता है, विपरीत समय में दुःखों को हँसते-हँसते सह जाता है, उसके सामने शत्रु टिक ही नहीं सकते; वे तूफान में तिनकों के समान उड़कर छितरा जाते हैं ।

दानं होमं दैवतं मङ्गलानि प्रायश्चित्तान् विविधान् लोकवादान् ।

एतानि यः कुरुत नैत्यकानि तस्योत्थानं देवता राधयन्ति ॥

जो व्यक्ति दान, यज्ञ, देव -स्तुति, मांगलिक कर्म, प्रायश्चित तथा अन्य सांसरिक कार्यों को यथाशक्ति नियमपूर्वक करता है ,देवी-देवता स्वयं उसकी उन्नति का मार्ग प्रशस्त करते हैं ।

यत् सुखं सेवमानोपि धर्मार्थाभ्यां न हीयते।

कामं तदुपसेवेत न मूढव्रतमाचरेत्। ॥

व्यक्ति को यह छूट है कि वह न्यायपूर्वक और धर्म के मार्ग पर चलकर इच्छानुसार सुखों का भरपूर उपभोग करें ,लेकिन उनमें इतना आसक्त न हो जाए कि अधर्म का मार्ग पकड़ ले।

बलवानप्यशक्तोऽसौ धनवानपि निर्धनः ।

श्रुतवानपि मूर्खोऽसौ यो धर्मविमुखो जनः ॥

जो व्यक्ति कर्मठ नहीं हैं अपना धर्म नहीं निभाता वो शक्तिशाली होते हुए भी निर्बल हैं, धनी होते हुए भी गरीब हैं और पढ़े लिखे होते हुये भी अज्ञानी हैं ।

धर्मरक्षापञ्चाङ्गम्

चन्दनं शीतलं लोके ,चन्दनादपि चन्द्रमाः ।

चन्द्रचन्दनयोर्मध्ये शीतला साधुसंगतिः ॥

चन्दन को संसार में सबसे शीतल लेप माना गया हैं लेकिन कहते हैं चंद्रमा उससे भी ज्यादा शीतलता देता हैं लेकिन इन सबके अलावा अच्छे मित्रो का साथ सबसे अधिक शीतलता एवम शांति देता हैं ।

सहसा विदधीत न क्रियामविवेकः परमापदां पदम् ।

वृणते हि विमृश्यकारिणं गुणलुब्धाः स्वयमेव संपदः ॥

जल्दबाजी में कोई कार्य नहीं करना चाहिए क्यूंकि बिना सोचे किया गया कार्य घर में विपत्तियों को आमंत्रण देता हैं । जो व्यक्ति सहजता से सोच समझ कर विचार करके अपना काम करते हैं लक्ष्मी स्वयं ही उनका चुनाव कर लेती हैं ।

विद्या मित्रं प्रवासेषु ,भार्या मित्रं गृहेषु च ।

व्याधितस्यौषधं मित्रं , धर्मो मित्रं मृतस्य च ॥

यात्रा के समय ज्ञान एक मित्र की तरह साथ देता हैं घर में पत्नी एक मित्र की तरह साथ देती हैं, बीमारी के समय दवाएँ साथ निभाती हैं अंत समय में धर्म सबसे बड़ा मित्र होता हैं ।

चित्तोद्वेगं विधायापि हरिर्यद्यत् करिष्यति।

तथैव तस्य लीलेति मत्वा चिन्तां द्रुतं त्यजेत॥

चिंता और उद्वेग में संयम रख कर और ऐसा मान कर कि श्रीहरि जो जो भी करेंगे वह उनकी लीला मात्र है, चिंता को शीघ्र त्याग दें ।

यावद्वित्तोपार्जनसक्त तावन्निजपरिवारो रक्तः।

पश्चाज्जीवति जर्जरदेहे, वार्तां कोऽपि न पृच्छति गेहे॥

जब तक व्यक्ति धनोपार्जन में समर्थ है, तब तक परिवार में सभी उसके प्रति स्नेह प्रदर्शित करते हैं परन्तु अशक्त हो जाने पर उसे सामान्य बातचीत में भी नहीं पूछा जाता है ।

जानीयात्प्रेषणेभृत्यान् बान्धवान्व्यसनाऽऽगमे।

मित्रं याऽऽपत्तिकालेषु भार्यां च विभवक्षये ॥

किसी महत्वपूर्ण कार्य पर भेजते समय सेवक की पहचान होती है । दुःख के समय में बन्धु-बान्धवों की, विपत्ति के समय मित्र की तथा धन नष्ट हो जाने पर पत्नी की परीक्षा होती है ।

निषेवते प्रशस्तानी निन्दितानी न सेवते ।

अनास्तिकः श्रद्धान एतत् पण्डितलक्षणम् ॥

सद्गुण, शुभ कर्म, भगवान् के प्रति श्रद्धा और विश्वास, यज्ञ, दान, जनकल्याण आदि, ये सब ज्ञानीजन के शुभ- लक्षण होते हैं ।

यस्य कृत्यं न विघ्नन्ति शीतमुष्णं भयं रतिः ।

समृद्धिरसमृद्धिर्वा स वै पण्डित उच्यते ॥

धर्मरक्षापञ्चाङ्गम्

जो व्यक्ति सरदी-गरमी, अमीरी-गरीबी, प्रेम-धृणा इत्यादि विषय परिस्थितियों में भी विचलित नहीं होता और तटस्थ भाव से अपना राजधर्म निभाता है, वही सच्चा ज्ञानी है ।

क्षिप्रं विजानाति चिरं शृणोति विज्ञाय चार्थं भते न कामात्।

नासम्पृष्टो व्युपयुङ्क्ते परार्थे तत् प्रज्ञानं प्रथमं पण्डितस्य ॥

ज्ञानी लोग किसी भी विषय को शीघ्र समझ लेते हैं, लेकिन उसे धैर्यपूर्वक देर तक सुनते रहते हैं । किसी भी कार्य को कर्तव्य समझकर करते है, कामना समझकर नहीं और व्यर्थ किसी के विषय में बात नहीं करते ।

आत्मज्ञानं समारम्भः तितिक्षा धर्मनित्यता ।

यमर्थान्नापकर्षन्ति स वै पण्डित उच्यते ॥

जो अपने योग्यता से भली-भाँति परिचित हो और उसी के अनुसार कल्याणकारी कार्य करता हो, जिसमें दुःख सहने की शक्ति हो, जो विपरीत स्थिति में भी धर्म-पथ से विमुख नहीं होता, ऐसा व्यक्ति ही सच्चा ज्ञानी कहलाता है ।

नाप्राप्यमभिवाञ्छन्ति नष्टं नेच्छन्ति शोचितुम् ।

आपत्सु च न मुह्यन्ति नराः पण्डितबुद्धयः ॥

जो व्यक्ति दुर्लभ वस्तु को पाने की इच्छा नहीं रखते, नाशवान वस्तु के विषय में शोक नहीं करते तथा विपत्ति आ पड़ने पर घबराते नहीं हैं, डटकर उसका सामना करते हैं, वही ज्ञानी हैं ।

निश्चित्वा यः प्रक्रमते नान्तर्वसति कर्मणः ।

अवन्ध्यकालो वश्यात्मा स वै पण्डित उच्यते ॥

जो व्यक्ति किसी भी कार्य-व्यवहार को निश्चयपूर्वक आरंभ करता है, उसे बीच में नहीं रोकता, समय को नष्ट नहीं करता तथा अपने मन को नियंत्रण में रखता है, वही ज्ञानी है।

आर्यकर्मणि रज्यन्ते भूतिकर्माणि कुर्वते।

हितं च नाभ्यसूयन्ति पण्डिता भरतर्षभ ॥

ज्ञानीजन श्रेष्ट कार्य करते हैं । कल्याणकारी व राज्य की उन्नति के कार्य करते हैं । ऐसे लोग अपने हितौषी में दोष नही निकालते ।

अमित्रं कुरुते मित्रं मित्रं द्वेष्टि हिनस्ति च ।

कर्म चारभते दुष्टं तमाहुर्मूढचेतसम् ॥

जो व्यक्ति शत्रु से दोस्ती करता तथा मित्र और शुभचिंतकों को दुःख देता है, उनसे ईर्ष्या-द्वेष करता है । सदैव बुरे कार्यों में लिप्त रहता है, वह मूर्ख कहलाता है ।

स्वमर्थं यः परित्यज्य परार्थमनुतिष्ठति।

मिथ्या चरति मित्रार्थे यश्च मूढः स उच्यते ॥

जो व्यक्ति अपना काम छोड़कर दूसरों के काम में हाथ डालता है तथा मित्र के कहने पर उसके गलत कार्यो में उसका साथ देता है, वह मूर्ख कहलाता है ।

श्रुतं प्रज्ञानुगं यस्य प्रज्ञा चैव श्रुतानुगा।

धर्मरक्षापञ्चाङ्गम्

असम्भिन्नार्यमर्यादः पण्डिताख्यां लभेत सः ॥

जो व्यक्ति गंथों-शास्त्रों से विद्या ग्रहण कर उसी के अनुरूप अपनी बुद्धि को ढलता है और अपनी बुद्धि का प्रयोग उसी प्राप्त विद्या के अनुरूप ही करता है तथा जो सज्जन पुरुषों की मर्यादा का कभी उल्लंघन नहीं करता, वही ज्ञानी है ।

प्रवृत्तवाक् विचित्रकथ ऊहवान् प्रतिभानवान्।

आशु ग्रन्थस्य वक्ता च यः स पण्डित उच्यते ॥

जो व्यक्ति बोलने की कला में निपुण हो, जिसकी वाणी लोगों को आकर्षित करे, जो किसी भी ग्रंथ की मूल बातों को शीघ्र ग्रहण करके बता सकता हो, जो तर्क-वितर्क में निपुण हो, वही ज्ञानी है ।

आहार निद्रा भय मैथुनं च सामान्यमेतत् पशुभिर्नराणाम्।

धर्मो हि तेषामधिको विशेष: धर्मेण हीनाः पशुभिः समानाः॥

आहार, निद्रा, भय और मैथुन– ये तो इन्सान और पशु में समान है। इन्सान में विशेष केवल धर्म है, अर्थात् बिना धर्म के लोग पशुतुल्य है।

पश्य कर्म वशात्प्राप्तं भोज्यकालेऽपि भोजनम् ।

हस्तोद्यम विना वक्त्रं प्रविशेत न कथंचन ।।

भोजन थाली में परोस कर सामने रखा हो पर जब तक उसे उठा कर मुंह में नहीं डालोगे , वह अपने आप मुंह में तो चला नहीं जाएगा।

नाभिषेको न संस्कारः सिंहस्य क्रियते वने।

विक्रमार्जितसत्वस्य स्वयमेव मृगेन्द्रता॥

सिंह को जंगल का राजा नियुक्त करने के लिए न तो कोई अभिषेक किया जाता है, न कोई संस्कार। अपने गुण और पराक्रम से वह खुद ही मृगेंद्रपद प्राप्त करता है।

अनेकशास्त्रं बहुवेदितव्यम्, अल्पश्च कालो बहवश्च विघ्ना:।

यत् सारभूतं तदुपासितव्यं, हंसो यथा क्षीरमिवाम्भुमध्यात्॥

संसार में अनेक शास्त्र, वेद है, बहुत जानने को है लेकिन समय बहुत कम है और विद्या बहुत अधिक है। अतः जो सारभूत है उसका ही सेवन करना चाहिए जैसे हंस जल और दूध में से दूध को ग्रहण कर लेता है

उद्यमेन हि सिध्यन्ति कार्याणि न मनोरथैः ।

न हि सुप्तस्य सिंहस्य प्रविशन्ति मुखे मृगाः॥

कोई भी काम कड़ी मेहनत के बिना पूरा नहीं किया जा सकता है सिर्फ सोचने भर से कार्य नहीं होते है, उनके लिए प्रयत्न भी करना पड़ता है। कभी भी सोते हुए शेर के मुंह में हिरण खुद नहीं आ जाता उसे शिकार करना पड़ता है।

न ही कश्चित् विजानाति किं कस्य श्वो भविष्यति।

अतः श्वः करणीयानि कुर्यादद्यैव बुद्धिमान्॥

किसी को नहीं पता कि कल क्या होगा इसलिए जो भी कार्य करना है आज ही कर ले यही बुद्धिमान इंसान की निशानी है।

सुसूक्ष्मेणापि रंध्रेण प्रविश्याभ्यंतरं रिपुः।

नाशयेत् च शनै: पश्चात् प्लवं सलिलपूरवत्॥

नाव में पानी पतले छेद से भीतर आने लगता है और भर कर उसे डूबा देता है, उसी तरह शत्रु को घुसने का छोटा रास्ता या कोई भेद मिल जाए तो उसी से भीतर आ कर वह कबाड़ कर ही देता है।

निर्विषेणापि सर्पेण कर्तव्या महती फणा।

विषं भवतु मा वास्तु फटाटोपो भयंकरः॥

सांप जहरीला न हो पर फुफकारता और फन उठाता रहे तो लोग इतने से ही डर कर भाग जाते हैं। वह इतना भी न करे तो लोग उसकी रीढ़ को जूतों से कुचल कर तोड़ दें।

मानात् वा यदि वा लोभात् क्रोधात् वा यदि वा भयात्।

यो न्यायं अन्यथा ब्रूते स याति नरकं नरः॥

कहा गया है कि यदि कोई अहंकार के कारण, लोभ से, क्रोध से या डर से गलत फैसला करता है तो उसे नरक को पड़ता है।

जानादारिद्रय रोग दुःखानि बंधन व्यसनानि च।

आत्मापराध वृक्षस्य फलान्येतानि देहिनाम्॥

दरिद्रता , रोग, दुख, बंधन और विपदाएं तो अपराध रूपी वृक्ष के फल हैं। इन फलों का उपभोग मनुष्य को करना ही पड़ता है।

अधिकमास और क्षयमास का वर्णन

भारतीय कालगणना सूक्ष्म और सर्वोत्कृष्ट काल गणना है। कालगणना में सौरमास और चान्द्रमास के समायोजन के लिए अधिकमास और क्षयमास का विधान है।

अधिकमास और क्षयमास का लक्षण:- जिस चान्द्रमास में सूर्य कि संक्रांति नहीं होती वह मलमास है अर्थात सूर्य के संक्रांति रहित मास अधिकमास होता है और जिस चान्द्रमास में सूर्य के दो संक्रांति हो, उस चान्द्रमास को क्षयमास कहते हैं। क्षयमास प्रायः कार्तिकादि तीन माह में होता है। कार्तिक, अगहन, पौष और कभी - कभी माघ मास में भी होता है। जिस वर्ष में क्षयमास होता है उस वर्ष में 2 अधिकमास लगते हैं। एक तीन माह पूर्व और एक एकमाह के अनन्तर में होता है। मुहूर्तमार्तण्ड में बतलाया गया है कि यदि एक ही वर्ष में क्षयमास तथा दो अधिकमास की प्राप्ति हो तो क्षय से पूर्व अर्थात पहला अधिकमास प्राकृत होता है, अधिकमास की तरह त्याज्य नहीं होता है अर्थात उत्तर वाला अधिकमास त्याज्य होता है। ब्रह्मा जी का आदेश है कि फाल्गुन आदि आठ महिनों में से ही अधिकमास लगता है और अगहन आदि तीन माह में क्षयमास लगता है। इस मलमास में शुभ कार्य(विवाह आदि) वर्जित है।

अधिकमास में कृत्याकृत्य कर्म:- गर्गाचार्यजी कहते है कि मलमास में अग्न्याधान, प्रतिष्ठा, यज्ञ, दान, व्रतादि, वेदव्रत, वृषोत्सर्ग, चूड़ाकर्म, व्रतबन्ध, देवतीर्थादि गमन, विवाह, अभिषेक, यान और गृह कर्म अर्थात् गृहारम्भ आदि कार्य नहीं करना चाहिये।

सूर्योदय ग्रन्थ में कहा है कि मलमास में मरने वाले का वार्षिक श्राद्ध, तीर्थ और गजच्छायाश्राद्ध करना चाहिए।

स्मृतिरत्नावली में वर्णन है, जिस काम्य प्रयोग का प्ररम्भ मलमास से पूर्व ही हो गया हो, उसके दिनों की समाप्ति में जो होना चाहिए वह इस अधिकमास में विहित है अर्थात् उसकी समाप्ति अवश्य ही संदेह रहित होकर करनी चाहिए।फल विवेक के अनुसार इस मास राजाओं के लिए यात्रा वर्जित है। वशिष्ठजी के मतानुसार इस मलमास में वापी, कुआँ, तलाबादि प्रतिष्ठा, यज्ञादि कार्य नहीं करना चाहिए। मनु के अनुसार मलमास में तीर्थश्राद्ध, दर्श श्राद्ध, प्रेतश्राद्ध, सपिण्डीकरण, चन्द्रसूर्यग्रहणीय स्नान करना चाहिए। पराशर मुनि के अनुसार गर्भस्थ की मास संज्ञा, वर्द्धापन कार्य, सेवक का मास संज्ञा, प्रेत कर्म, सपिण्डी कर्म, नित्य कर्म(प्रतिदिन) का त्याग नहीं करना चाहिए। कात्यायन स्मृति के अनुसार गर्भाधानसंस्कार से लेकर अन्नप्राशन संस्कार के अन्त तक करना तथा कर्णवेधादि क्रिया मलमास में नहीं करनी चाहिए। गणपति के अनुसार गर्भाधानसंस्कार से बालक के अन्नप्राशन संस्कार में गुरु-शुक्र अस्त और मलमास जनित दोष नहीं होता है। इसमें निश्चित काल की प्रधानता से उक्त कार्य मलमास में भी किया जायेगा।

श्राद्ध परिचय

प्रेत और पितर के निमित्त उनके आत्मा की तृप्ति के लिए श्रद्धापूर्वक जो कुछ अर्पित किया जाये, वह श्राद्ध है। मृत्यु के बाद दशगात्र, षोडशी, सपिण्डन तक मृत व्यक्ति की प्रेत संज्ञा होती है। सपिण्डन के बाद वह पितरों में सम्मिलित हो जाता है। शास्त्रों में निर्देश है कि माता- पिता का नाम, गोत्र उच्चारण कर मंत्र द्वारा जो अन्नादि अर्पित किया जाता है वह उनको प्राप्त होता है। यदि अपने कर्मों के अनुसार उनको देव योनि प्राप्त होता है तो उन्हें अमृत रुप में मिलता है। गन्धर्व लोक में भोग्यरूप, पशु योनि में तृणरूप में, सर्पयोनि में वायुरूप में, यक्षयोनि में पेयरूप में, दानवयोनि में मांसरूप में, प्रेतयोनि में रूधिररुप में, मनुष्ययोनि में अन्न आदि रूप में उपलब्ध होता है। जब पितर यह सुनते हैं कि श्राद्धकाल उपस्थित हो गया तो वे श्राद्धस्थल पर पहुँचकर, ब्राह्मण के साथ वायुरूप में भोजन करते हैं। पितृपक्ष के आरम्भ होने पर पितृगण अपने द्वार पर आकर बैठ जाते हैं। यदि उस दिन उनका श्राद्ध नहीं किया जाता है तो वे क्रोधित होकर शाप देकर लौट जाते हैं। अतः उस दिन पत्र- पुष्प, फल, जल तर्पण से यथा शक्ति उनको तृप्त करना चाहिए। श्राद्ध विमुख नहीं होना चाहिए।

श्राद्ध की परिभाषा:- महर्षि मरीचि के अनुसार प्रेत और पितरों के उद्देश्य से श्रद्धापूर्वक जो भोज्य पदार्थ दिया जाता है, वह श्राद्ध है। ब्रह्मपुराण के अनुसार देश, काल, पात्र का विचार कर श्रद्धा और विधान पूर्वक जो पितरों हेतु ब्राह्मण को दिया जाता है, वह श्राद्ध कहलाता है।

श्राद्ध की प्रशंसा:- ब्रह्मपुराण में श्राद्ध के बारे में कहा गया है कि जो अपनी सम्पत्ति के अनुकूल व्यय करता हुआ श्राद्ध करता है वह ब्राह्मण को प्रसन्न कर लेता है। श्राद्ध का फल कभी व्यर्थ नहीं जाता है। यमस्मृति के अनुसार जो लोग देवता, पितर, अग्नि और ब्राह्मण की पूजन करते हैं वे सभी प्राणियों के आत्मा विष्णु की ही आराधना करते हैं।



श्राद्ध के प्रकार:- मुख्यतः श्राद्ध दो प्रकार के होते हैं। पहला एकोदिष्ट और दूसरा पार्णव, लेकिन बाद में चार श्राद्धों को मुख्यता दी गयी है। इसमें पार्णव, एकोदिष्ट, वृद्धि और सपिण्डीकरण आतें है। आजकल यही चार श्राद्ध समाज में प्रचलित है। वृद्धि श्राद्ध का तात्पर्य नान्दीमुख श्राद्ध है। श्राद्धों की कुल संख्या बारह हैं। इसमें नित्यश्राद्ध, तर्पण और पञ्चमहायज्ञ के रूप में नित्य किया जाता है। नैमित्तिक श्राद्ध को एकोदिष्ट श्राद्ध के नाम से भी जाना जाता है। यह किसी एक व्यक्ति के लिए किया जाता है। मृत्यु के पश्चात् यही श्राद्ध होता है। प्रतिवर्ष यह मृत्यु तिथि पर भी एकोदिष्ट ही किया जाता है। काम्यश्राद्ध किसी कामना की पूर्ति की इच्छा से किया जाता है। वृद्धि श्राद्ध पुत्र के जन्म आदि के अवसर पर किया जाता है। सपिण्डन श्राद्ध मृत्यु के बाद दशगात्र और षोडशी के पश्चात् किया जाता है। इसके द्वारा मृत व्यक्ति को प्रेतत्व से पितरत्व प्राप्त होता है। पार्वण श्राद्ध प्रतिवर्ष आश्विनकृष्णपक्ष में मृत्यु तिथि पर और अमावस्या के दिन किया जाता है। इसके अतिरिक्त अन्य पर्वों पर भी यह श्राद्ध किया जाता है। गोष्ठी श्राद्ध विद्वानों को सुखी, समृद्ध बनाने के उद्देश्य से किया जाता है। इसमें पितरों को तृप्ति होना स्वाभाविक है। शुचि श्राद्ध शारीरिक, मानसिक और अशौचादि अशुद्धि के निवारण के लिए किया जाता है। कर्मांगश्राद्ध सोमयाग, पुंसवन, सीमन्तोन्नयन आदि के अवसर पर किया जाता है। दैविक श्राद्ध देवताओं के प्रसन्नता के लिए किया जाता है। यात्राश्राद्ध यात्रा के समय किया जाता है। पुष्टिश्राद्ध धन-धान्य, समृद्धि की इच्छा से किया जाता है।

श्राद्ध योग्य ब्राह्मण और स्थान:- श्राद्ध में परीक्षा करके ब्राह्मणों को आमंत्रित करना चाहिए। आमंत्रण के बाद परीक्षा करना निषेध है। श्राद्ध कभी-भी किसी दूसरे के घर, भूमि पर नहीं करना चाहिये। जिस भूमि पर किसी का स्वामित्व न हो, वहाँ श्राद्ध करना चाहिये। सार्वजनिक स्थान पर भी श्राद्ध करना चाहिये। दूसरे के घर में जो श्राद्ध किया जाता है तो श्राद्धकर्ता के पितर को कुछ भी नहीं प्राप्त होता, क्योंकि सब उस स्थान के स्वामित्व वाले(गृहस्वामी) के पितर बलात् छिन लेते हैं। दूसरे के प्रदेश में श्राद्ध करने पर प्रदेश स्वामी के पितर श्राद्ध कर्म का विनाश कर देते हैं। इसलिए तीर्थ में किये गये श्राद्ध से आठगुणा पुण्यदायक श्राद्ध अपने घर में करने से होता है। यदि किसी विवशता के कारण दूसरे के घर या भूमि पर श्राद्ध करना पड़े तो उसके स्वामी को भूमि का मूल्य अथवा किराया दे दिया जाये।

श्राद्ध न करने पर:- जहाँ श्राद्ध नहीं होता, उस कुल में दुर्बल, अल्पायु, रोगी, श्रेय नाशक, कुल को अपमानित करने वाले संतान उत्पन्न होते हैं। श्राद्ध न करने से विश्व के सभी भागों में प्राणी विचित्र रोगों, कष्टों से ग्रस्त रहता हैं। प्रेतबाधा,

अदृश्य उपद्रव से ग्रस्त लोगों पर दवा काम नहीं करती तो चिकित्सक उन्हें मानसिक केस कहकर छोड़ देते हैं। वे बेचारे भटकते रहते हैं। ऊपरी बाधा का जमावड़ा देखना हो तो मेहंदी बालाजी, पुष्कर तालाब, हरसू ब्रह्म, पिशाच मोचन, गया जी आदि स्थान पर जाकर देख सकते हैं। श्राद्ध न करने से वंश समाप्त होने का भय रहता है। रोगी होकर लोग अल्पायु होने लगते हैं और भूतपूजक बन जाते है। जिस वंश के पितरगण मुक्त नहीं होते उसके वंशधर मोक्ष नहीं प्राप्त कर सकते। मोक्ष तो दूर उनका पुनर्जन्म तक नहीं हो पाता। अंततः भागवत महापुराण का सप्ताह यज्ञ करना पड़ता है।

श्राद्ध से संबंधित आवश्यक जानकारी

1.एक खुरवाले का, ऊँटनी, मृगी का, भेड़ का, भैंस का दूध, चवरी गाय, तथा हाल की ब्यायी हुई गाय का दूध (दस दिन के भीतर) श्राद्ध में वर्जित है।

2. ब्रह्मा जी ने पशुओं की सृष्टि में सबसे पहले गाय की सृष्टि की। अत: श्राद्ध में गाय के दूध, दही, घृत(घी) को ही प्रयोग में लाना चाहिये।

3. श्राद्ध भूमि में सर्वत्र तिल बिखेरना चाहिये। इससे सभी असुरों से आक्रान्त भुमि शुद्ध हो जाती है।

4. श्राद्ध और हवन के समय एक हाथ से पिण्ड एवं आहुति दे, परंतु तर्पण दोनों हाथों से देना चाहिए।

5. श्राद्ध में अरहर, मसूर, गाजर, लहसुन, प्याज, बैंगन आदि एवं तामसी पदार्थ वर्जित है।

वास्तु शास्त्र

यहाँ पर कुछ वास्तुशास्त्र के सिद्धांत पर कुछ सरल और जीवनोपयोगी सूत्र दिये जा रहे हैं।

1. जिस भूमि का धनत्व न हो, जो मिट्टी ठोस न हो, जो दलदली हो, जमीन में दरारें हो, रेतीली हो, दीमक हो, पोली हो, जहाँ शल्य हो, उस भूमि पर घर नहीं बनाना चाहिये।

2. वर्गाकार, आयताकार, भद्रासन व वृताकार भूखण्ड पर सभी प्रकार के भवनों का निर्माण किया जा सकता है।

3. गोमुखी भूखण्ड आवास के लिए और सिंहमुखी भूखण्ड व्यवसाय के लिए शुभ है।

4. भूखण्ड की मिट्टी में पोली हो या शल्यदोष हो तो मिट्टी हटवाकर दूसरी मिट्टी डलवाकर भवन बनाना चाहिये।

5. भवनारम्भ में राहु मुख-पुँछ का विचार करके खात खोदने के पश्चात अग्निकोण में शिलान्यास करना चाहिये।

6. भूखण्ड का ढ़लान पूर्व, उत्तर, ईशानकोण में शुभ है।

7. भूखण्ड की ऊंचाई नैर्ऋत्य, पश्चिम, दक्षिण में शुभ है।

8. भूखण्ड के बीच में, नैर्ऋत्य में, पश्चिम में, आग्नेय में, पश्चिम में, दक्षिण में कुआँ, बोरिंग, भूमिगत टैंक, सैप्टिक टैंक या किसी भी प्रकार का गड्ढा शुभ नहीं है।

9. अपना भूखण्ड आसपास के जमीन से नीचा होना अशुभ और आसपास के जमीन से अपना जमीन ऊच्चा होना शुभ होता है।

10. भूखण्ड के पश्चिम, दक्षिण में ऊचे पेड़, पहाड़ी, चट्टान, टीला एवं ऊचे मकान होना शुभ है परन्तु उत्तर, पूर्व में होना अशुभ है।

11. निर्माण कार्य अग्निकोण से प्रारम्भ कर दक्षिण, पश्चिम, उत्तर, पूर्व की तरफ बढानी चाहिये।

12. निर्माण कार्य दक्षिणावर्त करते हुये, बढना चाहिये।

13. दक्षिण-पश्चिम में कम तथा उत्तर-पूर्व में अधिक खुली जगह छोड़नी चाहिये।

14. पुरानी भवन की समाग्री (ईंट, लकड़ी, खिड़की, दरवाजा आदि) का प्रयोग नये भवन में नहीं करना चाहिये। भवन में तीन से अधिक प्रकार की लकड़ी का प्रयोग नहीं करना चाहिये।

15. खुली छत के लिए भवन में उत्तर पूर्व दिशा अनुकूल होते हैं।

16. पश्चिम और दक्षिण में नौकरों का कमरा, पानी टंकी शुभ है।

17. दक्षिण और पश्चिम की दीवारें सदैव मोटी रखनी चाहिये।

18. भूखण्ड का प्रवेश द्वार उसी दिशा में बनाना चाहिये जिस दिशा में भवन का मुख्य द्वार हो।

19. भवन में द्वार पूर्व या उत्तर में रखना श्रेष्ठ है, पश्चिम में मध्यम तथा दक्षिण में अशुभ है। द्वार के ऊपर द्वार रखना सही नहीं है लेकिन तीन मंजिलों से अधिक ऊचे भवन में यह नियम लागू नहीं है।

20. भवन के द्वार पर कलश, लता, पत्र, सिंह, स्वस्तिक, ॐ, गणेश, शंकर और दुर्गाजी का कोई चित्र लगाया जाये वह शुभ है।

21. शयनकक्ष नैर्ऋत्यकोण में बनाना उत्तम रहता है। शयनकक्ष में मन्दिर कदापि नहीं रखना चाहिये।

22. उत्तर कि ओर सिर करके नहीं सोना चाहिये।

23. घर में दरवाजे एक सीध में दो से अधिक नहीं बनाने चाहिये।

24. पूजा कक्ष ईशान में, रसोईकक्ष आग्नेय में, भोजनकक्ष पश्चिम में, कोषकक्ष उत्तर में, अध्ययनकक्ष वायव्य, पूर्व, पश्चिम, उत्तर में, शयनकक्ष दक्षिण, पश्चिम, उत्तर, पूर्व में, स्नानागार पूर्व में बनवाना शुभ है।

25. भवन से जल, मल की निकासी वायव्य, उत्तर, पूर्व में होनी चाहिये।

26. जिन कन्याओं के विवाह में देर हो रही है, उनकों वायव्य कोण में शयन करना चाहिये।

27. शौचालय का निर्माण नैर्ऋत्यकोण में करना चाहिये। शौचालय का दरवाजा पूर्व या दक्षिण में रखना चाहिये।

28. गोबरगैस प्लांट उत्तर, ईशान, पूर्व या आग्नेय में रखना चाहिये।

29. शौचालय की सीट ऐसा रखना चाहिये कि शौच करते समय मुख उत्तर या दक्षिण की ओर हो।

30. कमरों में स्थायी रूप से रखी जाने वाली भारी समान दक्षिण-नैर्ऋत्य, नैर्ऋत्यको पश्चिम में रखना चाहिये।

31. सभी द्वार, खिड़कियों की उचाई एक समान सूत्र में होनी चाहिये।

32. व्यवसायिक भवन के समीप सिनेमा, चौराहे, सार्वजनिक स्थान, मंदिर रहना शुभ है।

33. मंदिर वास्तु में गर्भगृह, प्रांगण, द्वार एवं शिखर का निर्माण वास्तु के मतानुसार करना चाहिये।

34. सीढ़ियाँ दक्षिणावृत होना चाहिये। सीढ़ियों के नीचे अनुपयोगी समान रखने के लिए कोठरी बनाकर कर सकते हैं, परन्तु वह मंदिर, सोने के लिए उपयोग नहीं करना चाहिये।

35. पूर्व दिशा में स्नानघर बनाना शुभ है, लेकिन सम्मिलित शौच और स्नानघर बनाना शुभ नहीं है।

36. रसोई अथवा पूजा घर से लगा हुआ, द्वार के सामने या ऊपर शौचालय नहीं बनाना चाहिये।

37. घर के वास्तु दोष सुधारने के बाद, गृहवर्धन के बाद, मरम्मत के बाद, जीर्णोद्धार गृहप्रवेश में वास्तु शान्ति करना आवश्यक है।

38. भूखण्ड के पूर्व या उत्तर में कोई नदी या नहर हो तथा उसका प्रवाह उत्तर या पूर्व की ओर हो तो वह भूखण्ड शुभ है।

39. भूखण्ड के उत्तर, पूर्व, ईशान में भूमिगत जलस्रोत, कुआँ, तलाब, बावड़ी शुभ है।

40. घर के ईशान कोण में पूजा घर, कुआँ, बोरिंग, बच्चों का कमरा, भूमिगत वाटरटैंक शुभ है।

41. घर में दो शिवलिंग, दो शंख, दो सूर्य देव की प्रतिमा, दो गोमती चक्र, दो शालिग्राम, तीन गणेश तथा तीन देवी प्रतिमा नहीं रखनी चाहिये।

42. सीढ़ियों के नीचे पूजा घर, शौचालय, रसोई घर नहीं बनाना चाहिये।

43. घर में तिजोरी का मुख उत्तर दिशा की ओर रखना चाहिये।

कर्मकाण्ड विशेष

1.बिल्वपत्र न मिलने पर चढाये हुये बिल्वपत्र को धोकर चढाना चाहिये।

2. दूर्वा को अपनी ओर और बिल्वपत्र को नीचे मुख करके चढाना चाहिये।

3. अंगुष्ठ पर्व से लेकर बित्ता प्रमाण के प्रतिमा घर में रखनी चाहिये। इससे बड़ी नहीं।

4. गो, भूमि, तिल, स्वर्ण, घृत, वस्त्र, धान, गुड़, चाँदी और नमक । ये दस वस्तु दान के लिए कहा गया है।

5. जब गुरु, शुक्र बृद्ध, अस्त, बालक हो तथा अधिकमास, क्षयमास में बावली, तलाब, कुआँ, बोरिंग, मकान का आरम्भ और प्रतिष्ठा, व्रत का आरम्भ, उद्यापन, वधुप्रवेश, महादान, सोमयज्ञ, अष्टकाश्राद्ध, केशान्त संस्कार, देवप्रतिष्ठा, विवाह, यज्ञोपवीत, गुरूदिक्षा आदि नहीं करनी चाहिये।

6. यज्ञ में प्रतिदिन अपनी शक्ति के अनुसार ब्राह्मण का पूजन करना चाहिये, क्योंकि जबतक ब्राह्मणों का पूजन नहीं किया जाता तबतक यज्ञ पूर्ण नहीं होता।

7. पत्नी धर्म, अर्थ तथा काम की सिद्धि के लिए श्रेष्ठ साधन है। कोई भी पुरुष पत्नी-रहित यज्ञ नहीं कर सकता। धार्मिक कर्म करने योग्य नहीं हो सकता। जिसकी पत्नी दूर हो वह कुशा का पत्नी बनाकर नित्यकर्म करना चाहिये।

8. चन्दन किये किया गया कोई भी धार्मिक कार्य का फल प्राप्त नहीं होता। अतः चन्दन धारण करना आवश्यक है।

9. यज्ञ में पवित्री धारण करने से यज्ञ का फल हरण करने वाले असुर, दैत्य दसों दिशाओं में भाग जाते हैं।

10. नित्यकर्म में दो कुशों का, पितृकर्म में तीन, शान्ति कर्म में चार तथा पौष्टिक कर्म में पाँच कुशों का पवित्री धारण करना चाहिये।

11. द्विजों को शिखा और यज्ञोपवीत धारण करके धार्मिक कर्म करना चाहिये।

12. तीर्थस्नान, दान, व्रत, जप, होम आदि कोई भी सत्कर्म संकल्प करके करना चाहिये अन्यथा फल निष्फल हो जाता है।

13. गीले वस्त्र पहनकर अथवा दोनों हाथ घुटनों से बाहर करके किया गया जप, दान, होम निष्फल हो जाता है।

14. केश(शिखा) खोलकर आचमन तथा पूजन करना निषिद्ध है।

15. ताम्बा मंगलमय है। इसलिए ताम्बे के पात्र में जल आदि भगवान को अर्पण करना चाहिये।

16. पितृकर्म में चाँदी तथा देव कार्य में सोना का बहुत महत्व है।

17. पूजनादि कार्य में दीपक को स्पर्श करने के बाद हाथ धोना चाहिये।

18. शालिग्राम, तुलसी और शंख एक साथ रखने पर भगवान प्रसन्न होते हैं।

19. मनुष्य को चित्र में या घर में भगवान सूर्य के पैरों को नहीं बनवाना चाहिये।

20. कार्तवीर्य को दीप, सूर्य को नमस्कार, विष्णु को स्तुति, गणेश को तर्पण, दुर्गा को अर्चना और शिव जी को अभिषेक प्रिय है।

21. भगवान सूर्य से आरोग्य की, अग्नि से श्री की, शिव से ज्ञान की, विष्णु से मोक्ष, दुर्गा आदि से रक्षा, भैरव आदि से कठिनाइयों को पार करने की, सरस्वती से विद्या, लक्ष्मी से ऐश्वर्य-वृद्धि, पार्वती से सौभाग्य वृद्धि, शची से मंगलवृद्धि, स्कन्द से संतान और गणेश से सभी वस्तुओं की याचना करनी चाहिये।

भक्ष्याभक्ष्य

1. प्रतिपदा को कुष्माण्ड, द्वितीया को बृहति, तृतीया को परवल, चतुर्थी को मूली, पञ्चमी को बेल, षष्ठी को नीम (दातुन, पत्ती, फल आदि), सप्तमी को ताड़ का फल, अष्टमी को नारियल, नवमी को लौकी, दशमी को कलम्बी का शाक, एकादशी को शिम्बी(सेम), चावल, द्वादशी को पुतिका (पोई), त्रयोदशी को बैंगन, निषिद्ध है।

2. अमावस्या, पूर्णिमा, चतुर्दशी, अष्टमी, संक्रांति, रविवार और श्राद्ध के दिन तिल का तेल वर्जित है।

3. रविवार को अदरख और लाल रंग का शाक नहीं खाना चाहिये।

4. दूध के साथ मट्ठा नहीं खाना चाहिये।

5. ताम्बे के पात्र में दूध नहीं पीना चाहिये।

6. जुठी वस्तुओं में घी और नमक के साथ दूध नहीं खाना चाहिये।

7. ताम्बे के पात्र में घी और लोहे के पात्र में तेल दूषित नहीं होता।

8. लोहे के पात्र में जलपान की वस्तु नहीं रखनी चाहिये।

9. चाँदी के पात्र में रखा हुआ कपूर अभक्ष्य हो जाता है।

10. हाथ में दिया गया नमक, तेल, व्यञ्जन अभक्ष्य है।

11. बायें हाथ से भोजन नहीं परोसना चाहिये।

12. ताम्बे के पात्र में ईख का रस अभक्ष्य है।

13. ताम्बे के पात्र में घी को छोड़कर अन्य गव्य पदार्थ नहीं रखना चाहिये।

14. लहसुन, प्याज, शलगम, गाजर, कुकुरमुत्ता, सफेद बैंगन, लाल मूली और अपवित्र स्थान(शमशानादि) में उत्पन्न शाक अभक्ष्य होते हैं।

15. गाय ब्याने से सात दिन तक का दूध त्याज्य है।

विवाह से संबंधित आवश्यक जानकारी

गृहस्थाश्रम का मुख्य आधार विवाह संस्कार है। यही चतुर्वर्ग फल प्राप्ति का आधार भी है। इस संस्कार के उपरांत ही मनुष्य संतानोत्पत्ति के साथ देवर्षिपितृ ऋणों से मुक्ति प्राप्त करता है। विवाह आठ प्रकार के होते हैं, जिसमें से "ब्रह्म विवाह" विधि से विवाह करना उत्तम होता है।



१. मातृपक्ष से पाँचवीं तथा पितृपक्ष से सातवीं पीढ़ी तक जिस कन्या का सम्बन्ध न हो उसीसे पुरुष को विवाह करना चाहिये।

२. विवाह स्व-वर्ण में ही करना चाहिये।

३. अपने पुत्र के साथ जिसकी पुत्री का विवाह हो उसके पुत्र से अपनी पुत्री का विवाह नहीं करना चाहिये।

४. विवाह में ज्येष्ठ लड़का, ज्येष्ठ लड़की और ज्येष्ठ मास- ये तीनों नहीं होना चाहिये।

५. विवाह संस्कार में (मेलापक के लिये) जन्मराशि का विचार करना चाहिये।

विवाहे सर्वमाङ्गल्ये यात्रायां ग्रहगोचरे।

जन्मराशेः प्रधानत्वं नामराशिं न चिन्तयेत्॥

६. वर-कन्या की कुण्डली का मिलान करने पर १६ गुण तक निन्द्य, २० गुण तक मध्यम, ३० गुण तक उत्तम तथा इससे अधिक गुण उत्तमोत्तम होता है।

गुणाः षोडशभिर्न्यूना निन्द्या मध्यास्तु विंशतिः।

श्रेष्ठास्त्रिंशद्गुणाः प्रोक्ताः परतस्तुत्तमोत्तमाः॥

७. मेलापक में ग्रह मैत्री प्राप्त होने पर सभी कूटदोष समाप्त हो जाते हैं। यदि वर-



कन्या के राशीश के मैत्री न होने पर भी राशिनवांशेश परस्पर मित्र हो तो विवाह शुभदायक होता है।

न वर्ग वर्णो न गुणो न योनिर्द्विर्द्वादशे चैव षडष्टके वा।

ताराविरुद्धे नवपञ्चमे वा मैत्री यदा स्याच्छुभदोविवाहः ॥

मैत्र्यां राशिस्वामिनोरंशनाथद्वन्द्वस्याऽपि स्याद्गणानां न दोषः।

खेटारित्वं नाशयेत् सद्भकूटं खेटप्रीतिश्चाऽपिदुष्टं भकूटम्॥

॥ गुरुस्तोत्रम् ॥

अखण्डमण्डलाकारं व्याप्तं येन चराचरम् ।

तत्पदं दर्शितं येन तस्मै श्रीगुरवे नमः ॥ १॥

अज्ञानतिमिरान्धस्य ज्ञानाञ्जनशलाकया ।

चक्षुरुन्मीलितं येन तस्मै श्रीगुरवे नमः ॥ २॥

गुरुर्ब्रह्मा गुरुर्विष्णुः गुरुर्देवो महेश्वरः ।

गुरुरेव परं ब्रह्म तस्मै श्रीगुरवे नमः ॥ ३॥

स्थावरं जङ्गमं व्याप्तं यत्किञ्चित्सचराचरम् ।

तत्पदं दर्शितं येन तस्मै श्रीगुरवे नमः ॥ ४॥

चिन्मयं व्यापि यत्सर्वं त्रैलोक्यं सचराचरम् ।

तत्पदं दर्शितं येन तस्मै श्रीगुरवे नमः ॥ ५॥

सर्वश्रुतिशिरोरत्नविराजितपदाम्बुजः ।

वेदान्ताम्बुजसूर्यो यः तस्मै श्रीगुरवे नमः ॥ ६॥

चैतन्यश्शाश्वतश्शान्तः व्योमातीतो निरञ्जनः ।

बिन्दुनादकलातीतः तस्मै श्रीगुरवे नमः ॥ ७॥

ज्ञानशक्तिसमारूढः तत्त्वमालाविभूषितः ।

भुक्तिमुक्तिप्रदाता च तस्मै श्रीगुरवे नमः ॥ ८॥

अनेकजन्मसम्प्राप्तकर्मबन्धविदाहिने ।

आत्मज्ञानप्रदानेन तस्मै श्रीगुरवे नमः ॥ ९॥

शोषणं भवसिन्धोश्च ज्ञापनं सारसम्पदः ।

गुरोः पादोदकं सम्यक् तस्मै श्रीगुरवे नमः ॥ १०॥

न गुरोरधिकं तत्त्वं न गुरोरधिकं तपः ।

तत्त्वज्ञानात् परं नास्ति तस्मै श्रीगुरवे नमः ॥ ११॥

मन्नाथः श्रीजगन्नाथः मद्गुरुः श्रीजगद्गुरुः ।

मदात्मा सर्वभूतात्मा तस्मै श्रीगुरवे नमः ॥ १२॥

गुरुरादिरनादिश्च गुरुः परमदैवतम् ।

गुरोः परतरं नास्ति तस्मै श्रीगुरवे नमः ॥ १३॥

त्वमेव माता च पिता त्वमेव । त्वमेव बन्धुश्च सखा त्वमेव

त्वमेव विद्या द्रविणं त्वमेव । त्वमेव सर्वं मम देवदेव ॥ १४॥

॥ गणेशस्तोत्रम्॥

मुदाकरात्तमोदकं सदाविमुक्तिसाधकं
कलाधरावतंसकं विलासिलोकरक्षकम् ।
अनायकैकनायकं विनाशितेभदैत्यकं
नताऽशुभाऽऽशुनाशकं नमामि तं विनायकम् ॥ १॥

नतेतरातिभीकरं नवोदितार्कभास्वरं
नमत्सुरारिनिर्जरं नताधिकापदुद्धरम् ।
सुरेश्वरं निधीश्वरं गजेश्वरं गणेश्वरं
महेश्वरं तमाश्रये परात्परं निरन्तरम् ॥ २॥

समस्तलोकशङ्करं निरस्तदैत्यकुञ्जरं
दरेतरोदरं वरं वरेभवक्त्रमक्षरम् ।
कृपाकरं क्षमाकरं मुदाकरं यशस्करं
मनस्करं नमस्कृतां नमस्करोमि भास्वरम् ॥ ३॥

अकिञ्चनार्तिमार्जनं चिरन्तनोक्तिभाजनं
पुरारिपूर्वनन्दनं सुरारिगर्वचर्वणम् ।
प्रपञ्चनाशभीषणं धनञ्जयादिभूषणं
कपोलदानवारणं भजे पुराणवारणम् ॥ ४॥

नितान्तकान्तदन्तकान्तिमन्तकान्तकात्मजं
अचिन्त्यरूपमन्तहीनमन्तरायकृन्तनम् ।
हृदन्तरे निरन्तरं वसन्तमेव योगिनां
तमेकदन्तमेव तं विचिन्तयामि सन्ततम् ॥ ५॥

महागणेशपञ्चरत्नमादरेण योऽन्वहं
प्रगायति प्रभातके हृदि स्मरन् गणेश्वरम् ।
अरोगतामदोषतां सुसाहितीं सुपुत्रतां
समाहितायुरष्टभूतिमभ्युपैति सोऽचिरात् ॥ ६॥

॥ मधुराष्टकम् ॥

अधरं मधुरं वदनं मधुरं नयनं मधुरं हसितं मधुरम् ।

हृदयं मधुरं गमनं मधुरं मधुराधिपतेरखिलं मधुरम् ॥ १॥

वचनं मधुरं चरितं मधुरं वसनं मधुरं वलितं मधुरम् ।

चलितं मधुरं भ्रमितं मधुरं मधुराधिपतेरखिलं मधुरम् ॥ २॥

वेणुर्मधुरो रेणुर्मधुरः पाणिर्मधुरः पादौ मधुरौ ।

नृत्यं मधुरं सख्यं मधुरं मधुराधिपतेरखिलं मधुरम् ॥ ३॥

गीतं मधुरं पीतं मधुरं भुक्तं मधुरं सुप्तं मधुरम् ।

रूपं मधुरं तिलकं मधुरं मधुराधिपतेरखिलं मधुरम् ॥ ४॥

करणं मधुरं तरणं मधुरं हरणं मधुरं रमणं मधुरम् ।

वमितं मधुरं शमितं मधुरं मधुराधिपतेरखिलं मधुरम् ॥ ५॥

गुञ्जा मधुरा माला मधुरा यमुना मधुरा वीची मधुरा ।

सलिलं मधुरं कमलं मधुरं मधुराधिपतेरखिलं मधुरम् ॥ ६॥

गोपी मधुरा लीला मधुरा युक्तं मधुरं मुक्तं मधुरम् ।

दृष्टं मधुरं शिष्टं मधुरं मधुराधिपतेरखिलं मधुरम् ॥ ७॥

गोपा मधुरा गावो मधुरा यष्टिर्मधुरा सृष्टिर्मधुरा ।

दलितं मधुरं फलितं मधुरं मधुराधिपतेरखिलं मधुरम् ॥ ८॥

॥ द्वादशज्योतिर्लिङ्गस्तोत्रम् ॥

सौराष्ट्रदेशे विशदेऽतिरम्ये ज्योतिर्मयं चन्द्रकलावतंसम् ।

भक्तिप्रदानाय कृपावतीर्णं तं सोमनाथं शरणं प्रपद्ये ॥ १॥

श्रीशैलशृङ्गे विबुधातिसङ्गे तुलाद्रितुङ्गेऽपि मुदा वसन्तम् ।

तमर्जुनं मल्लिकपूर्वमेकं नमामि संसारसमुद्रसेतुम् ॥ २॥

अवन्तिकायां विहितावतारं मुक्तिप्रदानाय च सज्जनानाम् ।

अकालमृत्योः परिरक्षणार्थं वन्दे महाकालमहासुरेशम् ॥ ३॥

कावेरिकानर्मदयोः पवित्रे समागमे सज्जनतारणाय ।

सदैवमान्धातृपुरे वसन्तमोङ्कारमीशं शिवमेकमीडे ॥ ४॥

पूर्वोत्तरे प्रज्वलिकानिधाने सदा वसन्तं गिरिजासमेतम् ।

सुरासुराराधितपादपद्मं श्रीवैद्यनाथं तमहं नमामि ॥ ५॥

याम्ये सदङ्गे नगरेऽतिरम्ये विभूषिताङ्गं विविधैश्च भोगैः ।

सद्भक्तिमुक्तिप्रदमीशमेकं श्रीनागनाथं शरणं प्रपद्ये ॥ ६॥

महाद्रिपार्श्वे च तटे रमन्तं सम्पूज्यमानं सततं मुनीन्द्रैः ।

सुरासुरैर्यक्ष महोरगाद्यैः केदारमीशं शिवमेकमीडे ॥ ७॥

सह्याद्रिशीर्षे विमले वसन्तं गोदावरितीरपवित्रदेशे ।

यद्दर्शनात्पातकमाशु नाशं प्रयाति तं त्र्यम्बकमीशमीडे ॥ ८॥

सुताम्रपर्णीजलराशियोगे निबध्य सेतुं विशिखैरसंख्यैः ।

श्रीरामचन्द्रेण समर्पितं तं रामेश्वराख्यं नियतं नमामि ॥ ९॥

यं डाकिनिशाकिनिकासमाजे निषेव्यमाणं पिशिताशनैश्च ।

सदैव भीमादिपदप्रसिद्धं तं शङ्करं भक्तहितं नमामि ॥ १०॥

सानन्दमानन्दवने वसन्तमानन्दकन्दं हतपापवृन्दम् ।

वाराणसीनाथमनाथनाथं श्रीविश्वनाथं शरणं प्रपद्ये ॥ ११॥

इलापुरे रम्यविशालकेऽस्मिन् समुल्लसन्तं च जगद्वरेण्यम् ।

वन्दे महोदारतरस्वभावं घृष्णेश्वराख्यं शरणम् प्रपद्ये ॥ १२॥

ज्योतिर्मयद्वादशलिङ्गकानां शिवात्मनां प्रोक्तमिदं क्रमेण ।

स्तोत्रं पठित्वा मनुजोऽतिभक्त्या फलं तदालोक्य निजं भजेच्च ॥

॥ भवान्यष्टकम्॥

न तातो न माता न बन्धुर्न दाता

न पुत्रो न पुत्री न भृत्यो न भर्ता ।

न जाया न विद्या न वृत्तिर्ममैव

गतिस्त्वं गतिस्त्वं त्वमेका भवानि ॥ १॥

भवाब्धावपारे महादुःखभीरु

प्रपात प्रकामी प्रलोभी प्रमत्तः ।

कुसंसारपाशप्रबद्धः सदाहं

गतिस्त्वं गतिस्त्वं त्वमेका भवानि ॥ २॥

न जानामि दानं न च ध्यानयोगं

धर्मरक्षापञ्चाङ्गम्

न जानामि तन्त्रं न च स्तोत्रमन्त्रम् ।
न जानामि पूजां न च न्यासयोगं
गतिस्त्वं गतिस्त्वं त्वमेका भवानि ॥ ३॥

न जानामि पुण्यं न जानामि तीर्थं
न जानामि मुक्तिं लयं वा कदाचित् ।
न जानामि भक्तिं व्रतं वापि मातर्-
गतिस्त्वं गतिस्त्वं त्वमेका भवानि ॥ ४॥

कुकर्मी कुसङ्गी कुबुद्धिः कुदासः
कुलाचारहीनः कदाचारलीनः ।
कुदृष्टिः कुवाक्यप्रबन्धः सदाहं
गतिस्त्वं गतिस्त्वं त्वमेका भवानि ॥ ५॥

प्रजेशं रमेशं महेशं सुरेशं
दिनेशं निशीथेश्वरं वा कदाचित् ।
न जानामि चान्यत् सदाहं शरण्ये
गतिस्त्वं गतिस्त्वं त्वमेका भवानि ॥ ६॥

विवादे विषादे प्रमादे प्रवासे
जले चानले पर्वते शत्रुमध्ये ।
अरण्ये शरण्ये सदा मां प्रपाहि
गतिस्त्वं गतिस्त्वं त्वमेका भवानि ॥ ७॥

अनाथो दरिद्रो जरारोगयुक्तो
महाक्षीणदीनः सदा जाड्यवक्त्रः ।
विपत्तौ प्रविष्टः प्रनष्टः सदाहं
गतिस्त्वं गतिस्त्वं त्वमेका भवानि ॥ ८॥

॥ नवग्रहस्तोत्रम्॥

जपाकुसुमसंकाशं काश्यपेयं महाद्युतिम् ।
तमोऽरिं सर्वपापघ्नं प्रणतोऽस्मि दिवाकरम् ॥ १॥
दधिशङ्खतुषाराभं क्षीरोदार्णवसंभवम् ।

धर्मरक्षापञ्चाङ्गम्

नमामि शशिनं सोमं शम्भोर्मुकुटभूषणम् ॥ २॥

धरणीगर्भसंभूतं विद्युत्कान्तिसमप्रभम् ।

कुमारं शक्तिहस्तं तं मङ्गलं प्रणमाम्यहम् ॥ ३॥

प्रियङ्गुकलिकाश्यामं रूपेणाप्रतिमं बुधम् ।

सौम्यं सौम्यगुणोपेतं तं बुधं प्रणमाम्यहम् ॥ ४॥

देवानां च ऋषीणां च गुरुं काञ्चनसंनिभम् ।

बुद्धिभूतं त्रिलोकेशं तं नमामि बृहस्पतिम् ॥ ५॥

हिमकुन्दमृणालाभं दैत्यानां परमं गुरुम् ।

सर्वशास्त्रप्रवक्तारं भार्गवं प्रणमाम्यहम् ॥ ६॥

नीलांजनसमाभासं रविपुत्रं यमाग्रजम् ।

छायामार्तण्डसंभूतं तं नमामि शनैश्चरम् ॥ ७॥

अर्धकायं महावीर्यं चन्द्रादित्यविमर्दनम् ।

सिंहिकागर्भसंभूतं तं राहुं प्रणमाम्यहम् ॥ ८॥

पलाशपुष्पसंकाशं तारकाग्रहमस्तकम् ।

रौद्रं रौद्रात्मकं घोरं तं केतुं प्रणमाम्यहम् ॥ ९॥

इति व्यासमुखोद्गीतं यः पठेत्सुसमाहितः ।

दिवा वा यदि वा रात्रौ विघ्नशान्तिर्भविष्यति ॥ १०॥

॥ श्रीगणेश आरती ॥

जय गणेश जय गणेश जय गणेश देवा ।

माता जाकी पारवती पिता महादेवा ॥

एकदन्त दयावन्त चारभुजाधारी ।

माथे पर तिलक सोहे मूषक सवारी ॥

पान चढ़े फल चढ़े और चढ़े मेवा ।

लड्डुअन का भोग लगे सन्त करें सेवा ॥

अन्धन को आँख देत कोढ़िन को काया ।

बाँझन को पुत्र देत निर्धन को माया ॥

सूर श्याम शरण आए सफल कीजे सेवा ।

माता जाकी पारवती पिता महादेवा ॥

॥ शिवजी की आरती॥

ॐ जय शिव ओंकारा, स्वामी जय शिव ओंकारा।

ब्रह्मा विष्णु सदा शिव, अर्द्धांगी धारा ॥ ॐ हर हर हर महादेव...॥

एकानन चतुरानन, पंचानन राजे।

हंसानन गरुड़ासन, वृषवाहन साजे ॥ ॐ हर हर हर महादेव..॥

दोय भुज चार चतुर्भुज, दसभुज अति सोहे।

तीनों रूप निरखता, त्रिभुवन जन मोहे ॥ ॐ हर हर हर महादेव..॥

अक्षमाला वनमाला, मुण्डमाला धारी।

चंदन मृगमद चन्दा, भोले शशिधारी ॥ ॐ हर हर हर महादेव..॥

श्वेताम्बर पीताम्बर, बाघम्बर अंगे।

सनकादिक ब्रह्मादिक, भूतादिक संगे ॥ ॐ हर हर हर महादेव..॥

कर मध्ये तु कमण्डलु, चक्र त्रिशूल धर्ता।

जगकर्ता जगभर्ता, जगपालन करता ॥ ॐ हर हर हर महादेव..॥

ब्रह्मा विष्णु सदाशिव, जानत अविवेका।

प्रणवाक्षर के मध्ये, ये तीनों एका ॥ ॐ हर हर हर महादेव..॥

काशी में विश्वनाथ विराजे नन्दी ब्रह्मचारी।

नित उठ भोग लगावत, महिमा अति भारी ॥ ॐ हर हर हर महादेव..॥

त्रिगुण शिवजीकी आरती, जो कोई नर गावे।

कहत शिवानन्द स्वामी, मनवांछित फल पावे ॥ ॐ हर हर हर महादेव..॥

॥ माँ अम्बाजी की आरती॥

जय अम्बे गौरी, मैया जय श्यामा गौरी।

तुम को निशिदिन ध्यावत, हरि ब्रह्मा शिवजी॥ १ ॥ जय अम्बे गौरी ..

माँग सिन्दूर विराजत, टीको मृग मद को।

उज्ज्वल से दोउ नैना, चन्द्रवदन नीको॥ २ ॥ जय अम्बे गौरी ..

कनक समान कलेवर, रक्ताम्बर राजै।

रक्तपुष्प गले माला, कण्ठनपर साजै॥ ३ ॥ जय अम्बे गौरी ..

केहरि वाहन राजत, खड्ग खपरधारी।

सुर नर मुनि जन सेवत, तिनके दुखहारी॥ ४ ॥ जय अम्बे गौरी ..

कानन कुण्डल शोभित, नासाग्रे मोती।

कोटिक चन्द्र दिवाकर, सम राजत ज्योति॥ ५ ॥ जय अम्बे गौरी ..

शम्भु निशम्भु विदारे, महिषासुरघाती।

धूम्र विलोचन नैना, निशिदिन मदमाती॥ ६ ॥ जय अम्बे गौरी ..

चण्ड मुण्ड संहारे, शोणितबीज हरे।

मधु कैटभ दोउ मारे, सुर भय दूर करे॥ ७ ॥ जय अम्बे गौरी ..

ब्रह्माणी रुद्राणी, तुम कमलारानी।

आगम निगम बखानी, तुम शिव पटरानी॥ ८ ॥ जय अम्बे गौरी ..

चौंसठ योगिनि गावत, नृत्य करत भैरूँ।

बाजत ताल मृदंगा, और बाजत डमरू॥ ९ ॥ जय अम्बे गौरी ..

तुम ही जग की माता, तुम ही हो भरता।

भक्तन की दुख हरता, सुख सम्पति करता॥ १० ॥ जय अम्बे गौरी ..

भुजा चार अति शोभित, वर मुद्रा धारी।

मन वाँछित फल पावत, सेवत नर नारी॥ ११ ॥ जय अम्बे गौरी ..

कंचन थाल विराजत, अगर कपूर बाती।

(श्री)माल केतु में राजत, कोटि रतन ज्योती॥ १२ ॥ जय अम्बे गौरी ..

माँ अम्बे की आरती जो कोई नर गावै।

कहत शिवानन्द स्वामी, सुख सम्पति पावै॥ १३ ॥ जय अम्बे गौरी ..

हनुमान चालीसा

दोहा

श्रीगुरु चरन सरोज रज निज मनु मुकुरु सुधारि ।

बरनऊँ रघुबर बिमल जसु जो दायकु फल चारि ॥

बुद्धिहीन तनु जानिके सुमिरौं पवनकुमार ।

बल बुद्धि बिद्या देहु मोहिं हरहु कलेस बिकार ॥

चौपाई

धर्मरक्षापञ्चाङ्गम्



राम दूत अतुलित बल धामा। अंजनिपुत्र पवनसुत नामा॥

महाबीर बिक्रम बजरंगी। कुमति निवार सुमति के संगी॥

कंचन बरन बिराज सुबेसा। कानन कुंडल कुंचित केसा॥

हाथ बज्र औ ध्वजा बिराजै। काँधे मूँज जनेऊ साजै॥

संकर सुवन केसरीनंदन। तेज प्रताप महा जग बंदन॥

विद्यावान गुनी अति चातुर। राम काज करिबे को आतुर॥

प्रभु चरित्र सुनिबे को रसिया। राम लखन सीता मन बसिया॥

सूक्ष्म रूप धरि सियहिं दिखावा। बिकट रूप धरि लंक जरावा॥

भीम रूप धरि असुर सँहारे। रामचंद्र के काज सँवारे॥

लाय सजीवन लखन जियाये। श्रीरघुबीर हरषि उर लाये॥

रघुपति कीन्ही बहुत बड़ाई। तुम मम प्रिय भरतहि सम भाई॥

सहस बदन तुम्हरो जस गावैं। अस कहि श्रीपति कंठ लगावैं॥

सनकादिक ब्रह्मादि मुनीसा। नारद सारद सहित अहीसा॥

जम कुबेर दिगपाल जहाँ ते। कबि कोबिद कहि सके कहाँ ते॥

तुम उपकार सुग्रीवहिं कीन्हा । राम मिलाय राज पद दीन्हा ॥

तुम्हरो मंत्र बिभीषन माना । लंकेस्वर भए सब जग जाना ॥

जुग सहस्र जोजन पर भानू । लील्यो ताहि मधुर फल जानू ॥

प्रभु मुद्रिका मेलि मुख माहीं । जलधि लाँघि गये अचरज नाहीं ॥

दुर्गम काज जगत के जेते । सुगम अनुग्रह तुम्हरे तेते ॥

राम दुआरे तुम रखवारे । होत न आज्ञा बिनु पैसारे ॥

सब सुख लहै तुम्हारी सरना । तुम रच्छक काहू को डर ना ॥

आपन तेज संहारो आपै । तीनों लोक हाँक तें काँपै ॥

भूत पिसाच निकट नहिं आवै । महाबीर जब नाम सुनावै ॥

नासै रोग हरै सब पीरा । जपत निरंतर हनुमत बीरा ॥

संकट तें हनुमान छुड़ावै । मन क्रम बचन ध्यान जो लावै ॥

सब पर राम तपस्वी राजा । तिन के काज सकल तुम साजा ॥

और मनोरथ जो कोई लावै । सोई अमित जीवन फल पावै ॥

चारों जुग परताप तुम्हारा । है परसिद्ध जगत उजियारा ॥

साधु संत के तुम रखवारे । असुर निकंदन राम दुलारे ॥

अष्ट सिद्धि नौ निधि के दाता । अस बर दीन जानकी माता ॥

राम रसायन तुम्हरे पासा । सदा रहो रघुपति के दासा ॥

तुम्हरे भजन राम को पावै । जनम जनम के दुख बिसरावै ॥

अंत काल रघुबर पुर जाई । जहाँ जन्म हरिभक्त कहाई ॥

और देवता चित्त न धरई । हनुमत सेई सर्ब सुख करई ॥

संकट कटै मिटै सब पीरा । जो सुमिरै हनुमत बलबीरा ॥

जै जै जै हनुमान गोसाईं । कृपा करहु गुरु देव की नाईं ॥

जो सत बार पाठ कर कोई । छूटहि बंदि महा सुख होई ॥

जो यह पढ़ै हनुमान चलीसा । होय सिद्धि साखी गौरीसा ॥

तुलसीदास सदा हरि चेरा । कीजै नाथ हृदय मँह डेरा ॥

दोहा

पवनतनय संकट हरन मंगल मूरति रूप ।

राम लखन सीता सहित हृदय बसहु सुर भूप ॥

धर्मरक्षापञ्चाङ्गम्

उच्चारण स्थान	वर्ण
कण्ठ	अ, आ, क, ख, ग, घ, ङ, ह, विसर्ग
तालु	इ, ई, च, छ, ज, झ, ञ, य, श,
मूर्धा	ऋ, ॠ, ट, ठ, ड, ढ, ण, र, ष
दन्त	लृ, त, थ, द, ध, न, ल, स
ओष्ठ	उ, ऊ, प, फ, ब, भ, म
नासिका	ङ, ञ, ण, न, म, अनुस्वार
जिह्वामूल	क्, ख्
कण्ठ-तालु	ए, ऐ
कण्ठ-ओष्ठ	ओ, औ
दन्त-ओष्ठ	व

धर्मरक्षापञ्चाङ्गम्

शास्त्रज्ञान	
एक सत्य	मृत्यु
दो पक्ष	कृष्ण, शुक्ल
दो ऊर्जा	सकारात्मक, नकारात्मक
दो अयन	उत्तरायण, दक्षिणायन
त्रिकाल	भूत, भविष्य, वर्तमान
तीन संध्या	प्रातः, मध्याह्न, सायं
तीन भोजन	सात्विक, राजसी, तामसी
चारवेद	ऋग्वेद, यजुर्वेद, सामवेद, अथर्ववेद
चारनीति	साम, दाम, दण्ड, भेद
चार आश्रम	ब्रह्मचर्य, गृहस्थ, वानप्रस्थ, सन्यास
चार युग	सतयुग, त्रेता, द्वापर, कलियुग
चार परिमाण	अणु, महत्, दीर्घ, ह्रस्व
पञ्चामृत	दूध, दही, घी, मधु, शक्कर
पञ्चतत्व	पृथ्वी, जल, अग्नि, अंतरिक्ष, वायु
पञ्चज्ञानेन्द्रिया	कान, नाक, आँख, जिह्वा, त्वचा
पञ्चोपचार	गन्ध, पुष्प, धूप, दीप, नैवेद्य
पञ्चमहायज्ञ	ब्रह्म, देव, अतिथि, पितृ, भूत
पञ्चकन्या	अहल्या, द्रोपदी, तारा, कुन्ती, मन्दोदरी
पंचवायु	प्राण, अपान, व्यान, उदान, समान
छ: वेदाङ्ग शास्त्र	शिक्षा, कल्प, व्याकरण, निरुक्त, छन्द, ज्योतिष
छ: दर्शन शास्त्र	सांख्य, योग, न्याय, वैशेषिक, मीमांसा, वेदान्त
छ: ऋतु	वसन्त, ग्रीष्म, वर्षा, शरद्, हेमन्त, शिशिर
सप्तपदार्थ	द्रव्य, गुण, कर्म, सामान्य, विशेष, समवाय, अभाव
सप्तनदी	गंगा, यमुना, गोदावरी, सरस्वती, नर्मदा, सिन्धु, कावेरी
सप्तर्षि	**मरीचि, अंगिरा, अत्रि, पुलस्त्य, पुलह, क्रतु, वशिष्ठ**
सप्त सागर	**क्षीर, लवण, दधि, घृत, मद्य, इक्षु, स्वादु**
सप्तधान्य	**जौ, गेहूँ, धान, तिल, टाँगुन, साँवा तथा चना**

धर्मरक्षापञ्चाङ्गम्

सप्तघृतमातृका	**श्री, लक्ष्मी, धृति, मेधा, पुष्टि, श्रद्धा, सरस्वती**
सप्ताह(सात दिन)	रविवार, सोमवार, मंगलवार, बुधवार, गुरुवार, शुक्रवार, शनिवार
अष्टांगयोग	यम, नियम, आसन, प्राणायाम, प्रत्याहार, ध्यान, धारणा, समाधि
अष्टगन्ध	चन्दन, अगरु, कपूर, कचूर, कुंकुम, गोरोचन, जटामांसी, रक्तचन्दन
अष्टसिद्धि	अणिमा, महिमा, लघिमा, प्राप्ति, प्राकाम्य, ईशिता, वशिता, ख्याति
अष्ट चिरञ्जीवी	अश्वत्थामा, बलि, व्यास, हनुमान, विभीषण, कृपाचार्य, परशुराम, मार्कण्डेय
नवारण्य	**दण्डक, सैन्धव, पुष्कर, नैमिष, कुर्व, उत्पलवर्तक, जम्बूमार्ग, हिमवरद, अर्बुद**
नवग्रह	सूर्य, चन्द्र, मंगल, बुध, गुरु, शुक्र, शनि, राहु, केतु
नवाधिदेवता	शिव, पार्वती, स्कन्द, विष्णु, ब्रह्मा, इन्द्र, यम, काल, चित्रगुप्त
नव प्रत्यधिदेवता	अग्नि, जल, पृथ्वी, विष्णु, इन्द्र, इन्द्राणी, प्रजापति, सर्प, ब्रह्मा
नव द्रव्य	पृथ्वी, जल, तेज, वायु, आकाश, काल, दिक्, आत्मा, मन
नवदुर्गा	शैलपुत्री, ब्रह्मचारिणी, चन्द्रघण्टा, कुष्मांडा, स्कन्दमाता, कात्यायनी, कालरात्रि, महागौरी, सिद्धिदात्री
दश दिशा	पूर्व, अग्निकोण, दक्षिण, नैर्ऋत्यकोण, पश्चिम, वायव्यकोण, उत्तर, ईशानकोण, ऊपर, नीचे
दश उपनिषद्	ईश, केन, कठ, प्रश्न, मुण्डक, माण्डूक्य, तैत्तिरीय, ऐतरेय, छान्दोग्य, बृहदारण्यक
दश महादान	गाय, भूमि, तिल, सोना, घी, वस्त्र, धान्य, गुड़, चाँदी तथा नमक
दशदिक्पाल	इन्द्र, अग्नि, यम, निर्ऋति, वरुण, वायु, कुबेर, ईशान, ब्रह्मा, अनन्त
दशावतार	मत्स्य, कच्छप, वाराह, नृसिंह, वामन, परशुराम,श्रीराम, श्रीकृष्ण, बुद्ध, कल्कि
एकादशरुद्र	कपाली, पिङ्गल, भीम, विरूपाक्ष, विलोहत, शास्ता, अजपाद, अहिर्बुध्न्य, शम्भु, चण्ड, भव
द्वादशादित्य	मित्र, रवि, सूर्य, भानु, खग, पूष्णे, हिरण्यगर्भ, मरीचि, आदित्य, सवित्र, अर्क, भास्कर
बारह माह	चैत्र, बैशाख, ज्येष्ठ, आषाढ़, श्रावण, भाद्रपद, आश्विन, कार्तिक, मार्गशीर्ष, पौष, माघ, फाल्गुन
द्वादश ज्योतिर्लिंग	सोमनाथ, मल्लिकार्जुन, महाकालेश्वर, ओंकारेश्वर, केदारनाथ, भीमशंकर, विश्वनाथ, त्र्यम्बकेश्वर, वैद्यनाथ, नागेश्वर, रामेश्वर, घुश्मेश्वर
बारह राशि	मेष, वृष, मिथुन, कर्क, सिंह, कन्या, तुला, वृश्चिक, धनु, मकर, कुम्भ, मीन
षोडशसंस्कार	गर्भाधान, पुंसवन, सीमन्तोन्नयन, जातकर्म, नामकरण, निष्क्रमण, अन्नप्राशन, चूडाकर्म, कर्णवेध, अक्षरारम्भ, उपनयन, वेदारम्भ, केशान्त, समावर्तन, विवाह, अन्त्येष्टि
षोडश मातृका	गौरी, पद्मा, शची, मेधा, सावित्री, विजया, जया, देशसेना, स्वधा, स्वाहा, मातरः, लोकमातरः, धृतिः, पुष्टिः, तुष्टिः, आत्मनः कुलदेवता
अष्टादशपुराण	अग्नि, कूर्म, गरुड़, नारद, पद्म, भविष्य, भागवत, मत्स्य, मार्कण्डेय, ब्रह्म, ब्रह्माण्ड, ब्रह्मवैवर्त, लिंग, वराह, वामन, वायु, विष्णु, स्कन्द
चतुर्विंशतिगुणाः (चौबीस गुण)	रस, रूप, गन्ध, स्पर्श, संख्या, परिमाण, पृथकत्व, संयोग, विभाग, परत्व, अपरत्व, गुरूत्व, द्रवत्व, स्नेह, शब्द, बुद्धि, सुख, दुःख, इच्छा, द्वेष, प्रयत्न, धर्म, अधर्म, संस्कार
सताइस नक्षत्र	अश्विनी, भरणी, कृतिका, रोहिणी, मृगशिरा आर्द्रा, पुनर्वसु, पुष्य, श्लेषा, मघा, पू.फा., उ. फा., हस्त, चित्रा, स्वाती, विशाखा, अनुराधा, ज्येष्ठा, मूल, पू.षा., उ. षा., श्रवण, धनिष्ठा, शतभिषा, पू.भा., उ. भा., रेवती


जगन्नाथ जी की रथयात्रा
NIGAM PATRA


सूर्य मंदिर, मोढेरा


प्रेम मंदिर, वृन्दावन


गणपति मंदिर, महाराष्ट्र


अन्नपूर्णेश्वरी मंदिर, कर्नाटक



लक्ष्मीनारायण स्वर्ण मंदिर, तमिलनाडु

यमुनोत्री और गंगोत्री धाम


अम्बिका माता मंदिर, राजस्थान



यद्रादी मंदिर, तेलंगाना


बदरीनाथ धाम


सोमनाथ मंदिर, सौराष्ट्र


बगलामुखी मंदिर, उत्तराखंड



दक्षिणेश्वरी काली मंदिर, पश्चिम बंगाल



ब्रह्मा मंदिर, पुष्कर


केदारनाथ धाम
@__praveen.tiwari

भारत के इन महान वैज्ञानिकों ने इतनी बड़ी-बड़ी खोजें की पर इतिहास में इनका नाम देखने को नहीं मिलता।

आर्यभट	शून्य
महर्षि सुश्रुत	सर्जरी
आचार्य कणाद	परमाणु संरचना
भास्कराचार्य	गुरुत्वाकर्षण
बौधायन	पाईथागोरस प्रमेय
नागार्जुन	धातुकर्मी तथा रसशास्त्री

भारत का दुर्भाग्य रहा है कि खोज भारतीयों ने की और इतिहास विदेशी वैज्ञानिकों का पढ़ाया जा रहा है।

दुनिया में जितनी भी खोजे हैं वो हमारे ऋषि-मुनियों ने की हैं जो आज के वैज्ञानिक की कल्पना से परे हैं।

भास्कराचार्य	गुरुत्वाकर्षण
आचार्य कणाद	अणु परमाणु
ऋषि विश्वामित्र	मिसाइल
ऋषि भारद्वाज	वायुयान
गर्गमुनि	नक्षत्रों
आचार्य चरक	शरीरविज्ञान, गर्भविज्ञान, औषधि विज्ञान
बौद्धयन	त्रिकोणमितिय रचना
कपिल मुनि	सांख्य दर्शन



माँ अम्बिका भवानी, छपरा(बिहार)

गणेश प्रतिमा, थाइलैंड



।।स्वप्न विचार।।

स्वप्न	फल	स्वप्न	फल	स्वप्न	फल	स्वप्न	फल	स्वप्न	फल
अग्नि उठाना	कष्ट	गुरु दर्शन	कार्यसफलता	दुग्धस्नान	धनलाभ	बारात दर्शन	चिन्ता	लौह दर्शन	स्वास्थहानि
अग्नि दर्शन	शुभकार्य	गुलाब दर्शन	मनोकामनपूर्ण	दुर्घटना दर्शन	रोगसम्भावना	बिच्छुदंश	कष्टभय	वर्षा दर्शन	हानि,चिन्ता
आग लगी दर्शन	दु:ख की प्राप्ति	घर जलना	लाभ	देवदर्शन	धनलाभ	भगिनी दर्शन	सौभाग्यवृद्धि	वाटिका दर्शन	सुखप्राप्ति
अजा दर्शन	धनलाभ	गृहनिर्माण	प्रसिद्धिप्राप्ति	देवस्थल दर्शन	सुखमयजीवन	भाषण श्रवण	वादविवाद	विकृतशरीर दर्शन	दु:खप्राप्ति
अर्थी दर्शन	सफलता	गौ दुग्धपान	धनलाभ	जुआं खेलना	धनहानि	भूकम्प दर्शन	सन्तानकष्ट	विदेशगमन	कार्यावरुद्ध
आकाश से गिरना	चिन्ता,मानहानि	ग्रहण दर्शन	रोग,चिन्ता	द्विचक्रचालन दर्शन	कार्यसिद्धि	भोजन को पचाना	रोग	विधवा दर्शन	हानि
बाजार का दर्शन	धनलाभ	चन्द्र दर्शन	बन्धन	धर्मशास्त्र श्रवण	धनप्राप्ति	मदिरापान	मृत्यु	विमान दर्शन	सौभाग्यसूचक
आम खाना	लाभ	चिता दर्शन	सफलता	दौड़ना	समस्या	मधुमक्खी दर्शन	शुभफल	विवाह	मृत्यु
आशीर्वाद ग्रहण	धनलाभ	छिपकली दर्शन	दुर्भाग्यसंकेत	धूपदर्शन	शत्रुनाश	मन्दिर दर्शन	धनलाभ	विषभक्षण	परेशानी
उत्तरदिग्गमन	गृहत्याग	जलपान	भाग्योदय	ध्वजदर्शन	धनलाभ	मयूर दर्शन	शोक	वृद्धस्त्री दर्शन	दु:खप्राप्ति
जूता पहनना	सम्मानप्राप्ति	जल में गिरना	चिन्ता	मगरमच्छ दर्शन	शत्रुकष्ट	मल्लयुद्ध दर्शन	मुकदमा	बैल दर्शन	धर्मकार्य
ऊँट का दर्शन	भय	जादुगर दर्शन	अशुभलक्षण	नदीदर्शन	आकांक्षापूर्ति	महात्मा दर्शन	धनप्राप्ति	बैल द्वारा मारना	हानि
ऊँट से गिरना	अवनति	टिकट ग्रहण	पदत्याग	नागदर्शन	लज्जित	मीनदर्शन	मङ्गलकार्य	वेद्य दर्शन	रोग
गर्मजलपान	अशुभ	डोली दर्शन	समस्यायुक्त	नृत्यदर्शन	मृत्यु	मिष्ठान्नखाना	संकट	शवदर्शन	सफलता
औषधि ग्रहण	स्वस्थ	चावल खाना	शुभसमाचार	निराश	सफलता	मुद्राप्राप्ति	रोजगार	शस्त्रदर्शन	युद्ध
कच्चाफल दर्शन	अशुभ	तपस्वी दर्शन	आत्मोन्नति	पक्काफलदर्शन	शुभ	मुण्डन	मृत्यु	शस्त्र गिरना	पराजय
कन्या का दर्शन	तीर्थयात्रा	पान खाना	मिलाप	पदच्युतदर्शन	मृत्यु	मूषक दर्शन	दुर्भाग्यसूचक	शस्त्र उठाना	विजय
कपिल वस्त्रधारण	ख्याति	ताम्र दर्शन	यात्रादुर्घटना	पर्वदर्शन	शुभ	यज्ञदर्शन	सौभाग्यसूचक	शुकदर्शन	धनलाभ
कबूतर दर्शन	शुभसंदेश	तिल खाना	ऋण	पश्चिमदिग्गमन	बाधायुक्त	यमुना दर्शन	रोगाप्ति	श्रृंगार करना	अपमान
कमल दर्शन	धनप्राप्ति	तीर्थ स्नान	त्याग	पहरेदार दर्शन	चोरी	युवती दर्शन	नगदलाभ	सफेद कुत्ते पर बैठना	सुखसमृद्धिप्राप्ति
करतल दर्शन	प्रसन्नताप्राप्ति	तैलपान	मृत्यु	प्रसन्नता दर्शन	विफलता	रक्त दर्शन	उन्नति	शौचगमन	व्यय
कौआ दर्शन	अशुभ	त्रिशूल दर्शन	सफलताप्राप्ति	प्रसाद प्राप्ति	धनलाभ	रजक दर्शन	सफलता	समुद्र दर्शन	धनलाभ
कारागारगमन	बन्धनग्रस्त	दक्षिणदिग्गमन	रोग	पत्थर दर्शन	विपत्ति	रजत दर्शन	विश्वासघात	समाचार पढना	सफलता
कुत्ता पालना	संकट	दधि दर्शन	सफलता	पितृदर्शन	धनलाभ	रथदर्शन	यात्रा	सर्प का डसना	धनलाभ
कोलाहल दर्शन	राजभय	दर्पण दर्शन	विचलित	पुष्पप्राप्ति	धनलाभ	रसोइघर में प्रवेश	मृत्यु	स्वर्गदर्शन	आयुपूर्ण
खड्ग धारण	उच्चपदप्राप्ति	अनार खाना	रोग	पूर्वदिग्गमन	विजय	राक्षस दर्शन	कष्टनिर्वृत्ति	सर्प खाना	विफलता
खटिया पर सोना	सौभाग्यसूचक	दाहसंस्कार दर्शन	दीर्घायु	फकीर दर्शन	शुभफलदायक	रुद्राक्ष दर्शन	कल्याण	सर्प मारना	शत्रुदमन
गङ्गा स्नान	सन्यास	दुग्ध दोहन	भारोत्थापन	फलप्राप्ति दर्शन	धनलाभ	रोगी दर्शन	दु:खनिवृत्ति	सीताफलदर्शन	सौभाग्यसूचक
हाथी दर्शन	व्यवसायवृद्धि	दुग्धपान	प्रतिष्ठा	बालक का रोना श्रवण	रोग,निराशा	रोटी खाना	रोग	सुवर्ण दर्शन	रोग,धनहानि

।। पुरुष जन्मकुण्डली में द्वादशभावस्थ ग्रहों के फल ।।

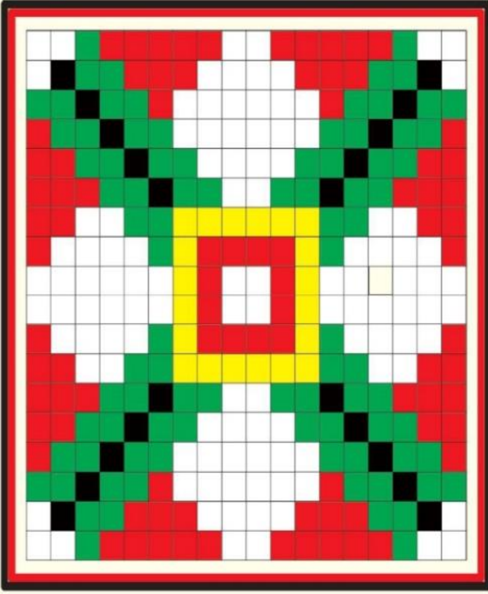
ग्रह	तनु १	धन २	भ्राता ३	सुख ४	पुत्र ५	शत्रु ६	स्त्री ७	मृत्यु ८	धर्म ९	कर्म १०	लाभ ११	व्यय १२
सूर्य	अङ्गपीड़ा	धननाश	निरोगी	दु:खी	सुतहानि	शत्रुनाश	स्त्रीदुष्टा	अल्पायु	दुष्टमति	शूर	धनी	दुष्टस्वभाव
चन्द्र	कान्तिसुख	सम्पत्तिवान्	कीर्तिमान्	सुखभोगी	धनी,पुत्रवान्	अल्पायु	सुभार्यावान्	योगी	धर्मात्मा	तेजयुक्त	धनी	कामी
मंगल	रक्तकोप	ऋणी	विक्रमी	दु:खी	पुत्रहीन	शत्रुनाश	स्त्रीनाश	शरीरपीड़ा	पापरत	तेजस्वी	धनी	पतितदार
बुध	सुखी	धनी,गुणी	अरिमर्दन	सुखी	अल्पपुत्र	रोगी	धर्मज्ञ	गुणी	सुखी	कीर्तिमान	धनी	दरिद्र
गुरु	विद्वान्	धनागम	पापी	सुखी	प्रतापी	कामी	सुभार्या	नीचस्थ	धार्मिक	सम्पत्तिवान्	सुलाभ	खल
शुक्र	सुखी	धनी	पापी	सुखी	बुद्धिमान्	रोगी	कामी	नीच	तपस्वी	सम्पत्ति	सुमति	रोगी
शनि	दु:खी	धनहानि	पराक्रमी	दु:खी	पुत्रहीन	शत्रुजित्	स्त्रीकुलटा	नेत्ररोगी	दुष्टबुद्धि	पराक्रमी	धनवान्	दु:खी
राहु	रोगी	निर्धन	विक्रमी	मातृहानि	कुमति	सबल	स्त्रीरोगी	रोगी	दैन्ययुक्त	मानी	सुख्यात	पतित
केतु	सकाम	खल	शूर	दु:खी	मूर्ख	सबल	स्त्रीहानि	क्लेशयुक्त	पापी	पितृहीन	धनी	दुर्जन

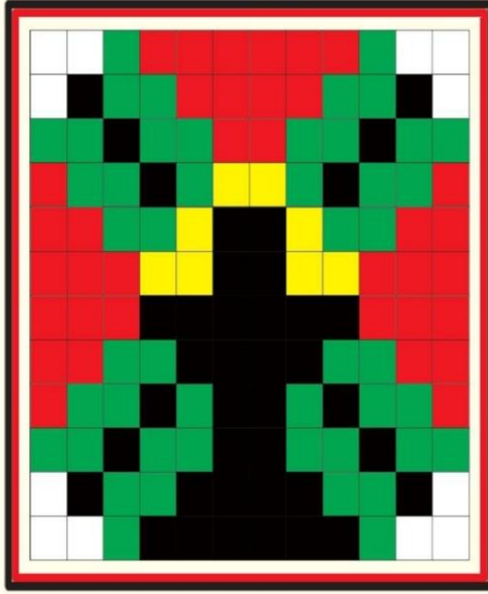
।। स्त्री जन्मकुण्डली में भावस्थ ग्रहों के फल ।।

ग्रह	तनु १	धन २	भ्राता ३	सुख ४	पुत्र ५	शत्रु ६	स्त्री ७	मृत्यु ८	धर्म ९	कर्म १०	लाभ ११	व्यय १२
सूर्य	क्रोधनी	दरिद्रा	सुसुता	सपीड़ा	विपुत्रा	सुखिनी	दु:खार्ता	विधवा	धर्मज्ञा	सुकर्मा	सुलाभा	सरोगा
चन्द्र	अल्पायुषी	बहुधना	सुखिनी	सुभगा	सुपुत्रा	सरोगा	पतिप्रिया	रोगिणी	सुखिनी	धर्मज्ञा	गुणज्ञा	हीनांगी
मंगल	विधवा	बन्ध्या	विसहजा	सु:खार्ता	विपुत्रा	अरोगा	विधवा	नेत्ररोगणी	दु:खिनी	कुपुत्रा	सुलाभा	खला
बुध	सौभाग्या	धनाढ्या	पुत्रवती	सुगृहा	धीकान्तियुक्ता	सकोपा	पतिव्रता	कृतघ्ना	सुभोगा	सत्कर्मा	पतिव्रता	कृशाङ्गी
गुरु	सती	धनाढ्या	सुसहजा	सुखिनी	सुगुणा	सापदा	कीर्तियुक्ता	सरोगा	पुत्राढ्या	साधवी	सुपुत्रा	सुव्यया
शुक्र	ससुखा	सुभगा	धनाढ्या	सुखिनी	पुत्रवती	दरिद्रा	पतिप्रिया	विसुखा	धर्मरता	सधना	सुपुत्रा	सुव्यया
शनि	बन्ध्या	दु:खिनी	सुदक्षा	हृद्रोगा	विपुत्रा	गुणज्ञा	विधवा	दु:खनी	बन्ध्या	पापिनी	सुलाभा	मूढ़ा
राहु	पुत्रहीना	दरिद्रा	सवित्ता	रोगार्त्ता	विपुत्रा	सधना	दु:खिता	विधवा	बन्ध्या	दुष्कर्मा	नीरोगा	दुष्टा
केतु	दु:खिनी	दु:खार्ता	रोगणी	मातृहानि	अपुत्रा	धनयुता	विधवा	दु:खिनी	शोकयुक्ता	पापिनी	सुभगा	रोगिणी

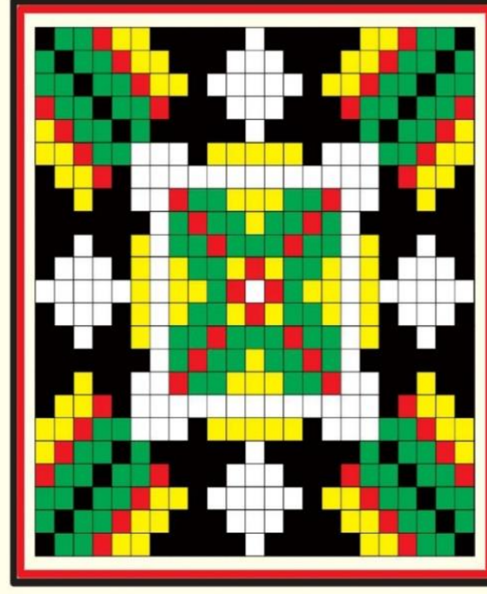
।। गोचर में ग्रहों का द्वादशभावस्थ फल ।।

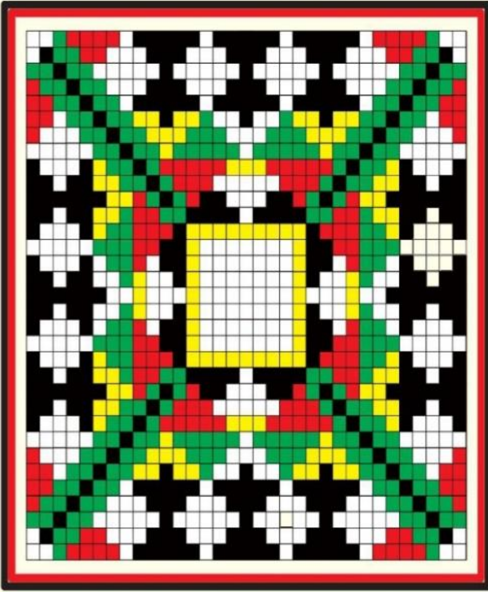
ग्रह	प्रथम	द्वितीय	तृतीय	चतुर्थ	पञ्चम्	षष्ठ	सप्तम्	अष्टम्	नवम्	दशम्	एकादश	द्वादश
सूर्य	स्थाननाश	भय	श्रीप्राप्ति	मानभंग	दैन्य	विजय	यात्रा	पीड़ा	सुकृतिनाश	सिद्धि	धनलाभ	द्रव्यनाश
चन्द्र	अन्नलाभ	धननाश	सुख	रोग	कार्यनाश	धनलाभ	स्त्रीलाभ	रोग	धर्मलाभ	सुख	धनलाभ	धननाश
मंगल	शत्रुभीति	धननाश	धनलाभ	शत्रुभय	धननाश	धनलाभ	द्रव्यनाश	शत्रुभय	शत्रुभय	शोक	धनलाभ	धननाश
बुध	बन्धन	धनलाभ	शत्रुभय	पशुलाभ	सुख	स्थानलाभ	पीड़ा	धनलाभ	पीड़ा	सुख	धनलाभ	धननाश
गुरु	भय	धननाश	क्लेश	धननाश	सुख	शोक	राजमान	पीड़ा	सुख	दैन्य	धनलाभ	पीड़ा
शुक्र	शत्रुनाश	धनलाभ	सुख	धनलाभ	पुत्रलाभ	शत्रुभय	शोक	धनलाभ	वस्त्रलाभ	दु:ख	धनलाभ	धननाश
शनि	भय	धननाश	ऐश्वर्य	शत्रुभय	पुत्रनाश	धनलाभ	दोष	पीड़ा	धर्मनाश	दौर्मनस्य	धनलाभ	धननाश
राहु	हानि	धननाश	धनलाभ	वैर	शोक	श्रीप्राप्ति	कलह	मृत्यु	दु:ख	वैर	सुख	शोक
केतु	रोग	वैर	सुख	भय	सुख	धनलाभ	कलह	रोग	पाप	शोक	कीर्ति	शत्रुभय

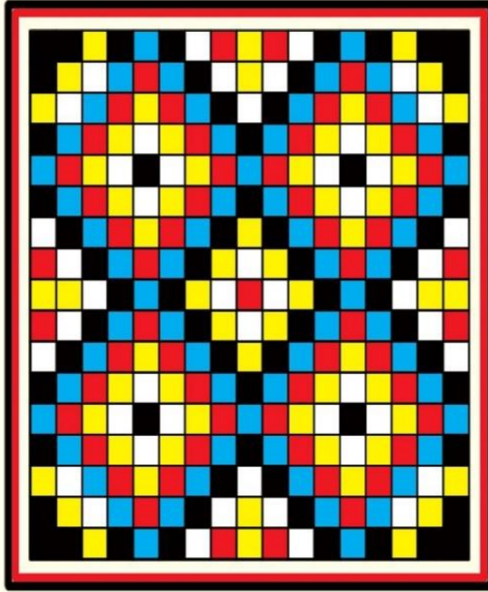

सर्वतोभद्र चक्र

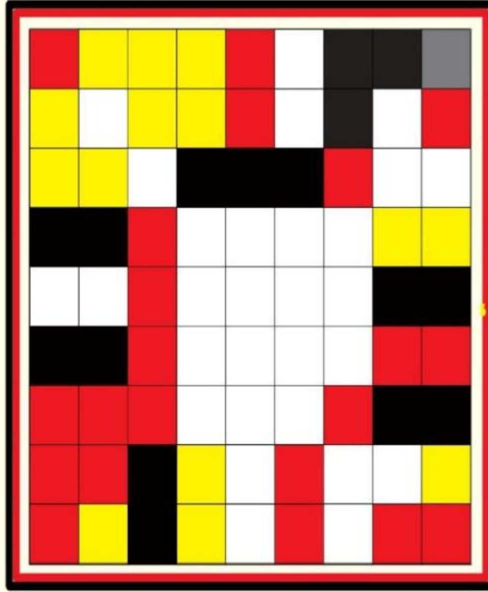

एकलिङ्गतो चक्र

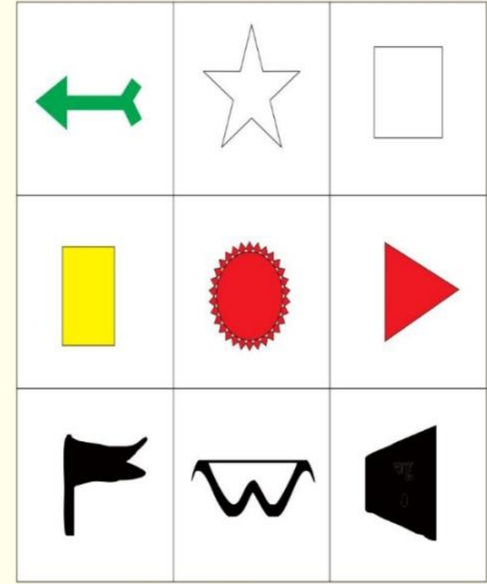

चतुर्लिङ्गतो चक्र


अष्टलिङ्गतो चक्र


द्वादशलिङ्गतो चक्र


गौरीतिलक मण्डल चक्र


वास्तु मण्डल चक्र


नवग्रह चक्र

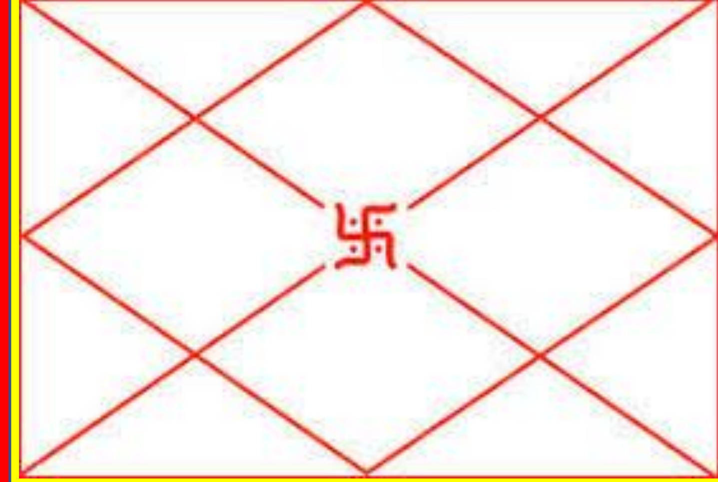






किसी भी प्रकार के अनुष्ठान, नवचण्डी पाठ, शतचण्डी पाठ, सहस्रचण्डी पाठ, महाविद्या प्रयोग, मृत्युंजय जप, महामृत्युञ्जय जप, मृतसंजीवनी जप, ग्रह मंत्र जप, रुद्राभिषेक(रुपक,षडंङ्गपाठ), एकादशिनी रुद्राभिषेक(रुद्री), लघु रुद्राभिषेक, महा रुद्राभिषेक, अति रुद्राभिषेक, ग्रह शान्ति, गृहारम्भ, गृहप्रवेश, संस्कार(जनेऊ), विवाह संस्कार, षोडश संस्कार, लग्न पत्रिका, जन्मकुंडली, वर्ष कुण्डली, नवमांश कुण्डली, प्रश्न कुण्डली, वेद परायण, पुराण परायण, मानस परायण, स्मृति परायण, व्रत-त्योहार निर्णय, धर्मशास्त्रीय निर्णय, प्रायश्चित निर्णय, वास्तु शास्त्र व ज्योतिष आदि से सम्बंधित समस्याओं के समाधान हेतु हमसे सम्पर्क करें।

सम्पर्क सूत्र - 6299953415, 9852837558



कुण्डली के प्रकार

१. सामान्य कुण्डली

२. मध्यम कुण्डली

३. वृहद् कुण्डली

धर्मरक्षापञ्चाङ्गम् (परिशिष्ट भाग)

एकादशी व्रत का पारण	
मास	पारण वस्तु
चैत्र	गाय का घी
वैशाख	कुशा का जल
ज्येष्ठ	तिल
आषाढ़	जौ
श्रावण	दूभ
भाद्रपद	भतुआ
आश्विन	गुड़
कार्तिक	तुलसी
मार्गशीर्ष	गोमूत्र
पौष	गोबर
माघ	गाय का दूध
फाल्गुन	गाय का दही

धर्मरक्षापञ्चाङ्गम् (परिशिष्ट भाग)

गृह निर्माण में खात खोदने (नेव देने) के लिए दिशा ज्ञान

दिनांक	दिशा
२२.०३.२०२३ से १५.०५.२०२३ तक	वायव्यकोण
१६.०५.२०२३ से १७.०८.२०२३ तक	नैर्ऋत्यकोण
१८.०८.२०२३ से १७.११.२०२३ तक	अग्निकोण
१८.११.२०२३ से १३.०२.२०२४ तक	ईशानकोण
१४.०२.२०२४ से ०८.०४.२०२४ तक	वायव्यकोण

इस पञ्चाङ्ग को पढ़ने के बाद हमें बतावें,आपको यह पञ्चाङ्ग कैसा लगा?

हमसे सम्पर्क करें- 6299953415 (18:00 से 18:30 के बीच), वेबसाईट- जय श्रीराम

धर्मरक्षापञ्चाङ्गम्

मुख्य संपादक - पं. श्री संतोष तिवारी